THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com

वर्ष-28 अंक : 137 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) श्रावण कृ. 3 2080 शुक्रवार, 4 अगस्त 2023

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

ज्ञानवापी के सर्वे के खिलाफ

मुस्लिम पक्ष सुप्रीम कोर्ट पहुंचा

हाईकोर्ट ने आदेश में कहा- न्याय के लिए सर्वे जरूरी, बौद्ध पक्ष की भी एंट्री

प्रयागराज, 3 अगस्त (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरुवार को वाराणसी में ज्ञानवापी परिसर के सर्वे का आदेश दे दिया है। लेकिन इस फैसले के खिलाफ मुस्लिम पक्ष सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। पक्षकार के वकील मुमताज अहमद ने यह जानकारी दी। इससे पहले श्रृंगार गौरी मुकदमे की मुख्य याचिकाकर्ता राखी सिंह ने सुप्रीम कोर्ट में केविएट पिटीशन दाखिल कर दी गई है। मतलब मुस्लिम पक्ष की याचिका पर किसी फैसले से पहले उनका पक्ष भी सुना जाए।

उधर, इस केस में बौद्ध समाज की भी एंट्री हो गई है। गुरु सुमित रतन भंते ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की है। उनका दावा है कि ज्ञानवापी उनका मठ है। उन्होंने कहा कि देश में तमाम ऐसे मंदिर हैं, जो बौद्ध मठों को तोड़कर बनाए गए हैं।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सर्वे की इजाजत दी :

इससे पहले इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरुवार को अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी की याचिका खारिज कर दी। अदालत ने सेशन कोर्ट के आदेश का तत्काल पालन करने, यानी सर्वे शुरू करने का ऑर्डर दिया। चीफ जस्टिस प्रीतिंकर दिवाकर की सिंगल बेंच ने यह फैसला सुनाया। हाईकोर्ट ने कहा, न्याय के लिए यह सर्वे जरूरी है। कुछ शर्तों के साथ इसे लागू करने की जरूरत है। सर्वे करिए, लेकिन बिना खुदाई किए।

सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट का आदेश नहीं रोका तो शुक्रवार से होगा सर्वे

सुप्रीम कोर्ट मुस्लिम पक्ष की याचिका पर अगर हाईकोर्ट का आदेश नहीं रोकता है तो सर्वे शुक्रवार से शुरू हो जाएगा। डीएम एस. राजलिंगम ने इसकी पुष्टि की है।

हाईकोर्ट के फैसले के बाद इसे लेकर वाराणसी में एएसआई टीम और जिला प्रशासन की मीटिंग भी हो चुकी है। पिछली सुनवाई में हाईकोर्ट ने एएसआई से सुनवाई खत्म होने तक मस्जिद का सर्वे शुरू नहीं करने को कहा था। जुलाई के अंतिम सप्ताह में कोर्ट में दोनों पक्षों की तरफ से लगातार दो दिन बहस चली थी। 27 जुलाई को कोर्ट ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

हरिशंकर जैन बोले, ऐसे अनगिनत साक्ष्य जो हिंदू मंदिर बताते हैं

सीनियर एडवोकेट हरिशंकर जैन ने कहा, वहां ऐसे अनगिनत साक्ष्य मौजूद हैं जो बताते हैं कि यह एक हिंदू मंदिर था। एएसआई सर्वे से तथ्य सामने आएंगे। मुझे यकीन है कि असली 'शिवलिंग' वहां मुख्य गुंबद के नीचे छुपाया गया है। इस सच्चाई को छुपाने के लिए वे (मुस्लिम पक्ष) बार-बार आपत्ति जता रहे हैं। वे जानते हैं कि इसके बाद यह मस्जिद नहीं रहेगी और वहां भव्य मंदिर बनने का रास्ता साफ हो जाएगा।

हिमांगी सखी बोलीं, आदिविश्ववेश्वर का जलाभिषेक करूंगी

किन्नर महामंडलेश्वर हिमांगी सखी ज्ञानवापी परिसर में सर्वे के आदेश के बाद काशी विश्वनाथ पहुंचीं। उन्होंने हाईकोर्ट के फैसले को सही बताते हुए इसे सत्य की जीत कहा। मंदिर गेट से शंखनाद किया। इस दौरान कहा कि वह जल्द ही आदिविश्ववेश्वर का जलाभिषेक करेंगी। त्रिशूल लेकर हर-हर महादेव का जयघोष किया।

ज्ञानवापी के 500 मीटर के दायरे में 1600 जवान तैनात :

ज्ञानवापी परिसर के आसपास हलचल बढ़ गई है। ज्ञानवापी और काशी विश्वनाथ के 500 मीटर के दायरे में करीब 1600 जवान सुरक्षा में तैनात हैं। पुलिस भी अलर्ट पर है। बैरिकेडिंग बढ़ाई गई है।

आप पीएम मोदी का बचाव करते हैं

खड़गे के आरोपों पर बोले उपराष्ट्रपति- 45 साल से शादीशुदा हूं, गुस्सा नहीं करता

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। ससंद के जारी मानसून सत्र के बीच लोकसभा में बृहस्पतिवार को भी मणिपुर मुद्दे पर गतिरोध बरकरार रहा। विपक्षी दलों के सदस्यों के शोर-शराबे के कारण सदन की कार्यवाही शुरू होने के करीब 20 मिनट बाद ही दोपहर दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। प्रश्नकाल शुरू होते ही विपक्षी दलों के सदस्य मणिपुर मुद्दे पर जल्द चर्चा कराने और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जवाब की मांग करते हुए हंगामा करने लगे। इन सबके बीच राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि मुझे प्रधानमंत्री का बचाव करने की जरूरत नहीं है।

नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने आरोप लगाया कि मणिपुर मुद्दे पर बहस की विपक्ष की मांग पर सभापति प्रधानमंत्री का बचाव कर रहे हैं। जिसके जवाब में राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि मुझे पीएम का बचाव करने की जरूरत नहीं है।

मुझे किसी का बचाव करने की जरूरत नहीं है। मुझे संविधान, आपके अधिकारों की रक्षा करने की जरूरत है। एलओपी की ओर से इस तरह की टिप्पणी अच्छी नहीं है।

दरअसल, मणिपुर हिंसा पर चर्चा कराने की मांग पर धनखड़ ने कहा कि वह दोपहर 1 बजे पार्टियों के फ्लोर नेताओं को अपने कक्ष में बुलाएंगे और मणिपुर पर चर्चा की व्यवस्था करेंगे। इसके बाद मल्लिकार्जुन खड़गे ने सुझाव दिया कि सदन को दोपहर एक बजे तक के लिए स्थगित कर दिया जाए। उन्होंने आगे कहा, सर, आप इतनी छोटी-छोटी मिन्नतें नहीं मानते। हमने प्रधानमंत्री जी को आने के लिए कहा, आप उस पर भी सहमत नहीं हुए। आप पीएम का इतना बचाव क्यों कर रहे हैं, मुझे समझ नहीं आ रहा है।

लोकसभा में दिल्ली बिल पास

शाह बोले- केंद्र को दिल्ली पर कानून बनाने का अधिकार, आप सांसद रिंकू बचे सत्र के लिए सस्पेंड

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। संसद के मानसून सत्र का गुरुवार यानी 3 अगस्त को 11वां दिन था। लोकसभा में दिल्ली सर्विस बिल पास कर दिया गया। वहीं, स्पीकर ओम बिड़ला ने आप सांसद सुशील कुमार रिंकू को बाकी बचे सत्र के लिए निलंबित कर दिया। रिंकू को निलंबित करने का प्रस्ताव संसदीय कार्य मंत्री प्रहलाद जोशी लाए थे। रिंकू पर वेल में आकर कागज फाड़ने का आरोप था।

लोकसभा में 2 बजे दिल्ली अध्यादेश विधेयक पर चर्चा शुरू हुई। अमित शाह ने कहा कि विपक्षी दलों को गठबंधन का नहीं, दिल्ली का सोचना चाहिए। एक बात तय है कि चाहे कितना भी अलायंस कर लें, सरकार तो नरेंद्र मोदी की ही आ रही है। शाह ने ये भी कहा कि मणिपुर पर जितनी चर्चा चाहें, कर लें, मैं जवाब दूंगा।

गृह मंत्री के बोलने के बाद कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि शाह के मुंह से नेहरू की तारीफ अच्छी लगी। शाह ने कहा कि मैंने तारीफ नहीं की। आपको लगता है तो मान लीजिए।

सुबह सदन नहीं पहुंचे थे ओम बिड़ला

लोकसभा स्पीकर ओम बिड़ला गुरुवार सुबह सदन नहीं पहुंचे थे। बताया गया कि वे नाराज हैं। स्पीकर 2 अगस्त को भी सदन में नहीं आए थे। जैसे ही 11 बजे कार्यवाही शुरू हुई तो स्पीकर के आसन पर उनकी जगह राजेंद्र अग्रवाल ने सदन की अध्यक्षता की। कुछ समय बाद विपक्ष के

नेता और कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी ने अग्रवाल से बिड़ला के बारे में बात की। कहा कि वे हमारे संरक्षक, हम उनके मुरीद हैं, हमारी अपील है कि वे वापस आ जाएं। इसके बाद दोपहर 2 बजे की कार्यवाही में ओम बिड़ला आसंदी पर बैठे।

दिल्ली अध्यादेश विधेयक पर लोकसभा में अमित शाह के भाषण की प्रमुख बातें :

दिल्ली ना तो पूरी तरह राज्य है और ना ही पूरी तरह संघ शासित प्रदेश। संसद को आर्टिकल 239एए के तहत दिल्ली के मुद्दे पर संसद में कानून बनाने का अधिकार है। विपक्ष ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का मनपसंद हिस्सा ही पढ़ा।

पं नेहरू, सरदार पटेल, राजाजी (सी राजगोपालाचारी), राजेंद्र प्रसाद और डॉ. अंबेडकर ने इस बात का विरोध किया कि दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया जाए। नेहरू ने कहा था कि दिल्ली में तीन चौथाई संपत्ति केंद्र सरकार की है, इसलिए इसे केंद्र के अधीन रखा जाए।

राजधानी दिल्ली के किसी भी हिस्से पर और कोई भी कानून बनाने संपूर्ण अधिकार संसद को दिया गया है। 1993 से व्यवस्था चली आ रही थी। कभी केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी तो दिल्ली में हमारी सरकार थी। कभी केंद्र में हमारी सरकार थी तो दिल्ली में कांग्रेस का शासन था। कभी कोई समस्या नहीं आई। असल में दोनों ही दलों का मकसद सेवा था, सत्ता हथियाना नहीं। कोई झगड़ा नहीं हुआ, सबकुछ ठीक चल रहा था।

नूंह-पलवल में दुकानों और धार्मिक स्थलों पर आगजनी

नूंह में जुम्मे की नमाज घरों में होगी, गुरुग्राम में अलर्ट

नूंह, 3 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा के नूंह में हुई हिंसा के तीसरे दिन भी राज्य के 4 जिलों में हालात तनाव पूर्ण बने हुए हैं। चारों जिलों में पैरामिलिट्री फोर्सेज की 20 कंपनियां तैनात की गई हैं। हिंसा में मरने वालों की संख्या बढ़कर 7 हो गई है। छह मौतों का ब्योरा पहले आ चुका था। सातवीं मौत की डिटेल अभी सामने नहीं आई है।

नूंह में बुधवार देर रात कर्फ्यू के दौरान तावडू इलाके में कुछ लोगों ने 2 धार्मिक स्थलों पर आगजनी की। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर स्थिति संभाली। पलवल में बुधवार रात 3 दुकानों, 2 धार्मिक स्थलों और एक टेम्पो में आग लगा दी गई, जिसके बाद पुलिस ने अलग-अलग थानों में 265 लोगों के खिलाफ 5 एफआईआर दर्ज की हैं।

नूंह में शुक्रवार को जुम्मे की नमाज घर में ही अदा होगी। नूंह के डीसी प्रशांत पंवार और एसपी वरुण सिंगला ने इस बारे में उलेमाओं को अपील की है। गुरुग्राम में जुम्मे की नमाज को लेकर पुलिस अलर्ट है। एसीपी क्राइम वरुण दहिया ने खुले में नमाज न करने की अपील की है। सभी मस्जिदों पर पुलिस का पहरा रहेगा। नूंह, पलवल, फरीदाबाद और गुरुग्राम के सोहना, मानेसर और पटोदी में 5 अगस्त तक इंटरनेट और एसएमएस सेवाएं बंद की गई हैं। हालांकि सीईटी स्क्रीनिंग टेस्ट को देखते हुए आज दोपहर 1 बजे से 4 बजे तक 3 घंटे के लिए बैन हटाया गया।

मणिपुर में झड़प, 20 मैतेई महिलाएं घायल

कुकी इलाके में घुसना चाहती थीं, सुरक्षाबलों ने आंसू गैस के गोले दागे, जवाब में पथराव हुआ

इंफाल, 3 अगस्त (एजेंसियां)। मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदाय के बीच जारी हिंसा को आज तीन महीने पूरे हो गए। कुकी समुदाय ने गुरुवार सुबह 11 बजे हिंसा में मारे गए लोगों के शवों को चुराचांदपुर के टोइबुंग शांति मैदान में दफनाने की बात कही थी। मैतेई समुदाय को कुकी लोगों के शव शांति मैदान में दफनाने से ऐतराज था। इसके विरोध में मैतेई समुदाय की महिलाओं ने गुरुवार सुबह बिष्णुपुर के थोरबुंग गांव की ओर कूच कर दिया। थोरबुंग में कुकी और मैतेई इलाके के बीच का बफर जोन है।

मैतेई महिलाओं ने बफर जोन को पारकर कुकी इलाके में घुसने की कोशिश की। सुरक्षाबलों ने उन्हें रुकने के लिए कहा। मैतेई महिलाएं नहीं मानीं, भीड़ को तितर-बितर करने के लिए असम राइफल्स ने जवाबी कार्रवाई में हवाई फायरिंग की और आंसू गैस के गोले दागे। इस दौरान महिलाओं ने सुरक्षाकर्मियों पर पथराव किया, जिसमें कई मैतेई महिलाएं घायल हो गईं। उधर, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के निवेदन पर कुकी समुदाय के लोगों के शवों के अंतिम संस्कार का कार्यक्रम 5 दिन के लिए टाल दिया गया।

मैं मणिपुर पर जवाब दूंगा

गुरुवार को लोकसभा में दिल्ली में अधिकारियों की ट्रांसफर-पोस्टिंग से जुड़े विधेयक पर चर्चा करते हुए अमित शाह ने मणिपुर का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि मणिपुर के मुद्दे पर जितनी चर्चा करनी हो मैं तैयार हूं। मणिपुर के मुद्दे पर मैं जवाब दूंगा।

इंफाल में भीड़ ने लूटे हथियार

सूत्रों के मुताबिक इंफाल शहर में भीड़ ने मणिपुर रायफल्स के कैंप से हथियार चुराए हैं। वहीं, बिष्णुपुर के नारानसेना की दूसरी आईआरबी बटालियन से भी करीब 300 हथियार चुराने की खबर है।

पीएम मोदी की एनडीए के सांसदों के साथ मीटिंग

इंडिया अलायंस पर बोले- ये गठबंधन मजबूरी में हुआ, एक भी सदस्य मतलब नहीं बता सकता

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के 48 सांसदों के साथ मीटिंग की। रिपोर्ट्स के मुताबिक संसद की एनेक्सी बिल्डिंग में हुई इस बैठक में प्रधानमंत्री ने सांसदों से कहा है कि गरीब ही सबसे बड़ी जाति है, उनके लिए काम करो।

उन्होंने यह भी कि केंद्र सरकार ने आम लोगों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएं शुरू की हैं। सरकार का लक्ष्य गैर-बीजेपी शासित राज्यों में राज्य मशीनरी की मदद के बिना इन योजनाओं का लाभ जनता को देना है। मीटिंग के दौरान विपक्षी गठबंधन पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि यह गठबंधन मजबूरी में किया गया है। एक भी विपक्षी सांसद आपको इंडिया का मतलब नहीं बता सकता।

पीएम बोले- लोकसभा चुनाव की एक्टिव प्रिपरेशन करें :

करीब एक घंटे तक चली बैठक में पीएम मोदी ने कहा कि जितना संभव हो सके अपने संसदीय क्षेत्र में रहें। उन्होंने सांसदों को 2024 के लोकसभा चुनावों के लिए सक्रिय तैयारी शुरू करने की सलाह भी दी।

पीएम मोदी ने कहा कि सरकार के 9 साल पूरे होने पर जो 'जन संपर्क अभियान' चलाया जा रहा है, उसे लगातार आगे बढ़ाना है और पूरे जोश के साथ काम करना है क्योंकि चुनाव में अब कुछ ही महीने बचे हैं।

एक दिन में 2 क्लस्टर की दो मीटिंग

पीएम मोदी ने बुधवार को पहले महाराष्ट्र भवन में उत्तर प्रदेश के काशी और अवध क्षेत्र के एनडीए सांसदों के साथ बैठक की। क्लस्टर-3 बैठक में केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह और गृह मंत्री अमित शाह और अनुप्रिया पटेल और महेंद्र नाथ पांडे शामिल हुए। क्लस्टर 4 की दूसरी मीटिंग में तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल, पुडुचेरी, अंडमान और निकोबार द्वीप और लक्षदीप के सांसद मौजूद रहे। बैठक में बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा, प्रहलाद जोशी और वी मुरलीधरन पांडे मौजूद रहे।

पहले फिल्म साइन की अब पॉलिटिक्स की बारी

सीमा हैदर को मिला चुनाव लड़ने का ऑफर, इस पार्टी में हो सकती हैं शामिल

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान से भारत आईं सीमा हैदर को लेकर कई तरह की खबरें ट्रेंड कर रही हैं। कभी उनकी फिल्म साइन करने की बात सामने आ जाती है तो अब कहा जा रहा है कि जल्द ही सीमा अपना राजनीतिक डेब्यू करने जा रही हैं। उन्हें केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले की पार्टी रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आरपीआई) से चुनाव लड़ने का मौका मिल गया है। पार्टी के जो पदाधिकारी हैं, उनकी तरफ से कहा गया है कि सीमा को महिला विंग की अध्यक्ष बनाया जा सकता है।

बड़ी बात ये भी है कि सीमा हैदर ने उस ऑफर को स्वीकार कर लिया है। अभी तक इसे लेकर कोई औपचारिक बयान तो नहीं दिया गया है, लेकिन माना जा रहा है कि सीमा जल्द ही अपना सियासी डेब्यू करने जा रही हैं। अभी के लिए पार्टी को बस इस बात का इंतजार है कि सीमा को जल्द से जल्द भारतीय जांच एजेंसियों से क्लीन चिट मिल जाए।

असल में सीमा क्योंकि अवैध तरीके से भारत आई है, ऐसे में उससे एटीएस द्वारा लगातार पूछताछ की जा रही है। उसी वजह से अभी तक उसे भारत की नागरिकता भी नहीं मिल पाई है। लेकिन अगर एक बार नागरिकता मिल जाती है, उस स्थिति में रामदास आठवले की पार्टी तुरंत सीमा को आरपीआई में शामिल कर लेगी।

सरकार ने लगाया लैपटॉप, टैबलेट और कंप्यूटर के आयात पर बैन

'मेक इन इंडिया' को बढ़ावा देने के लिए बड़ा फैसला

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्र सरकार ने गुरुवार को एक बड़ा फैसला लेते हुए लैपटॉप, टैबलेट और कंप्यूटर के आयात पर बैन लगा दिया है। इस संबंध में वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने एक नोटिफिकेशन जारी किया है। डीजीएफटी के मुताबिक, इन प्रतिबंधित आइटम्स के आयात के लिए वैध लाइसेंस के तहत अनुमति दी जाएगी।

विदेश व्यापार महानिदेशालय ने एक नोटिस में कहा कि केंद्र सरकार ने गुरुवार को एचएसएन 8471 के तहत लैपटॉप, टैबलेट और पर्सनल कंप्यूटर के आयात पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया है। नोटिस में कहा गया है, एचएसएन 8741 के तहत आने वाले लैपटॉप, टैबलेट, ऑल-इन-वन पर्सनल कंप्यूटर और अल्ट्रा स्मॉल फॉर्म फैक्टर कंप्यूटर और सर्वर का आयात प्रतिबंधित होगा। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय ने कहा कि यह प्रतिबंध समय-समय पर संशोधित बैगेज नियमों के तहत आयात पर लागू नहीं होगा।

आयात में छूट

नोटिस में कहा गया है, 1 लैपटॉप, टैबलेट, ऑल-इन-वन पर्सनल कंप्यूटर या अल्ट्रा स्मॉल फॉर्म फैक्टर कंप्यूटर के आयात के लिए आयात लाइसेंसिंग आवश्यकताओं से छूट प्रदान की जाती है, जिसमें पोस्ट या कूरियर के माध्यम से ई-कॉमर्स पोर्टल से खरीदे गए कंप्यूटर भी शामिल हैं। सरकार ने आगे कहा कि आयात लागू शुल्क के भुगतान के अधीन होगा।

सरकार ने कहा कि आर एंड डी (अनुसंधान और विकास) परीक्षण बेंचमार्किंग, मूल्यांकन मरम्मत और पुन: निर्यात के साथ ही उत्पाद विकास उद्देश्यों के लिए प्रति खेप 20 ऐसी वस्तुओं के लिए लाइसेंस प्रदान करने की छूट दी जाती है। मंत्रालय ने कहा कि आयात को इस शर्त के तहत अनुमति दी जाएगी कि आयातित सामान का इस्तेमाल केवल बताए गए उद्देश्यों के लिए किया जाएगा और बेचा नहीं जाएगा। इसके अलावा उपयोग के बाद उत्पादों को या तो नष्ट कर दिया जाएगा या दोबारा निर्यात किया जाएगा।

हालांकि, मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि इन वस्तुओं की मरम्मत और वापसी के लिए प्रतिबंधित आयात के लाइसेंस की आवश्यकता नहीं होगी। सरकार के इस फैसले के पीछे मेक इन इंडिया पहल को बढ़ावा देने के प्राथमिक उद्देश्य के साथ लैपटॉप, टैबलेट और पर्सनल कंप्यूटर के आयात पर तत्काल प्रतिबंध लगाने का ऐलान किया गया है। केंद्र का यह कदम विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स सेक्टर पर फोकस करते हुए खुद को ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग सेंटर के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक कदम है।

भारत ने 2022-23 में लैपटॉप सहित 5.33 अरब डॉलर मूल्य के पर्सनल कंप्यूटर का आयात किया है।

जब सीएम शिंदे की कुर्सी पर बैठे डिप्टी सीएम अजित...

मुंबई, 3 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में मुंबई के नरीमन पॉइंट इलाके में गुरुवार को एक कार्यक्रम में डिप्टी सीएम अजित पवार, सीएम एकनाथ शिंदे की कुर्सी पर बैठ गए। खुद महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने शिंदे की कुर्सी से उनके पद का स्टीकर हटाया और अजित को वहां पर बैठाया। अजित की बगावत के बाद महाराष्ट्र में राजनीतिक समीकरण बदल गए हैं। अजित के समर्थक लगातार इस बात का दावा कर रहे हैं कि वो जल्द ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनेंगे। 27 जुलाई को एनसीपी से राज्यसभा सांसद प्रफुल्ल पटेल ने कहा था, अजित लोकप्रिय नेता हैं, इसलिए उन्हें आज नहीं तो कल मुख्यमंत्री बनने का मौका जरूर मिलेगा। वहीं, विपक्ष भी लगातार दावा कर रहा है कि अजित सीएम बनने वाले हैं। 24 जुलाई को कांग्रेस नेता पृथ्वीराज चव्हाण ने दावा किया था कि अजित 10 अगस्त को एकनाथ शिंदे की जगह राज्य के मुख्यमंत्री बनाए जाएंगे।

केरल में शख्स ने कर दी माता-पिता की हत्या

तिरुवनंतपुरम, 3 अगस्त (एजेंसियां)। केरल के पथानामथिट्टा जिले के तिरुवल्ला में गुरुवार सुबह एक व्यक्ति को अपने माता-पिता की हत्या के आरोप में हिरासत में लिया गया है। पुलिस ने कहा, 70 वर्षीय कृष्णनकुट्टी और शारदा की कोचुमोन उर्फ निलकुमार ने बेरहमी से हत्या कर दी। पुलिकेझु पुलिस स्टेशन के अधिकारियों ने अनिलकुमार को हिरासत में ले लिया है, जो मानसिक रूप से विक्षिप्त बताया जा रहा है।

40 साल के ट्यूशन टीचर ने किया 17 साल की स्टूडेंट से रेप

चंडीगढ़, 3 अगस्त (एजेंसियां)। जालंधर के रामामंडी में एक 40 साल के ट्यूशन टीचर द्वारा 17 साल की स्टूडेंट से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। दुष्कर्म का मामला तब सामने आया जब लड़की के परिजनों को पता चला कि वह तीन माह की प्रेग्नेंट है। लड़की के परिजनों की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी की पहचान रविंद्र कश्यप के तौर पर हुई है, वह उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। आरोपी के खिलाफ आईपीसी की धारा 376 और पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

दिल्ली के लालबाग में 8 साल की बच्ची के साथ दुष्कर्म, पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। राजधानी दिल्ली के आदर्श नगर इलाके में आठ साल की बच्ची के साथ रेप का मामला सामने आया है। लालबाग रेलवे पटरी के पास सुनसान जगह पर युवक ने रेप की वारदात को अंजाम दिया। बताया जा रहा है कि युवक ने टॉफी दिलाने के बहाने बच्ची को घर से बाहर बुलाया और सुनसान जगह पर ले जाकर रेप की वारदात को अंजाम दिया। गंभीर हालत में बच्ची को अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस मामले में पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया है।

सिद्दारमैया ने दिल्ली में पीएम मोदी से की मुलाकात

बेंगलुरु, 3 अगस्त (एजेंसियां)। कर्नाटक के मुख्यमंत्री का पदभार संभालने के बाद पहली बार सिद्दारमैया ने गुरुवार को नई दिल्ली के संसद भवन में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। मुख्यमंत्री कार्यालय (सीएमओ) ने एक बयान में दावा किया कि बैठक सौहार्दपूर्ण रही। सिद्दारमैया ने मोदी को चंदन से बनी एक माला और कलाकृति के साथ ही एक पारंपरिक मैसूरु 'पेटा' (टोपी) भेंट की। यह बैठक मुख्यमंत्री द्वारा कर्नाटक में सत्तारूढ़ कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा लागू की गई मुफ्त गारंटी योजनाओं पर उनकी टिप्पणी पर मोदी की आलोचना के एक दिन बाद हुई। मोदी ने कहा था कि घोषित गारंटी योजनाओं के कार्यान्वयन की पृष्ठभूमि में कर्नाटक सरकार के पास विकास गतिविधियों के लिए धन नहीं है।

उन्होंने कहा, मुफ्त योजनाओं से राज्य का खजाना खाली होने जा रहा है

इसके जवाब में सिद्दारमैया ने कहा कि कर्नाटक की जनता ने डबल इंजन सरकार के जनविरोधी शासन से सावधान होकर कांग्रेस की गारंटी योजनाओं को जनादेश दिया है और बीजेपी को खारिज कर दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट किया, हम वादों को पूरा करने और इस दिशा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। महंगाई, बेरोजगारी से जूझ रहे पूरे देश को आम लोगों को आर्थिक संकट से बचाने और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कर्नाटक मॉडल की जरूरत है। मुफ्त योजनाओं को लागू करके राज्य के वित्त पर अपनी चिंता व्यक्त करने के लिए पीएम मोदी को बधाई। पीएम मोदी, मेरा अनुरोध है कि इसे स्पष्ट करने की जरूरत है। क्या यह आपकी निजी राय है? या यह पीएम मोदी की राय है? या क्या यह राय पार्टी का है ? यदि आप योजनाओं की गारंटी का विरोध कर रहे हैं, तो आपको अपना रुख और साथ ही अपनी पार्टी का रुख स्पष्ट करना होगा। आपको कर्नाटक भाजपा नेताओं को हमारी सरकार की मुफ्त योजनाओं का सार्वजनिक रूप से विरोध करने के लिए निर्देश देने की जरूरत है। हम आगामी स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं। गारंटी मुक्त योजनाओं पर लोकसभा चुनाव, यदि आप चुनौती के लिए तैयार हैं तो आप इस संबंध में एक घोषणा करें। अपने दिल्ली दौरे के दौरान सिद्दारमैया केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमन, राजनाथ सिंह और यूनियन रोड नितिन गडकरी से भी मुलाकात करेंगे।

सूत्रों के मुताबिक, मुख्यमंत्री पार्टी की प्रमुख मुफ्त चावल योजना अन्न भाग्य के लिए केंद्रीय एजेंसियों द्वारा चावल की आपूर्ति के लिए मोदी से अनुरोध कर सकते हैं, जिसके तहत कर्नाटक सरकार बीपीएल परिवारों के सभी सदस्यों के लिए 10 किलो चावल उपलब्ध कराने की योजना बना रही है।

उनके केंद्र सरकार से धन में वृद्धि और सिंचाई परियोजनाओं, जल जीवन मिशन, मनरेगा के लिए अतिरिक्त धन की मांग करने की भी संभावना है। उम्मीद है कि मुख्यमंत्री 15वें वित्तीय आयोग की सिफारिश के अनुसार राज्य के लिए 5,495 करोड़ रुपये की अंतरिम राहत की मांग करेंगे और राज्य को जीएसटी में उचित हिस्सा नहीं मिलने के बारे में भी चर्चा करेंगे सूत्रों ने बताया कि वह अपनी बैठक के दौरान राज्य में प्रमुख सड़क परियोजनाओं और अतिरिक्त अनुदान की मांग पर चर्चा करेंगे।

'पीएम मोदी-सिद्धारमैया किसी और की बनाई पार्टियों में सत्ता का आनंद ले रहे हैं, कांग्रेस विधायक

बेंगलूरू, 3 अगस्त (एजेंसियां)। कर्नाटक से कांग्रेस विधायक बसवराज रायरेड्डी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया पर निशाना साधा। सत्ता के शीर्ष पदों पर आसीन दोनों नेताओं के ऊपर तंज कसते हुए रायरेड्डी ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया किसी और द्वारा बनाई गई पार्टियों में सत्ता का आनंद ले रहे हैं। वरिष्ठ कांग्रेस विधायक बसवराज रायरेड्डी ने कोप्पल जिले के कुकनूर शहर में एक सार्वजनिक बैठक में कहा, हमारे सिद्धारमैया को देखें, वह जनता परिवार से कांग्रेस में आए और पार्टी में सत्ता का आनंद ले रहे हैं। वह राज्य के दो बार मुख्यमंत्री बने। कांग्रेस के वरिष्ठ लोग क्या सोचेंगे कि इस आदमी की किस्मत देखो। राजनीति में भाग्य और समय की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

लालकृष्ण आडवाणी जैसे लोगों ने बीजेपी को बनाया

बसवराज रायरेड्डी ने आगे कहा कि लालकृष्ण आडवाणी जैसे लोगों ने बीजेपी को बनाया, लेकिन फिर नरेंद्र मोदी आए और प्रधानमंत्री बन गए। रायरेड्डी ने कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई और एचडी कुमारस्वामी पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा, मैं एसआर बोम्मई और एचडी देवेगौड़ा के मंत्रिमंडल में मंत्री था। उनके बेटे बसवराज बोम्मई और एचडी कुमारस्वामी अंततः मुख्यमंत्री बने। इससे पहले, कुमारस्वामी मेरे सामने खड़े होने से भी डरते थे। यह उनके भाग्य में लिखा था।

महाराष्ट्र विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष बने कांग्रेस विधायक विजय वडेट्टीवार

मुंबई, 3 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने गुरुवार को कांग्रेस विधायक विजय वडेट्टीवार को विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के रूप में मान्यता प्रदान कर दी। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता अजित पवार के इस्तीफा देकर शिंदे सरकार में शामिल होने के बाद से यह पद रिक्त था। वडेट्टीवार को नेता प्रतिपक्ष बनाए जाने की घोषणा के बाद मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उप मुख्यमंत्री अजीत पवार सदन में उनको नेता प्रतिपक्ष की कुर्सी तक ले गए। मुख्यमंत्री शिंदे ने कहा कि वडेट्टीवार केंद्रीय मंत्री नारायण राणे के साथ शिवसेना छोड़कर कांग्रेस में शामिल हुए थे। इसके बाद उन्होंने मंत्री पद की जिम्मेदारी बहुत ही उम्दा तरीके से निभाई। अब उन्हें कांग्रेस ने नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी सोंपी है। शिंदे ने उनको शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वडेट्टीवार इस पद का बखूबी निर्वहन करेंगे। मुख्यमंत्री शिंदे ने उम्मीद जताई कि बडेट्टीवार सरकार के कामकाज में सहयोग करेंगे और जहां चूक हो रही होगी, उसे सुधारने का सुझाव देंगे। उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि वडेट्टीवार विदर्भ की आवाज थे, लेकिन अब उन्हें विधानसभा की आवाज बनने का मौका मिल गया है। वडेट्टीवार विधानसभा की कार्यवाही के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उप मुख्यमंत्री अजीत पवार ने कहा कि आमतौर पर विधायक पार्टी बदलने की हिम्मत नहीं करते हैं, लेकिन वडेट्टीवार ने नारायण राणे के साथ शिवसेना छोड़ी और कांग्रेस में आने के बाद भी मतदाताओं से दूर नहीं हुए। अजीत पवार ने उम्मीद जताई कि वडेट्टीवार नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी बहुत ही अच्छी तरह निभाएंगे। उल्लेखनीय है कि 17 जुलाई से शुरू हुआ महाराष्ट्र विधानमंडल का मानसून सत्र 04 अगस्त तक चलेगा।

जनता के समर्थन से एमवीए मजबूत और एकजुट, जल्द करेंगे राज्य का दौरा:अंबादास दानवे

मुंबई, 3 अगस्त (एजेंसियां)। शिवसेना-उद्धव बालासाहेब ठाकरे (शिवसेना-यूबीटी) के नेता अंबादास दानवे ने बुधवार को कहा कि महा विकास अघाड़ी (एमवीए) मजबूत है और महाराष्ट्र की जनता ने इस गठबंधन को अपना समर्थन दिया है। विधान परिषद में विपक्ष के नेता दानवे ने कहा कि एमवीए नेता जल्द ही राज्य का दौरा शुरू करेंगे और बैठकें करेंगे। दानवे ने कहा कि शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) में टूट के बावजूद एमवीए मजबूत और एकजुट है। इस बैठक में शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे, कांग्रेस नेता पृथ्वीराज चव्हाण और बालासाहेब थोराट, राकांपा के जयंत पाटिल के साथ-साथ समाजवादी पार्टी के अबू आसिम

'खट्टर साहब! अब इस्तीफा दें और हमें कमान सौंपें

हम दिखाएंगे की कैसे सुरक्षा दी जाती है' दीपेंद्र हुड्डा का बड़ा बयान

चंडीगढ़, 3 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के बयान को लेकर विपक्षी पार्टियां लगातार उन्हें घेरने में लगी हुई हैं। कांग्रेस से राज्यसभा सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने भी सीएम खट्टर पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि नूंह की घटना पर मुख्यमंत्री का ये बयान कि 'प्रदेश में पुलिस बल की संख्या पर्याप्त नहीं है और हर व्यक्ति को सुरक्षा नहीं दी जा सकती' बेहद गैर-जिम्मेदाराना है। यदि खट्टर साहब इस जिम्मेदारी को निभाने में असमर्थ हैं तो इस्तीफा दें और हमें कमान सौंपें।

'हम दिखाएंगे की कैसे सुरक्षा दी जाती है'

दीपेंद्र सिंह हुड्डा ने आगे कहा कि सीएम खट्टर हमें कमान सौंपें, हम दिखाएंगे कि हर व्यक्ति को सुरक्षा कैसे दी जाती है। हुड्डा सरकार के 10 साल के कार्यकाल में हरियाणा में कभी कोई दंगा नहीं हुआ और कभी कानून व्यवस्था की व्यापक विफलता का कोई ऐसा उदाहारण देखने को नहीं मिला। खट्टर साहब के इस बयान से न केवल आम जनता का मनोबल टूटेगा अपितु अपराधियों के हौसले भी बढ़ेंगे। प्रत्येक व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करना सरकार का पहला काम है। वहीं कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और राज्यसभा सदस्य रणदीप सिंह सुरजेवाला ने पीएम मोदी और सीएम मनोहर लाल खट्टर पर निशाना साधा है। उन्होंने ट्वीट कर लिखा कि मणिपुर से लेकर हरियाणा तक, नफरत और हिंसा की आग को देखते और सब कुछ जानते हुए भी प्रधानमंत्री मौन रहते हैं! और उनके मुख्यमंत्री दंगाई टुलकिट की साजिशों को 'मौन समर्थन' देते हैं! 'न्यू इंडिया' के 'कर्त्तव्यकाल इवेंट' में न प्रधानमंत्री अपना 'कर्तव्य' निभाते हैं, न भाजपाई मुख्यमंत्री अपना 'राजधर्म' निभाते हैं! जब सूबे के मुखिया मान चुके हैं कि 2.70 करोड़ हरियाणावासियों को सुरक्षा देने में असमर्थ हैं! तो पुलिस-प्रशासन के पीछे छुपने की बजाय, राजनीतिक नेतृत्व के दिवालियापन को स्वीकार करते हुए, खट्टर-दुष्यंत की जोड़ी वाली भाजपा-जजपा सरकार को अब तुरंत कुर्सी छोड़ देनी चाहिए!

पंजाब के बर्खास्त एआईजी राजजीत सिंह को बड़ा झटका

एचसी ने खारिज की अग्रिम जमानत याचिका

चंडीगढ़, 3 अगस्त (एजेंसियां)। पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट ने पंजाब के बर्खास्त एआईजी राजजीत सिंह को बड़ा झटका देते हुए अग्रिम जमानत की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया है। नशे के कारोबार को लेकर हाईकोर्ट में सौंपी गई एसआईटी की रिपोर्ट के बाद पंजाब सरकार ने कार्रवाई करते हुए राजजीत के खिलाफ एफआई आर दर्ज की थी। इसके बाद उसका लुकआउट सर्कुलर जारी कर दिया गया था। लुकआउट सर्कुलर को राजजीत सिंह ने हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। हाईकोर्ट ने इस सर्कुलर पर रोक लगाते हुए उसे अग्रिम जमानत याचिका दाखिल करने की छूट दी थी। मोहाली की अदालत ने राजजीत सिंह की अग्रिम जमानत याचिका को खारिज कर दिया था जिसके बाद उसने हाईकोर्ट की शरण ली थी। गुरुवार को हाईकोर्ट ने भी अग्रिम जमानत की मांग वाली याचिका को सिरे से खारिज कर दिया है। हाईकोर्ट के आदेश से राजजीत सिंह को बड़ा झटका लगा है क्योंकि अब किसी भी प्रकार की राहत के लिए उसे सुप्रीम कोर्ट की शरण लेनी पड़ेगी।

कुत्ते के साथ किया 'गंदा काम', रिटायर्ड हेल्थ कर्मचारी गिरफ्तार

सूरत, 3 अगस्त (एजेंसियां)। गुजरात के सूरत में आवारा कुत्ते का रेप करने वाले आरोपी वृद्ध को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था, जिसमें वह कुत्ते के साथ गंदा काम करता हुआ नजर आ रहा था। सामाजिक संगठन ने आरोपी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने वीडियो की जांच की और रिटायर्ड हेल्थ कर्मचारी को आरोपी पाया। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस का कहना है कि जानवरों का मेडिकल कराया जाएगा। दरअसल, सूरत की अठवालाइंस पुलिस थाना क्षेत्र अंतर्गत आने वाले नवसारी बाजार के मलिक वाड़ी नलवाला शेरी में रहने वाले 60 वर्षीय वृद्ध गली के आवारा कुत्ते के साथ गंदा काम करते हुआ नजर आया था। वृद्ध के इस हरकत का वीडियो किसी ने अपने मोबाइल में रिकॉर्ड कर लिया था।

'बाटला हाउस' एक्ट्रेस क्रिसैन परेरा शारजाह जेल से रिहा, ड्रग्स केस में हुई थीं गिरफ्तार

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। एक्ट्रेस क्रिसैन परेरा को लेकर कुछ महीनों पहले संयुक्त अरब अमीरात में ड्रग्स केस में गिरफ्तार होने की खबर आई थी। अब केस में अपडेट आई है। एक्ट्रेस को जेल से रिहा कर दिया गया और वो मुंबई लौट आई हैं। न्यूज एजेंसी पीटीआई की खबर के अनुसार, क्रिसैन परेरा 1 अप्रैल से शारजाह जेल में बंद थीं। एक्ट्रेस को अवॉर्ड ट्रॉफी में ड्रग्स भरकर ले जाने के मामले में शारजाह पुलिस ने गिरफ्तार किया गया था। अब रिहाई के बाद गुरुवार को एक्ट्रेस मुंबई पुलिस कमिश्नर विवेक फासलकर से मुलाकात करेंगी।

महीनों बाद परिवार से हुई मुलाकात

क्रिसैन परेरा के मुंबई लौटने पर उनके भाई केविन परेरा ने खुशी जाहिर की और सोशल मीडिया पर एक इमोशनल वीडियो भी शेयर किया है। वीडियो में क्रिसैन और केविन एक-दूसरे को गले लगाते हुए दिख रहे हैं। पोस्ट के कैप्शन में केविन ने लिखा, क्रिसैन आखिरकार वापस लौट आई है और हमासे मिली। मुझे पता है कि मैंने जून में एलान किया था कि वो वापस आ जाएगी, लेकिन इसमें थोड़ा ज्यादा वक्त लग गया और अंत में लौट आई है।

क्या है पूरा मामला ?

मुंबई क्राइम ब्रांच ने इस साल अप्रैल में ड्रग-तस्करी के मामले में एक्ट्रेस क्रिसैन परेरा को फंसाने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया था। इनमें बोरीवली स्थित एक बेकरी के मालिक एंथोनी पॉल (35 साल) और उनके साथी बैंकर राजेश बोभाटे (34 साल) का नाम शामिल है।

जबरन फंसाई गईं एक्ट्रेस

पूछताछ में दोनों ने कबूल किया कि उन्होंने दुबई जाने से पहले तीन लोगों को अवॉर्ड की ट्रॉफियों में ड्रग्स छिपाकर दिया था। इसके अलावा उन्होंने दो और लोगों को केके में ड्रग्स छिपाकर दिया था। क्रिसैन परे समेत दो लोग अनजाने में जाल में फंस गए, जबकि बाकी तीन लोग शारजाह में अधिकारियों से बचकर निकलने में कामयाब रहे।

इन फिल्मों में कर चुकी हैं काम

क्रिसैन परेरा बॉलीवुड की सड़क 2 और बाटला हाउस जैसी फिल्मों में काम कर चुकी हैं। इसके अलावा उन्होंने वेब सीरीज थिंकिस्तान में भी काम किया है। एक्ट्रेस श्री वुमेन , ड्रमरोल और संडेज विद चित्रा जैसे कुछ ड्रामा का भी हिस्सा भी रह चुकी हैं।

पीएम मोदी पर टीएमसी सांसद डेरेक ओ'ब्रायन ने किया कटाक्ष, ट्वीट कर कही ये बात

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। तृणमूल सांसद डेरेक ओ'ब्रायन ने गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर कटाक्ष किया और कहा कि वह अभी तक एक मिनट के लिए भी संसद नहीं आए हैं, लेकिन उनके मंत्रियों ने घोषणा की है कि वह संसद के मानसून सत्र के आखिरी दिन आएंगे। तृणमूल सांसद ने कहा, अब आपके कृपापात्र घोषणा करते हैं कि आप अंतिम दिन, 10 अगस्त को आने के लिए तैयार हो गए हैं। संसद में मणिपुर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बयान की मांग को लेकर कांग्रेस पीएम मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लेकर आई। प्रस्ताव पर अभी विचार नहीं हुआ है और इस पर 8 से 10 अगस्त के बीच चर्चा होने की संभावना है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 10 अगस्त को अविश्वास प्रस्ताव का जवाब दे सकते हैं, जो सत्र का आखिरी दिन भी है। अविश्वास प्रस्ताव कांग्रेस द्वारा लाया गया है लेकिन विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' (भारतीय राष्ट्रीय विकासात्मक समावेशी गठबंधन) से संबंधित सभी विपक्षी दलों ने प्रस्ताव का समर्थन किया।

संसद के इस सत्र में ज्यादातर मणिपुर मुद्दे पर इतना व्यवधान देखा गया कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गुरुवार को लोकसभा की अध्यक्षता नहीं की। लोकसभा की कार्यप्रणाली पर नाराजगी जताते हुए ओम बिरला ने कहा कि जब तक एमओ सदन की गरिमा के अनुरूप व्यवहार नहीं करेंगे तब तक वह लोकसभा में नहीं आएंगे। बुधवार को विपक्षी दल 'इंडिया' के 31 सदस्यों ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की।

उमस भरी गर्मी से दिल्ली वालों के छूटे पसीने

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली-एनसीआर में पिछले 3 दिनों से जबरदस्त गर्मी पड़ रही है। गर्मी के साथ उमस ने सबको परेशान कर दिया है। पंखे और कूलर भी इस भीषण गर्मी में नाकाफी साबित हो रहे हैं । जून-जुलाई में अच्छी-खासी बारिश होने के बाद दिल्ली-एनसीआर वालों को यह गर्मी सता रही है। अब लोग बारिश की आस लगाए बैठे हैं। वहीं इस बीच अब गुरुवार शाम से दिल्ली में बारिश की वापसी हो सकती है। आईएमडी ने कहा है कि दिल्ली में 4 से 6 अगस्त तक मध्यम बारिश होने की संभावना है।

4 से 6 अगस्त के बीच होगी बारिश

मौसम विभाग के अनुसार, दिल्ली में गुरुवार शाम को हल्की बारिश हो सकती है। इसके साथ ही 4 से 6 अगस्त के बीच राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली और इसके आसपास के कई इलाकों में मध्यम बारिश हो सकती है। आईएमडी ने बताया है कि 4 अगस्त को राजधानी में भारी बारिश हो सकती है। 6 अगस्त के बाद इसमें धीरे-धीरे कमी आती रहेगी।

आईएमडी ने आज के लिए येलो अलर्ट किया जारी

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, दिल्ली में बुधवार को अधिकतम तापमान 36.2 डिग्री रहा। यह सामान्य से दो डिग्री अधिक है। वहीं, न्यूनतम तापमान 27.9 डिग्री रहा। यह भी सामान्य से एक डिग्री अधिक है। हवा में नमी का स्तर 64 से 80 प्रतिशत तक रहा। हालांकि आज गुरुवार को काले बादल छाए रहने की संभावना है। इसके साथ ही मध्यम बारिश के आसार भी हैं।

पत्नी की उंगली काटकर खा गया बेंगलुरु का शख्स

बेंगलुरु, 3 अगस्त (एजेंसियां)। यहां झगड़े के दौरान एक शख्स अपनी पत्नी की उंगली काटकर खा गया। उसके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। पुलिस ने गुरुवार को यह जानकारी दी। यह घटना तब सामने आई जब महिला ने शहर के कोनानकुंटे पुलिस स्टेशन में पति के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। पुलिस के मुताबिक घटना 28 जुलाई को हुई थी। पुलिस आरोपी पति विजयकुमार के खिलाफ कार्रवाई की तैयारी कर रही है। पुष्पा की शादी 23 साल पहले विजयकुमार से हुई थी। शादी के बाद से ही आरोपी अपनी पत्नी को शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताड़ित करता था। यातना सहने में असमर्थ महिला अलग रहने लगी। 28 जुलाई को विजयकुमार पुष्पा के घर गया और झगड़ा किया। शिकायत में कहा गया है कि बहस के दौरान उसने उसके बाएं हाथ की एक उंगली काट ली और उसे खा लिया।

'ज्ञानवापी के बाद कृष्ण जन्मभूमि का भी हो एएसआई सर्वे', मथुरा से बीजेपी सांसद हेमा मालिनी ने उठाई मांग, बोलीं- जल्द हो निर्णय

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गुरुवार को एक अहम फैसले में वाराणसी के ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के एएसआई सर्वेक्षण को हरी झंडी दे दी है। अदालत ने अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी (मुस्लिम पक्ष) की याचिका पर अपना आदेश सुनाया, जिसमें वाराणसी जिला अदालत द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को यह निर्धारित करने के लिए सर्वेक्षण करने के निर्देश को चुनौती दी गई थी कि क्या ज्ञानवापी मस्जिद एक मंदिर पर बनाई गई थी। फैसला सुनाते समय, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने इस बात पर जोर दिया कि 'न्याय के हित में वैज्ञानिक सर्वेक्षण आवश्यक है।' इस फैसले पर मथुरा से भाजपा सांसद हेमा मालिनी ने प्रतिक्रिया देते हुए कृष्ण जन्मभूमि के भी वैज्ञानिक सर्वेक्षण की बात कही। हेमा मालिनी ने कहा, 'अच्छा है...सर्वे होना ही चाहिए। इसका डिसीजन जल्द से जल्द होना चाहिए, पूरे देश के लिए अच्छा है। कृष्ण जन्मभूमि का भी सर्वे होना चाहिए। जल्दी से जल्दी सब क्लीयर होना चाहिए। फैसला जल्द से जल्द आना चाहिए अन्यथा बातचीत होती रहेगी। अगर अंतिम निर्णय जल्द आता है तो यह देश के लिए अच्छा होगा।' इधर मुस्लिम पक्ष इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देने पर विचार कर रहा है। अंजुमन इंतजामिया मस्जिद कमेटी हाई कोर्ट के फैसले का अध्यन कर सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकीलों से चर्चा कर रही है। गौरतलब है कि इलाहाबाद हाई कोर्ट ने इंतजामिया कमेटी की एएसआई सर्वे पर रोक लगाने की याचिका खारिज करते हुए वाराणसी जिला अदालत के 21 जुलाई 2023 के आदेश को बरकरार रखा। उच्च न्यायालय ने इससे पहले दोनो पक्षों को सुनने के बाद 28 जुलाई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। ज्ञानवापी मस्जिद परिसर के एएसआई सर्वेक्षण की अनुमति देने वाले इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर वरिष्ठ वकील हरिशंकर जैन ने कहा, 'वहां मौजूद कई सबूत हैं जो कहते हैं कि यह एक हिंदू मंदिर था। एएसआई सर्वेक्षण से तथ्य सामने आएंगे। मुझे यकीन है कि मूल शिवलिंग को वहां मुख्य गुंबद के नीचे छिपा दिया गया है। इस सच्चाई को छिपाने के लिए, उन्होंने (मुस्लिम पक्ष) बार-बार आपत्ति जताई है।

वे जानते हैं कि इसके बाद यह मस्जिद नहीं रहेगी और वहां एक भव्य मंदिर के निर्माण का रास्ता साफ हो जाएगा।' इलाहाबाद हाई कोर्ट के फैसले पर प्रतिक्रिया देते हुए जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने कहा, 'चाहे वह मंदिर हो या मस्जिद, भगवान एक है। आप उसे (भगवान) किसी मंदिर या मस्जिद में कहीं भी देख सकते हैं।'

THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

मेरा हैदराबाद

शुक्रवार, 4 अगस्त, 2023 3

सुविचार

संगति आप को ऊंचा उठा भी सकती है और यह आप की ऊंचाई को खत्म भी कर सकती है।

जरूरतमंदों के लिए अंगदान की ओर प्रेरित होने की जरूरत : हरीश राव

राष्ट्रीय अंग दान दिवस पर मंत्री ने किया अंग दाताओं के परिजनों का सम्मान

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। मृत अंग दाताओं के परिवार के सदस्यों, जिन्होंने ब्रेन डेड पीड़ितों के अंगों को दान करने का फैसला किया है, को गुरुवार को राष्ट्रीय अंग दान दिवस के अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री टी. हरीश राव द्वारा सम्मानित किया गया। कुल 105 परिवार, जिन्हें व्यक्तिगत क्षति हुई थी, लेकिन उन्होंने अपने मृत परिवार के सदस्यों के अंगों को जरूरतमंद मरीजों के साथ साझा करने का फैसला किया, उन्हें स्वास्थ्य मंत्री द्वारा सम्मानित किया गया।

हरीश राव ने दुःख की घड़ी में परिवारों के साहस और करुणा की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत क्षति झेलने के बावजूद, आपने अंग दान करने और किसी की जान बचाने का फैसला किया, जो वास्तव में साहसी है। मंत्री, जिन्होंने इस मुद्दे पर जागरूकता बढ़ाने के लिए जीवनदान अंग दान की सराहना की, ने जनता से जरूरतमंद रोगियों के लिए जीवन रेखा बढ़ाने के साधन के रूप में अंग दान को अपनाने की जोरदार अपील की।

मंत्री, महमूद अली और तलसानी श्रीनिवास यादव, विधायक, दानम नागेंद्र, एमएलसी वाणी देवी, एमएलसी प्रभाकर, टीएसएमएसआईडीसी के अध्यक्ष एरोला श्रीनिवास और स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

सीएम केसीआर के फैसलों से विपक्षी नेता गहरे सदमे में : मंत्री

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। वित्त मंत्री टी हरीश राव ने कहा कि पोडु पट्टा भूमि के वितरण, वीआरए के नियमितीकरण, सरकार में आरटीसी के विलय और किसान ऋण माफी पर मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव द्वारा लिए गए फैसलों से विपक्षी दलों को एक मास्टर स्ट्रोक मिला है और ये नेता गहरे सदमे में हैं। गुरुवार को यहां विधानसभा परिसर में मीडियाकर्मियों से अनौपचारिक बातचीत में मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री द्वारा लिये गये निर्णयों से विपक्ष की आवाज दब गयी है और इसके परिणामस्वरूप विपक्ष में कोई आवाज नहीं है। मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार न केवल बाहर बल्कि विधानसभा में भी विपक्ष का सामना करने के लिए तैयार है।

बीएसी तीन दिन का विधानसभा सत्र आयोजित करेगी

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। विधानसभा बैठकों के संचालन पर आज बिजनेस एडवाइजरी कमेटी (बीएसी) की बैठक स्पीकर पोचारम श्रीनिवास रेड्डी की अध्यक्षता में हुई। इस मौके पर विधानसभा सत्र के आयोजन समेत कई मुद्दों पर चर्चा हुई। बैठक में सरकार की ओर से राज्य मंत्री टी. हरीश राव और प्रशांत रेड्डी, कांग्रेस की ओर से सीएलपी नेता मल्लु भट्टी विक्रमार्क और एमआईएम पार्टी की ओर से अकबरुद्दीन औवेसी ने भाग लिया। बीएसी की बैठक में तीन दिनों का विधानसभा सत्र बुलाने का फैसला लिया गया है. इस मौके पर विपक्षी दलों ने बैठकें अधिक दिनों तक आयोजित करने की मांग की. लेकिन, मंत्री हरीश राव ने कहा कि उन्हें काम के घंटों को देखना चाहिए न कि कार्य दिवसों को। हाल ही में हुई भारी बारिश, बाढ़ और सरकारी उपायों जैसे मुद्दों पर चर्चा करने का निर्णय लिया गया। चालू सत्र में सरकार करीब दस विधेयक पेश कर सकती है। इसमें शुक्रवार को बाढ़ के मुद्दे पर चर्चा होगी और शनिवार को विभिन्न विधेयक सदन में पेश किये जायेंगे.

असेंबली में दिखा दिलचस्प नजारा राजनीतिक गलियारे का तापमान बढ़ा

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना विधानसभा का मानसून सत्र गुरुवार सुबह 11:30 बजे शुरू हुआ, जिसने राजनीतिक चर्चाओं के लिए मंच तैयार किया। कार्यवाही के बीच विधानसभा में एक उल्लेखनीय दृश्य सामने आया। मंत्री केटीआर भाजपा विधायक इटेला राजेंदर की सीट तक पहुंचे और गर्मजोशी से गले लगाकर उनका स्वागत किया। दोनों के बीच लगभग दस मिनट तक दोस्ताना बातचीत हुई, मुस्कुराहट और गर्मजोशी भरे हाव-भाव का आदान-प्रदान हुआ। केटीआर और इटेला राजेंदर के बीच इस बातचीत ने ध्यान खींचा, विशेष रूप से वर्तमान संदर्भ को देखते हुए जहां इटेला केसीआर की सरकार को हटाने के लिए दृढ़ संकल्पित है। दोनों नेताओं के बीच अप्रत्याशित गर्मजोशी और सौहार्द ने राजनीतिक गलियारों का तापमान बढ़ा दिया।

सीएम केसीआर ने एहतियाती कदम उठाकर रोका बड़ा नुकसान : वेमुला

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। विधायी मामलों के मंत्री वेमुला प्रशांत रेड्डी ने आज कहा कि मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव हाल की बाढ़ के बाद एहतियाती कदम उठाकर भारी क्षति को रोकने में सक्षम रहे हैं।

राज्य में हाल की भारी बारिश और बाढ़ से हुए नुकसान के मद्देनजर राज्य सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर गुरुवार को विधान परिषद में हुई संक्षिप्त चर्चा का जवाब देते हुए मंत्री ने कहा कि कई सदस्यों द्वारा उठाए गए मुद्दों को मंजूरी दे दी गई है। इस अवसर पर बोलते हुए, रेड्डी ने कहा कि 18 जुलाई से 22 जुलाई और 24 से 28 जुलाई तक पूरे राज्य में दो बार भारी बारिश हुई। हम प्राकृतिक आपदाओं की कल्पना नहीं कर सकते। उन्हें रोका नहीं जा सकता। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, लेकिन मुख्यमंत्री केसीआर ने हमेशा हमसे कहा कि एहतियाती उपायों के कारण, हम प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाले जान-माल के नुकसान को रोक सकते हैं। पिछले एक सप्ताह में, हमने मूसलाधार बारिश देखी है, जो अब तक के उच्चतम स्तर पर आसमान छू रही है। पूरे वर्ष में कितनी वर्षा दर्ज की जाती है, हमने एक अवसर देखा है जब एक ही दिन में निज़ामाबाद जिले में उसी पैमाने पर बारिश हुई। उन्होंने कहा कि बालकोंडा निर्वाचन क्षेत्र, जिसका मैं प्रतिनिधित्व करता हूं, में सबसे अधिक बारिश हुई। मेरे गृहनगर वेलपुर मंडल में, एक दिन में केवल छह घंटे में 46 सेमी बारिश हुई। रेड्डी ने कहा कि 17 जुलाई, 2023 तक वार्षिक औसत वर्षा 20% थी, जबकि 28 जुलाई तक राज्य में +66% अधिक वर्षा हुई थी। उन्होंने कहा कि जयशंकर भूपालपल्ली, हनमकोंडा, वारंगल, करीमनगर, महबुबाबाद, मुलुगु, जगतियाल, निर्मल, निज़ामाबाद और पेद्दापल्ली जिलों में केवल आठ दिनों में वार्षिक वर्षा का 50% दर्ज किया गया।

लक्ष्मीदेवीपेट में छह घंटे में 65 सेमी बारिश दर्ज की गई, जो वार्षिक औसत बारिश से 75% अधिक है। वाजेडू में छह घंटे में 52 सेमी बारिश दर्ज की गई, जो औसत बारिश से 60% ज्यादा है। वेलपुर में छह घंटे में 46 सेमी बारिश दर्ज की गई, जो औसत बारिश से 50% ज्यादा है। इन क्षेत्रों में साल-दर-साल औसत 90 सेमी की तुलना में छह घंटे के भीतर समान स्तर की बारिश हुई, उन्होंने परिषद को बताया।

उन्होंने यह भी कहा कि अधिकारियों के अनुसार, बादल फटना शब्द का उपयोग केवल तब किया जाता था जब 10 से 15 सेमी बारिश दर्ज की जाती थी और कहा कि राज्य में एक ही दिन में 65 सेमी बारिश हुई है। मंत्री ने याद करते हुए कहा कि जब हम जमीनी स्तर पर बचाव अभियान के लिए गए तो लोगों ने हमें बताया कि उन्होंने पिछले 50 वर्षों में ऐसी बारिश कभी नहीं देखी थी। उन्होंने कहा कि सीएम केसीआर के निर्देश पर राज्य के मंत्री, विधायक, जन प्रतिनिधि और सरकारी मशीनरी हाई अलर्ट पर थी और जमीनी स्तर पर सभी विभागों के अधिकारियों ने किसी भी प्रकार की मानवीय और आर्थिक हानि को रोकने के लिए समन्वय में काम किया।

उन्होंने कहा कि उन्होंने सैकड़ों लोगों की जान बचाई है क्योंकि सीएम केसीआर ने इस बाढ़ से होने वाले नुकसान की आशंका जताई थी और राज्य सरकार की मशीनरी को सतर्क कर दिया था। मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री केसीआर ने बाढ़ राहत कार्यों के तहत विशाखापट्टनम से 4 विशेष नौकाओं और अतिरिक्त 2 टीमों के साथ 8 एनडीआरएफ टीमों की स्थापना की है। उन्होंने सदन को बताया कि भूपालपल्ली, मुलुगु और कोत्तागुडेम में 2 हेलीकॉप्टरों से बाढ़ राहत अभियान चलाया गया और बाढ़ पीड़ितों को भोजन और दवाएं उपलब्ध कराई गईं।

सरकार के फैसले के पीछे हर कर्मचारी की मेहनत : बाजीरेड्डी गोवर्धन

टीएसआरटीसी के अध्यक्ष सम्मानित

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। कर्मचारियों को सरकार में विलय करने में अहम भूमिका निभाने वाले तेलंगाना राज्य सड़क परिवहन निगम (टीएसआरटीसी) के अध्यक्ष और विधायक बाजीरेड्डी गोवर्धन को संगठन के शीर्ष अधिकारियों ने सम्मानित किया। कैबिनेट के फैसले के बाद जब वह पहली बार बस भवन आये तो उन्होंने उनका जोरदार स्वागत किया। उन्होंने हैदराबाद बस भवन स्थित अपने कक्ष में चेयरमैन और विधायक बाजीरेड्डी गोवर्धन को बधाई दी। इस मौके पर बाजीरेड्डी गोवर्धन ने कहा कि उन्हें बहुत गर्व और खुशी है कि सीएम केसीआर ने चेयरमैन रहते हुए ऐतिहासिक फैसला लिया। उन्होंने 43 हजार टीएसआरटीसी परिवार की ओर से सीएम केसीआर का विशेष आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि चूंकि टीएसआरटीसी कर्मचारियों को सरकारी कर्मचारियों के रूप में मान्यता दी गई थी, इसलिए सभी कर्मचारियों को नौकरी की सुरक्षा मिली। उन्होंने कहा कि सरकार के फैसले के पीछे हर कर्मचारी की मेहनत और मेहनत है। उन्होंने बताया कि वह संगठन में सुधार के इरादे से टीएसआरटीसी और सरकार के बीच संपर्क का काम कर रहे है। उन्होंने कहा कि पिछले डेढ़ साल में संगठन में कई नवोन्मेषी कार्यक्रम लाये गये हैं। कई लोगों का कहना है कि एमडी सज्जनार की सराहना हो रही है कि वह अच्छा काम कर रहे हैं और कंपनी को विकास के रास्ते पर ले जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि टीएसआरटीसी एक अनुशासित संगठन है और कर्मचारियों को भविष्य में भी जिम्मेदारी से काम करना चाहिए और देश में संगठन का नाम रोशन करना चाहिए। इस मौके पर उच्च अधिकारियों ने टीएसआरटीसी की बेहतरी के लिए चेयरमैन और एमडी की सराहना की। इस अवसर पर कार्यकारी निदेशक (ईडी) मुनिशेखर, पुरूषोत्तम, वेंकटेश्वरलु, कृष्णकांत, मुख्य प्रबंधक (परियोजनाएं) विजय कुमार, सीएमई रघुनाथ राव, सीटीएम जीवनप्रसाद, सीएफएम विजयपुष्फा, सीसीओएस विजयभास्कर, सीसीई रामप्रसाद, बिजनेस हेड संतोष कुमार, रंगारेड्डी, हैदराबाद, सिकंदराबाद आरएम श्रीधर, वरप्रसाद, खुसरोशा खान और अन्य ने भाग लिया।

उस्मानिया अस्पताल ने 6 साल के बच्चे का लीवर ट्रांसप्लांट किया

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के सरकारी अस्पतालों के लिए उपलब्धि, उस्मानिया जनरल हॉस्पिटल (ओजीएच) के ट्रांसप्लांट सर्जनों ने 6 साल के एक बच्चे की जान बचाई। वह लिवर फेलियर से पीड़ित था। विकाराबाद के चेल्लापुर गांव के रहने वाले इस बच्चे की ओजीएच में बाल चिकित्सा संबंधी लीवर प्रत्यारोपण सर्जरी सफलतापूर्वक की गई, जिसकी लागत एक कॉर्पोरेट अस्पताल में 30 लाख रुपये से अधिक होती। तेलंगाना सरकार आरोग्यश्री स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत बच्चे के लिए आजीवन दवाओं की मुफ्त आपूर्ति भी प्रदान कर रही है। प्रवतपुरम साई प्रणीत को अपने पिता श्रमिक पर्वतपुरम चेन्नई से जिगर का एक छोटा टुकड़ा (250 ग्राम) मिला। पिता और पुत्र सर्जरी से ठीक हो गए हैं और गुरुवार को उन्हें छुट्टी दे दी गई। लड़का लीवर की खराबी के कारण संघर्ष कर रहा था और उसके पिता ने जिगर का टुकड़ा दान कर दिया। ओजीएच के गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और बाल चिकित्सा लीवर प्रत्यारोपण विशेषज्ञ के प्रमुख डॉ. सीएच मधुसूदन ने कहा, यह तेलंगाना के सरकारी अस्पतालों में किया जाने वाला अपनी तरह का पहला बाल चिकित्सा जीवन से संबंधित लीवर प्रत्यारोपण है। पिछले लगभग एक साल में, लगभग आठ मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटरों के लॉन्च के बाद, ओजीएच के सर्जन सक्रिय रूप से ट्रांसप्लांट सर्जरी कर रहे हैं। ओजीएच में कुल 23 लीवर प्रत्यारोपण, 620 किडनी प्रत्यारोपण और अग्न्याशय का एक प्रत्यारोपण सफलतापूर्वक किया गया है। 620 किडनी प्रत्यारोपण सर्जरी में से, लगभग सभी जीवित अंग दान से संबंधित हैं।

ओजीएच के अधीक्षक डॉ. बी. नागेंद्र ने कहा कि डॉक्टरों का समर्थन करने के लिए मुख्यमंत्री, के.चंद्रशेखर राव और स्वास्थ्य मंत्री, टी. हरीश राव को धन्यवाद देते हैं। हमें 5.5 करोड़ रुपये के लीवर प्रत्यारोपण उपकरण दान करने के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिकल लिमिटेड (एचएएल) को भी धन्यवाद देना चाहिए।

पूर्व मंत्री जुपल्ली कृष्ण राव कांग्रेस में शामिल

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस को बढ़ावा देते हुए, राज्य के कई नेता पूर्व मंत्री जुपल्ली कृष्ण राव सहित सबसे पुरानी पार्टी में शामिल हो गए। एक ट्वीट में, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, "हम कांग्रेस पार्टी में तेलंगाना के कई प्रमुख नेताओं का स्वागत करते हैं। तेलंगाना में राजनीतिक ज्वार अच्छाई की ओर बढ़ रहा है और राज्य के लोग समग्र प्रगति के लिए कांग्रेस सरकार चाहते हैं। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, "पूर्व मंत्री

जुपल्ली कृष्ण राव, पूर्व विधायक गुरुनाथ रेड्डी, केआर नागराजू और अन्य जमीनी स्तर के नेताओं का कांग्रेस पार्टी में प्रवेश, राज्य में सच्चा सामाजिक कल्याण प्रदान करने के हमारे प्रयास को और मजबूत करेगा।"

पुरुष ने महिला का किया यौन शोषण

तीन साल पहले पबजी गेम के दौरान हुई थी दोनों की मुलाकात

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। एक महिला जो पबजी गेम खेलते समय एक व्यक्ति से मिली थी, कथित तौर पर उसके साथ यौन दुर्व्यवहार किया गया। पुलिस के अनुसार, आंध्र प्रदेश के कोनसीमा जिले की रहने वाली पीड़िता तीन साल पहले कोनसीमा जिले के कपिलेश्वर मंडल के अंगारा गांव के नरसिम्हामूर्ति के संपर्क में आई। वे दोनों नियमित रूप से अपने फोन पर पबजी खेल रहे थे।

बाद में, महिला ने 2020 में शादी कर ली और अपने पति के साथ अपने मूल स्थान पर रह रही थी। हालाँकि, नरसिम्हमूर्ति ने कथित तौर पर महिला को परेशान किया जिसके कारण अंततः उसका तलाक हो गया। बाद में, संदिग्ध ने उसे हैदराबाद आने के लिए मजबूर किया और उसे बल्कमपेट के एक घर में ले गया, जहां उसने उसे ठंडे पेय में नशीला पदार्थ मिलाकर पिलाया और जब वह बेहोश हो गई, तो उसका यौन शोषण किया।

नरसिम्हामूर्ति ने कथित तौर पर उसकी तस्वीरें खींची और उन्हें दिखाकर बार-बार धमकी दे रहा था। कथित उत्पीड़न को सहन करने में असमर्थ, पीड़िता ने आंध्र प्रदेश में अपने मूल स्थान पर पुलिस से संपर्क किया, जिसने मामला दर्ज किया और अधिकार क्षेत्र के आधार पर इसे हैदराबाद स्थानांतरित कर दिया। पुलिस जांच कर रही है।

कलेक्टरेट बिल्डिंग में कोबरा घुसने से मचा हड़कंप

विजयवाड़ा, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। अगर किसी की आंखों के सामने सांप आ जाए तो डर का वर्णन नहीं किया जा सकता है। विजयवाड़ा में कलेक्टरेट कर्मचारियों ने इसी डर का अनुभव किया। कोबरा देखते हुए ऑफिस के कर्मचारी परेशान हो गए। जिला कलक्ट्रेट में राजस्व अधिकारी के चैंबर के बगल में अन्य कर्मचारियों का केबिन है। चैंबर के पीछे कांटों का जंगल है और एक कोबरा कर्मचारियों के केबिन में घुस गया। चार फीट लंबे जहरीले सांप को देखकर कर्मचारी हैरान रह गए। लोगों के शोर मचाने पर सांप केबिन में ही रह गया। कलेक्टोरेट के अधिकारियों ने वन विभाग के कर्मचारियों को सूचना दी। वन विभाग के कर्मियों ने तुरंत खतरनाक कोबरा को बड़ी कुशलता से पकड़ लिया। इसके बाद कर्मचारियों ने राहत की सांस ली।

वन अधिकारी की हत्या के मामले में दो आदिवासियों को उम्रकैद

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के भद्राद्रि कोत्तागुडेम जिले की एक अदालत ने वन रेंज अधिकारी की हत्या के मामले में दो आदिवासियों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। अदालत ने गुट्टिकोया आदिवासी समुदाय से आने वाले मदकम तुला (43) और पोडियम नंगा (37) को सजा सुनाई। दोनों जिले के चट्टुगोंडा मंडल के येर्राबोडु गांव के रहने वाले हैं। अदालत ने प्रत्येक पर 1,000 रुपये का जुर्माना भी लगाया है। उन्होंने 22 नवंबर, 2022 को वन रेंज अधिकारी (एफआरओ) श्रीनिवास राव (43) की हत्या कर दी थी। बेंदालापाडु वन क्षेत्र में येर्राबोडु के पास गुटिकोया जनजाति के कृषकों ने उन पर तेज धार वाले हथियारों से हमला किया। वन विभाग द्वारा लगाए गए पौधों को हटाने पर जब काश्तकारों से वन अधिकारी से सवाल किया तो उन्होंने उन पर हमला कर दिया। दोनों पक्षों के बीच तीखी नोकझोंक हुई। तनाव बढ़ने पर किसानों ने श्रीनिवास राव पर दरांती, चाकू और अन्य धारदार हथियारों से हमला कर दिया। बेंदालापाडु अनुभाग अधिकारी रामाराव अपनी जान बचाने के लिए भाग निकले। यह हत्या वन अधिकारियों और आदिवासियों के बीच बढ़ती झड़पों के बीच हुई, जो पोडु भूमि या आदिवासियों और अन्य वनवासियों द्वारा खेती के तहत वन भूमि पर अधिकार का दावा करते हैं। वन अधिकारियों द्वारा पोडु

किसानों की कर्ज माफी के लिए 167.59 करोड़ रुपये जारी

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य सरकार ने गुरुवार को 167.59 करोड़ रुपये जारी करके किसानों की ऋण माफी की प्रक्रिया शुरू की, जिससे तेलंगाना में कुल 44,870 किसानों को लाभ होगा, जिनका कृषि ऋण 37,000 और 41,000 रुपये के बीच है।

इस अवसर पर, कृषि मंत्री सिंगीरेड्डी निरंजन रेड्डी ने किसानों की ऋण माफी राशि जारी करने और तेलंगाना में किसानों से किया गया अपना वादा निभाने का आदेश देने के लिए मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव को धन्यवाद दिया।

मुख्यमंत्री ने 19,000 करोड़ रुपये के बकाया कृषि ऋण को चुकाने का निर्णय लिया है और संबंधित अधिकारियों को सितंबर महीने के दूसरे सप्ताह तक यह प्रक्रिया पूरी करने को कहा है।

समस्याग्रस्त मतदान केन्द्रों की पहचान कर आवश्यक कदम उठाएं : कलेक्टर

कुमरम भीम आसिफाबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। जिला कलेक्टर बोरकड़े हेमन्त सहदेव राव ने कहा कि समस्याग्रस्त एवं अत्यधिक समस्याग्रस्त मतदान केन्द्रों की पहचान कर आवश्यक कदम उठाये जायें। जिले के अपर कलेक्टर दीपक तिवारी, दसारी वेणु, एडिशनल एसपी अचेश्वर राव के साथ सीआई, तहसीलदार और एसआई ने गुरुवार को जिला केंद्र में एकीकृत समाहरणालय भवन सभाकक्ष में समीक्षा बैठक की। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने कहा कि जिले के समस्याग्रस्त एवं अति समस्याग्रस्त मतदान केन्द्रों को चिन्हित कर आवश्यक कदम उठाये जायें। उन्होंने कहा कि जिले के सिरपुर एवं आसिफाबाद विधानसभा क्षेत्रों में हुए पिछले चुनावों में मतदान प्रतिशत की जांच जिले के मतदान केन्द्रों, कम मतदान प्रतिशत वाले केन्द्रों, पार्टियों के बीच झड़प के कारण नष्ट हुए मतदान केन्द्रों एवं सुरक्षा संबंधी समस्याओं वाले मतदान केन्द्रों की जांच की जाए।पहचाना की जाएं । उन्होंने कहा कि आगामी चुनाव में किसी भी अप्रिय घटना से बचने के लिए पूरी सुरक्षा व्यवस्था के साथ शांतिपूर्ण ढंग से मतदान संपन्न कराने के लिए कदम उठाए जाने चाहिए। इस कार्यक्रम में आरडीओ राजेश्वर, सुरेश, एडिशनल एसपी श्रीनिवास, करुणाकर, निर्वाचन विभाग के अधिकारी, संबंधित विभाग के अधिकारी और अन्य लोग शामिल हुए।

ईंटें फेंकी, खिड़कियां तोड़ी शाहजहांपुर में आरएसएस ऑफिस पर जमकर पथराव

शाहजहांपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में आरएसएस कार्यालय की दीवार पर टॉयलेट करने से मना करने पर बवाल हो गया। दबंगों ने विद्यार्थी प्रचारक सहित कार्यकर्ताओं को जमकर पीटा। साथ ही कार्यालय पर पथराव कर दिया। सूचना पर पहुंचे हिंदू संगठनों, विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं से पुलिस की जमकर नोकझोंक हुई।

हिंदू संगठनों ने कहा कि काफी समय से इसकी शिकायत की जा रही थी, लेकिन पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर रही थी। फिलहाल पुलिस ने पथराव करने वाले दो लोगों पर मुकदमा दर्ज कर उनको हिरासत में लिया है। दरअसल, बुधवार देर रात सदर बाजार थाना क्षेत्र के टाउन हॉल स्थित आरएसएस कार्यालय की दीवार पर एक युवक टॉयलेट कर रहा था। जब युवक को संघ कार्यकर्ताओं ने मना किया तो वह भड़क गया और वह गाली-गलौज करने लगा। कार्यकर्ताओं के साथ अभद्रता और गाली-गलौज के बीच ही मारपीट होने लगी।

सुप्रीम कोर्ट पहुंचा बिहार जातीय जनगणना का मामला

एचसी के आदेश को चुनौती, की गई यह मांग

पटना, 3 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार में भले ही पटना हाईकोर्ट के फैसले से जातीय जनगणना का रास्ता साफ हो गया हो, मगर अब इसे सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है। नीतीश सरकार के हक में पटना हाईकोर्ट का फैसला आने के बाद जाति आधारित जनगणना एवं आर्थिक सर्वेक्षण का मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। याचिका में पटना हाईकोर्ट के जातीय जनगणना वाले आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है। याचिका में पटना हाईकोर्ट के सर्वे जारी करने के आदेश पर रोक लगाने की मांग की गई है। दरअसल, अखिलेश कुमार नामक एक याचिकाकर्ता ने पटना हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट इस मामले पर कब सुनवाई करेगी, इसकी कोई जानकारी सामने नहीं आई है। हालांकि, बिहार सरकार ने भी सुप्रीम कोर्ट में पहले से ही कैवियट अर्जी दाखिल कर रखी है।

पटना हाईकोर्ट ने किया था रास्ता साफ

इससे पहले बिहार में जाति आधारित जनगणना को रोकने के लिए दाखिल याचिका को पटना हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया था। कोर्ट के इस फैसले के साथ ही नीतीश सरकार का प्रदेश में जातिगत जनगणना करवाने का रास्ता साफ हो गया था। बता दें कि याचिकाकर्ताओं ने जातिगत जनगणना रोकने की अपील की थी, लेकिन कोर्ट ने याचिका खारिज करते हुए बिहार सरकार को बड़ी राहत दी थी। बता दें कि जाति आधारित जनगणना प्रक्रिया पर रोक लगाने के लिए पांच अलग-अलग याचिकाएं हाईकोर्ट में दायर की गई थीं, जिस पर कोर्ट में कई दिनों तक सुनवाई चली थी।

याचिकाकर्ताओं की दलील थी कि ये केंद्र का अधिकार है

बता दें कि इस मामले की सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं ने जातीय जनगणना पर सवाल उठाते हुए उसे तत्काल रोकने के लिए दलील दी थी। याचिकाकर्ताओं का कहना था कि जनगणना करवाने का अधिकार केंद्र सरकार का है। अगर ऐसा बिहार सरकार करती है तो व्यक्ति की निजता के अधिकार का हनन होगा। इस पर बिहार सरकार ने अपना पक्ष रखा था। बिहार सरकार की ओर से कहा गया था कि यह जातिगत जनगणना नहीं बल्कि सर्वेक्षण होगा। सर्वेक्षण में जो 17 सवाल पूछे जा रहे हैं इससे किसी की निजता के अधिकार का हनन नहीं होता है। कोर्ट में बिहार सरकार ने अपना पक्ष मजबूती से रखा और कोर्ट ने भी बिहार सरकार को राहत देते हुए जातिगत जनगणना के मामले में बड़ी राहत दी थी।

बिहार में क्यों की जा रही जातीय जनगणना

बिहार में ज्यादातर राजनीतिक दल जातीय जनगणना की लंबे समय से मांग कर रहे थे। उनका कहना है कि जातीय जनगणना होने से राज्य में रहने वाले दलित और पिछड़ा वर्ग के लोगों की सही संख्या पता चल जाएगी। इससे उन्हें आगे बढ़ाने के लिए विशेष योजनाएं बनाने में आसानी होगी। अगर सही जातीय जनसंख्या का पता होगा तो राज्य में उनके मुताबिक प्रभावी योजनाएं बनाई जाएंगी। बिहार विधानसभा और विधान परिषद में 18 फरवरी 2019 तथा 27 फरवरी 2020 को जातीय जनगणना कराने से जुड़ा प्रस्ताव पेश किया गया। इस प्रस्ताव को बीजेपी, राजद, जदयू समेत सभी दलों ने समर्थन दे दिया।

शुरू हो चुकी है जातिगत जनगणना की प्रक्रिया

बिहार में भी 7 जनवरी 2023 से जातिगत जनगणना की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। इसके तहत विभागीय कर्मचारी डोर टू डोर जाकर जनगणना कर रहे हैं। जनगणना में कर्मचारियों के साथ शिक्षक और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को भी लगाया गया है। जनगणना के तहत पहले चरण में मकानों पर नंबर डाले गए। वहीं, दूसरे चरण में लोगों से उनकी जाति पूछकर गणना की जा रही है। बता दें कि लंबे समय से बिहार समेत देश के कई राज्यों में जातिगत जनगणना की मांग उठ रही थी। साल 2011 में हुई जनगणना के बाद जातीय आधार पर रिपोर्ट बनाई गई थी, लेकिन उसे जारी नहीं किया गया। बिहार से पहले राजस्थान और कर्नाटक में भी जातीय जनगणना हो चुकी है।

राम मंदिर जैसा इसका भी निर्णय होगा

ज्ञानवापी के सर्वे की मंजूरी मिलने पर बोले केशव प्रसाद

इलाहाबाद, 3 अगस्त (एजेंसियां)। हाईकोर्ट ने गुरुवार को ज्ञानवापी मामले में बड़ा फैसला सुनाया। उच्च न्यायालय ने वाराणसी कोर्ट के आदेश को बरकरार रखते हुए कहा कि ज्ञानवापी परिसर में एएसआई का सर्वे जारी रहेगा। हाई कोर्ट ने कहा कि इस सर्वे से किसी को कोई नुकसान नहीं होगा। हाई कोर्ट से सर्वे की हरी झंडी मिलने के बाद प्रतिक्रियाओं का दौर शुरू हो गया है। इस क्रम में उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि इससे सच्चाई बहार आएगी। उन्होंने कहा कि इसका भी फैसला राम मंदिर की तरह होगा। शिव भक्तों की मनोकामना पूरी होगी। उन्होंने कहा कि मुझे पूरा विश्वास है मुगल आक्रमणकारी ने जो विध्वंस किया था और छिपाया था वो सच सामने आएगा। वहीं, बीजेपी नेता लक्ष्मीकांत बाजपेयी ने कहा कि न्यायालय का निर्णय स्वागत योग्य है। मैं मुस्लिम समाज से भी अपील करता हूं कि सच को स्वीकार करने का साहस दिखाएं। इस फैसले को वैमनस्यता की नजर ने ना देखें। इसके अलावा आइए जानते हैं कि इस कोर्ट के इस फैसले पर किसने क्या कहा...? बीजेपी नेता कपिल मिश्रा ने कहा कि ज्ञानवापी पर हाई कोर्ट का निर्णय केवल हिंदू पक्ष की जीत नहीं बल्कि सत्य की, विज्ञान की, लॉजिक की व पुरातत्व शास्त्र की जीत है। ये संविधान और कानून की जीत है। एएसआई के सर्वे का विरोध वही लोग कर रहे हैं, जो कुछ छिपाना चाहते हैं। समाजवादी पार्टी के सांसद एसटी हसन ने कहा कि हम अदालत के आदेशों का पालन करेंगे। सर्वे के दौरान उस स्मारक को कोई नुकसान न पहुंचे। आज हमारे देश को साम्प्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता है। ऐसा कोई बयान नहीं दिया जाना चाहिए जो देश में लोगों के बीच मतभेद पैदा करे।

'संबंध बनाने के बाद महिलाएं करा रहीं झूठे केस पुरुषों के साथ हो रहा अन्याय', बोला हाईकोर्ट

प्रयागराज, 3 अगस्त (एजेंसियां)। हाईकोर्ट ने रेप और यौन शोषण के बढ़ते मामलों की सुनवाई करते हुए काफी तल्ख टिप्पणी की। महिला से कथित तौर पर रेप के आरोपी को जमानत देते हुए इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा, 'इन दिनों कानून के पक्षपाती रवैये के कारण पुरुषों के साथ बहुत अन्याय हो रहा है'। अदालत ने कहा कि इन दिनों रेप और यौन शोषण के सही मामलों का मिलना अपवाद की तरह है। पीठ ने कहा, उनके पास सुनवाई के लिए आने वाले ज्यादातर रेप और यौन अपराध से जुड़े केस झूठे होते हैं।

'हालात बिगड़ने पर लगाते है गंभीर आरोप'

हाईकोर्ट ने टिप्पणी करते हुए कहा कि ज्यादातर मामले इसलिए आते हैं, क्योंकि महिलाओं को कानून ने अपर हैंड दे रखा है। वह लंबे समय तक पुरुषों के साथ शारीरिक संबंध में रहती हैं और बाद में संबंध बिगड़ने पर वह ऐसे गंभीर आरोप लगा देती हैं। अदालत ने न्यायिक अधिकारियों से इस संबंध में अपील करते हुए कहा, न्यायिक अधिकारियों को ऐसे मामलों को सुनते हुए केस की जमीनी हकीकत को ध्यान में रखते हुए फैसला देना चाहिए। अगर वह सिर्फ लगाए गए आरोपों को ही अंतिम सत्य मान रहे हैं तो वह निर्दोष लोगों के साथ अन्याय कर रहे हैं। यूपी हाईकोर्ट ने कहा, यह वह समय आ गया है, जब अदालतों को ऐसे मामलों में जमानत देते समय बहुत सावधानी के साथ फैसला करना चाहिए, क्योंकि रेप और यौन दुराचार से जुड़े मामलों में कानून पुरुष आरोपियों के प्रति काफी अन्याय करता है। अदालत ने कहा, इन दिनों उनके खिलाफ ऐसे गंभीर आरोप लगाकर उनको ऐसे मामलों में फंसा देना बेहद सरल हो गया है।

अदालत ने दे दी आरोपी को जमानत

इलाहाबाद हाईकोर्ट की सिंगल बेंच ने ये ऑब्जर्वेशन आरोपी विवेक कुमार मौर्य को जमानत के मामले में दिया। मौर्य पर आरोप था कि उसने एक नाबालिग से शादी करने का झूठा वादा करते हुए उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए थे, जिस वजह से उसे यौन उत्पीड़न के आरोपों पर गिरफ्तार किया गया था।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पहुंचे कानपुर

लोकसभा के लिए बना रहे रणनीति

कानपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी बृहस्पति महिला महाविद्यालय किदवई नगर पहुंच गए हैं। वह लोकसभा चुनाव के मद्देनजर रणनीति भी बनाएंगे। आज के कार्यक्रमों में वरिष्ठों के साथ बैठक करके दिशा देंगे। किदवई नगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक महेश त्रिवेदी के संयोजन में दिव्यांगों को उपकरण वितरित करेंगे। कार्यक्रम में क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल, एमएलसी अरुण पाठक, विधायक नीलिमा कटियार, सुरेश अवस्थी, सुनील बजाज, बीना आर्या, पूर्व मंत्री बाल चंद्र मिश्र, भूपेश अवस्थी, रीता शास्त्री, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष अशोक मिश्रा, पूर्व जिलाध्यक्ष कौशल दीक्षित, राधेश्याम पांडेय, रामदेव शुक्ला आदि भी उपस्थिति हैं। इसके बाद प्रदेश अध्यक्ष भाजपा कार्यालय जाएंगे। वहां पर ललितपुर जिला पंचायत अध्यक्ष व सदस्यों के साथ बैठक करेंगे। फिर शहर के अलग-अलग क्षेत्रों में लोगों के घर जाकर मुलाकात करेंगे। कार्यकर्ताओं से मिलकर उनको ऊर्जा देंगे।

हारी हुई सीटों पर सहयोगी दलों की हैसियत परखेगी भाजपा, सुभासपा को मिल सकती हैं ये सीटें

लखनऊ, 3 अगस्त (एजेंसियां)। लोकसभा चुनाव-2024 में प्रदेश की सभी 80 सीटें जीतने की मुहिम में भाजपा कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। 2019 के चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक स गठबंधन (राजग) ने प्रदेश में 64 सीटें जीती थीं, 16 सीटें विपक्ष के हिस्से में थीं। भाजपा इस बार इन सीटों को गठबंधन के सहयोगियों अपना दल, सुभासपा और निषाद पार्टी के हिस्से में देना चाहती है, लेकिन उससे पहले इन इलाकों में उनके राजनीतिक हैसियत का आंकलन भी करेगी। मिशन 80 के तहत भाजपा हारी हुई सीटों पर पिछले दो साल से मंथन कर रही है। भाजपा के स्थानीय रणनीतिकारों का मानना है कि अपना दल (एस) को उनकी मौजूदा मिर्जापुर और रॉबर्टसगंज सीट मिलना लगभग तय है। यदि इससे अधिक सीटें देने पर निर्णय हुआ तो वर्तमान में पूर्वांचल में हारी हुई एक-दो सीटें उन्हें और मिल सकती हैं। सुभासपा को घोसी, जौनपुर या गाजीपुर में से दो सीटें मिल सकती हैं। वहीं, निषाद पार्टी को संतकबीरनगर, लालगंज या श्रावस्ती में से कोई दो सीटें मिल सकती है। पिछली बार संतकबीरनगर से निषाद पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद के बेटे प्रवीण निषाद भाजपा के टिकट पर जीते थे। पार्टी के नेताओं का मानना है कि हारी हुई सीटें सहयोगी दलों को देने से पार्टी के पास जोखिम कम रहेगा। साथ ही सहयोगी दलों के सामाजिक समीकरण से पिछड़े वर्ग में भाजपा की स्थिति और भी मजबूत होगी। विधानसभा चुनाव-2022 में निषाद पार्टी को 15 सीटें मिली थीं। इनमें से पांच सीटों पर निषाद पार्टी के कार्यकर्ताओं को भाजपा के चुनाव चिह्न पर लड़ाया गया था। शेष 10 में से 7 सीटें वह थीं, जहां 2017 के विस चुनाव में भाजपा को हार का सामना करना पड़ा था। निषाद पार्टी ने इनमें से छह सीटें जीतीं थीं।

पिछले लोकसभा चुनाव में राजग को प्रदेश की 80 में से 64 सीटों पर जीत मिली थी। बसपा ने 10, सपा ने पांच और कांग्रेस ने एक सीट पर चुनाव जीता था। भाजपा ने 2022 में रामपुर और आजमगढ़ लोकसभा उपचुनाव में दोनों सीटें सपा से छीन ली। अब संभल, मैनपुरी और मुरादाबाद सपा के पास हैं। बिजनौर, घोसी, गाजीपुर, जौनपुर, सहारनपुर, अमरोहा, लालगंज, श्रावस्ती, अंबेडकरनगर और नगीना में बसपा का कब्जा है। कांग्रेस के पास मात्र रायबरेली सीट है।

बंदूक हमारी, गोली हमारी और वक्त भी हमारा होगा। कौन है ये रिवॉल्वर रानी

आगरा, 3 अगस्त (एजेंसियां)। बंदूक हमारी, गोली हमारी और वक्त भी हमारा होगा। ऐसे डायलॉग बोलते हुए एक महिला का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इतना ही नहीं महिला हाथ में रिवॉल्वर लिए नजर आ रही है। उसके इन वीडियोज ने सनसनी मचा दी है। वीडियो सामने आने के बाद पुलिस ने संज्ञान लिया और कार्रवाई शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि यह वीडियो उत्तर प्रदेश के आगरा जिले की एक महिला का है। वीडियो में देखा जा सकता है कि बैकग्राउंड में एक गाना चल रहा है और महिला उस पर एक्टिंग करते दिख रही है। पुलिस ने वीडियो पर संज्ञान लेते हुए जांच शुरू कर दी है। आगरा की रहने वाली यह महिला वीडियो में हाथ में रिवॉल्वर पकड़े हुए दिख रही है और पीछे गाना चल रहा है। गाने के बोल हैं- हम हाथ में पिस्टल रखते हैं, न किसी के बाप से डरते हैं। 10 सेकेंड के इस वीडियो में महिला घर की छत पर खड़ी दिख रही है और गाने पर एक्टिंग कर रही है। बताया जा रहा है कि महिला ने इंस्टाग्राम पर रील के लिए वीडियो बनाया था। महिला का एक दूसरा वीडियो भी है। 12 सेकेंड के इस वीडियो में भी महिला ने हाथ में रिवॉल्वर पकड़ी है।

लखनऊ एयरपोर्ट पर पहुंचे लेट, नहीं मिली बोर्डिंग, यात्री ने महिलाकर्मी को मारा थप्पड़

लखनऊ, 3 अगस्त (एजेंसियां)। लखनऊ के चौधरी चरण सिंह इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर एक कपल खुद देरी से पहुंचा। जब एयरपोर्ट स्टाफ ने उन्हें बोर्डिंग की इजाजत नहीं दी तो उन्होंने महिला कर्मचारी के साथ ही बदतमीजी कर दी। महिला कर्मी को पहले गाली दी इसके बाद उसे सबके सामने थप्पड़ जड़ दिया। इस पूरे मामले की शिकायत पुलिस से की गई है। हालांकि यात्री इस पूरी घटना के बाद अगली फ्लाइट बुक करके मुंबई चले गए। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक आकाशा एयरलाइंस के काउंटर पर तैनात कस्टमर केयर एग्जीक्यूटिव निमिषा ने मुंबई जाने वाले यात्री अकरम खान और उनकी पत्नी पर गाली-गलौज करने और मारपीट करने का आरोप लगाया है। निमिषा ने बताया है कि मुंबई जाने के लिए अकरम और उनकी पत्नी खुद ही एयरपोर्ट पर 15 मिनट लेट पहुंचे थे। जब उन्होंने निमिषा से कहा कि वह उन्हें अंदर जाने की परमीशन दे तो निमिषा ने बताया कि फ्लाइट टेक ऑफ के लिए तैयार है। जब उन्होंने फिर से बोर्डिंग की परमीशन मांगी तो निमिषा ने बताया कि वह पूरी तरह से असमर्थ है और ऐसे में उनकी मदद नहीं कर सकती है। इतनी बातचीत के बीच ही अकरम की पत्नी गुस्से में आ गई हैं और उन्होंने निमिषा के साथ पहले तो गाली-गलौज की इतने पर भी उनका मन नहीं भरा तो तैश में आकर उन्होंने निमिषा को थप्पड़ जड़ दिया। इस घटना के बाद मौके पर आकाशा एयरलाइंस के बाकी स्टाफ भी मौके पर पहुंच गए। इस पूरे घटनाक्रम की सूचना सीआईएसएफ को भी दी गई। इस पूरे घटनाक्रम की जानकारी सरोजिनी नगर पुलिस थाने में की गई है। पुलिस ने फिलहाल मामला दर्ज किया है और आरोपी कपल के खिलाफ जांच की जा रही है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार कपल इस घटना के बाद तुरंत ही दूसरी फ्लाइट बुक करके वहां से निकल गए।

एसटीएफ ने छह लाख रुपये के नकली नोटों के साथ तस्कर को दबोचा

शामली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। एसटीएफ ने छह लाख रुपये के नकली नोटों के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। उसका संबंध पाकिस्तान में बैठे इकबाल काना से जुड़ रहा है। गिरफ्तार आरोपित का भाई हथियार तस्करी के आरोप में पाकिस्तान की जेल में बंद है। एसटीएफ आरोपित से पूछताछ कर रही है। एसटीएफ के अपर पुलिस अधीक्षक ब्रजेश कुमार सिंह ने बताया कि काफी समय से क्षेत्र में नकली नोटों की तस्करी की सूचना मिल रही थी। एक टीम को जांच के लिए लगाया गया था।

गोरखपुर में इंटरनेट मीडिया कंटेंट क्रिएटर से सामूहिक दुष्कर्म

गोरखपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। रेलवे स्टेशन से ऑटो पकड़कर गीडा जा रही इंटरनेट मीडिया स्टार को बाइक व स्कूटी सवार पांच युवकों ने गीडा क्षेत्र में अगवा कर लिया। ऑटो चालक को भगाने के बाद युवती को अमरूद के बाग में उठा ले गए। आरोप है कि बंधक बनाकर युवकों ने दुष्कर्म किया। घटना की सूचना पर सक्रिय हुई पुलिस ने आरोपितों को एकला बांध के पास घेर लिया। एक आरोपित पुलिस पर फायरिंग कर भागने लगा। जवाबी कार्रवाई में उसके दाएं पैर में गोली लग गई। पकड़ने के प्रयास में एक सिपाही भी चोटिल हो गया। सभी आरोपितों को पुलिस ने गिरफ्तार कर, घायल को बीआरडी मेडिकल कालेज में भर्ती कराया है। संतकबीरनगर जिले की रहने वाली युवती अपने प्रेमी के साथ रील बनाती है। गीडा में किराए पर कमरा लेकर वह प्रेमी के साथ रहती है। गुरुवार की सुबह चार बजे ट्रेन से स्टेशन पर उतरने के बाद गीडा जाने के लिए युवती ने ऑटो बुक किया। सुबह चार बजे गीडा क्षेत्र में पीछे से आए बाइक व स्कूटी सवार पांच युवकों ने ओवरटेक करके ऑटो रोक लिया। आरोप है कि चालक को धमकी देकर भगाने के बाद युवती को जबरन अपने साथ लेकर अमरुद के बाग में चले गए। कपड़े से मुंह बांधकर उसके साथ दुष्कर्म किया।

वाराणसी से पीएम मोदी के खिलाफ 2024 में कौन होगा विपक्ष का उम्मीदवार? शिवपाल यादव ने दिया जवाब

लखनऊ, 3 अगस्त (एजेंसियां)। समाजवादी पार्टी के नेता शिवपाल सिंह यादव ने दावा किया कि आगामी लोकसभा चुनाव में सपा उत्तर प्रदेश में कम से कम 50 सीट जीतेगी। यूपी में लोकसभा की कुल 80 सीटें हैं। सपा ने बहुजन समाज पार्टी के साथ गठबंधन कर 2019 का लोकसभा चुनाव लड़ा था और केवल पांच सीट पर जीत दर्ज की थी, जबकि बसपा ने 10 सीट पर जीत हासिल की थी। शिवपाल सिंह यादव ने एक सवाल के जवाब में कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ लोकसभा के आगामी चुनाव में वाराणसी सीट पर इंडिया का (इंडिया) उम्मीदवार चुनाव लड़ेगा। उन्होंने राम मंदिर में

दर्शन करने के सवाल पर कहा कि पहले मंदिर निर्माण पूरा हो जाए तो फिर वह जरूर दर्शन करेंगे। शिवपाल ने पिछले दिनों राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में शामिल हुई सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी (सुभासपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर पर निशाना साधते हुए कहा, "अब राजभर पर से उनके समुदाय का ही भरोसा खत्म हो गया है।" सपा नेता ने कहा, "वह (राजभर) किसी को भी कुछ भी बोल देते हैं। आप सबने सुना ही है कि विधानसभा चुनाव के दौरान प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री के बारे में उन्होंने क्या बोला था।" सुभासपा ने 2022 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव सपा के साथ गठबंधन कर लड़ा था।

आजमगढ़ से चुनाव लड़ने को लेकर शिवपाल ने ये कहा

बुधवार को बलिया के फेफना क्षेत्र में शिवपाल ने कहा, "भारतीय जनता पार्टी के लोग अदालत, संविधान, लोकतंत्र को नहीं मानते, न्यायालय के फैसले का इंतजार कर नहीं सकते।" उन्होंने आरोप लगाया कि भारतीय जनता पार्टी के लोग लोकतंत्र और संविधान विरोधी हैं और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का ज्ञानवापी पर दिया गया बयान पूरी तरह से न्यायालय की अवमानना है। शिवपाल ने उनके आजमगढ़ से लोकसभा का आगामी चुनाव लड़ने को लेकर पूछे जाने पर कहा कि राष्ट्रीय नेतृत्व का जो भी फैसला होगा, वह उन्हें स्वीकार होगा। उन्होंने माफिया से नेता बने मुख्तार अंसारी के बेटे सुभासपा विधायक अब्बास अंसारी के सपा में शामिल होने को लेकर पूछे जाने पर कहा, "अब्बास अंसारी अभी तक तो ओमप्रकाश राजभर के साथ थे। वह जब जेल से निकलेंगे तो बातचीत होगी।

40 लाख की पिस्टल लेकर फरार हुई है माफिया अतीक की पत्नी शाइस्ता, उमेश पाल हत्याकांड में हुआ था इस्तेमाल

प्रयागराज, 3 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में उमेश पाल हत्याकांड में अभी भी खुलासे हो रहे हैं। पुलिस अब तक इस हत्याकांड से जुड़े हुए कई आरोपियों को गिरफ्तार नहीं कर सकी है। हालांकि अब इस मामले में एक बड़ी खबर सामें आ रही है। सूत्रों के अनुसार, उमेश पाल और उनकी सुरक्षा में तैनात दो सरकारी गनरों की हत्या के लिए हुई फायरिंग में यूएसए की बैरेटा पिस्टल से फायरिंग के भी साक्ष्य मिले हैं। फॉरेंसिक साइंस लैब (एफएसएल) लखनऊ की रिपोर्ट से इसकी पुष्टि होने के बाद अब एक बार फिर इस पिस्टल की तलाश शुरू हुई है। पुलिस को शक है कि यह पिस्टल माफिया अतीक अहमद की फरार चल रही पत्नी शाइस्ता परवीन या अशरफ की पत्नी जैनब फातिमा के पास है और इन दोनों में से कोई एक महिला अपने साथ पिस्टल लेकर फरार हुई है। उमेश पाल हत्याकांड की साजिश रचने के दौरान अतीक-अशरफ ने कई विदेशी ऑटोमेटिक पिस्टलों का इंतजाम कराया था। इसमें खास यूएसए की बैरेटा पिस्टल भी है। प्रयागराज पुलिस ने जब अतीक और अशरफ को कस्टडी रिमांड पर लेकर धूमनगंज थाने में पूछताछ की थी तो अतीक ने बैरेटा पिस्टल के बारे में जानकारी दी थी। उसने बताया था कि यह पिस्टल 40 लाख रुपये की है। 15 अप्रैल की रात हुई अतीक-अशरफ की हत्या से पहले शाम को धूमनगंज पुलिस पूछताछ के बाद अतीक-अशरफ को लेकर कसारी मसारी के नाटे चौराहे के पास गई थी। वहां से दोनों की निशानदेही पर कोल्ट पिस्टल बरामद हुई थी जबकि बैरेटा की तलाश में कई जगह जमीन में गड्ढा खोदा गया लेकिन वह नहीं मिली।

उमेश और गनर की हत्या अतीक के इसी पिस्टल से किए जाने की पुष्टि

एफएसएल की रिपोर्ट में उमेश और गनर की हत्या अतीक के इसी कोल्ड पिस्टल की गोली से किए जाने की पुष्टि हुई है। अतीक के चकिया स्थित ऑफिस से पुलिस ने 74 लाख रुपये के साथ दस से अधिक असलहे बरामद किए गए थे लेकिन वहां भी बैरेटा पिस्टल नहीं मिली थी। इसके बाद साफ हुआ कि यूएसए मेड यह पिस्टल अतीक की पत्नी शाइस्ता परवीन के पास है। या फिर अशरफ की पत्नी ज़ैनब के पास हो सकती है हत्याकांड के बाद से शाइस्ता और ज़ैनब फरार है। इसलिए इस पिस्टल के बारे में कोई सुराग नहीं लग सका। अब पुलिस टीमों को लगता है कि यह छोटी पिस्तौल या तो शाइस्ता परवीन के पास है या फिर अशरफ की पत्नी जैनब के पास। इसकी बनावट, साइज ऐसी है कि इसे लेडीज पर्स में आसानी से रखा जा सकता है।

पहचान छिपाकर शादी की तो खैर नहीं

महाराष्ट्र सरकार 'लव जिहाद' को लेकर लाने वाली है कानून

मुंबई, 3 अगस्त (एजेंसियां)। महाराष्ट्र सरकार 'लव जिहाद' को रोकने के लिए कानून लाने की योजना बना रही है, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फड़नवीस ने पूर्व स्पीकर हरिभाऊ बागड़े द्वारा लाए गए ध्यानाकर्षण प्रस्ताव का जवाब देते हुए विधानसभा को बताया। उन्होंने कहा कि गृह विभाग के अधिकारी 'लव जिहाद' को रोकने के लिए कुछ अन्य बीजेपी शासित राज्यों द्वारा लाए गए कानूनों का अध्ययन कर रहे हैं और महाराष्ट्र में भी जल्द ही इसी तर्ज पर एक कानून बनाया जाएगा।

क्या बोले डिप्टी सीएम?

एफपीजे के अनुसार, देवेंद्र फडणवीस ने कहा, "इस बीच, पुलिस को उन मामलों को संभालने के लिए एक मानक संचालन प्रक्रिया तैयार करने के लिए कहा जाएगा जहां महिलाओं को फर्जी पहचान पेश करके धर्म से बाहर शादी करने के लिए धोखा दिया जाता है।"

सभी पुलिस स्टेशन होंगे संवेदनशील

गृह विभाग संभालने वाले फड़णवीस ने कहा, सभी पुलिस स्टेशनों को इस मुद्दे पर संवेदनशील बनाया जाएगा और यदि उचित कार्रवाई नहीं की गई, तो संबंधित अधिकारियों को कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। हम राज्य के पुलिस महानिदेशक से ऐसे मामलों से निपटने के लिए एक एसओपी तैयार करने के लिए कहेंगे। उन्होंने कहा, अगर कोई वयस्क महिला अपने धर्म से बाहर शादी करती है तो कानून तब तक कुछ नहीं कर सकता जब तक कि पुरुष ने उसे अलग पहचान का इस्तेमाल कर धोखा न दिया हो।

बीजेपी नेता ने की ये मांग

बुधवार को बीजेपी के दो एमएलसी प्रवीण दरेकर और प्रसाद लाड ने उत्तर प्रदेश की तर्ज पर महाराष्ट्र में भी 'लव जिहाद' के खिलाफ कानून बनाने की मांग की। महाराष्ट्र विधान परिषद में मुद्दा उठाते हुए दरेकर ने आरोप लगाया कि राज्य के विभिन्न हिस्सों में फर्जी नामों का इस्तेमाल कर हिंदू लड़कियों को धोखा दिया जाता है और फिर उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए मजबूर किया जाता है। बाद में उनके साथ मारपीट की जाती है और छोड़ दिया जाता है। उन्होंने कहा, योगी आदित्यनाथ ने एक साहसिक निर्णय लिया है।

उत्तर प्रदेश सरकार अवैध धर्मांतरण पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक कानून लेकर आई है। बीजेपी नेता ने कहा, उत्तर प्रदेश की तर्ज पर महाराष्ट्र में भी लव जिहाद पर कानून लाया जाना चाहिए। लाड ने भी ऐसी ही मांग की। 'लव जिहाद' एक ऐसा शब्द है जिसका इस्तेमाल अक्सर दक्षिणपंथी कार्यकर्ता मुस्लिम पुरुषों द्वारा हिंदू महिलाओं को शादी के जरिए धर्म परिवर्तन के लिए लुभाने की साजिश का आरोप लगाने के लिए करते हैं।

'जबरन शारीरिक संबंध बनाने पर महिला कर सकती है विरोध', कोर्ट ने कहा- शरीर पर कोई निशान नहीं, कैसे मानें जबरदस्ती की गई

भुवनेश्वर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। ओडिशा हाईकोर्ट ने दुष्कर्म के एक मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि अगर कोई वस्यस्क महिला शारीरिक संबंध बनाने का विरोध नहीं करती है, तो इसे जबरदस्ती नहीं माना जाएगा। कोर्ट ने आरोपी को रिहा करते हुए कहा कि महिला ऐसे कृत्यों का विरोध कर सकती है और अगर ऐसा नहीं करती है तो इसे उसकी सहमति माना जाएगा। जस्टिस संगम कुमार साहू ने मामले की सुनवाई करते हुए कहा कि अगर महिला शारीरिक संबंध बनाने के लिए पर्याप्त विरोध नहीं करती है तो कोर्ट इसे जबरदस्ती नहीं मानता और न ही ये कि सब उसकी मर्जी के बिना किया गया।

कोर्ट ने कहा, घटना को तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया

कोर्ट ने इस बात पर भी जोर दिया कि अगर पीड़िता की मर्जी नहीं थी और आरोपी का विरोध किया गया था तो दोनों में से किसी के शरीर पर कोई जख्म होना चाहिए था, जो ये साबित करता कि जोर-जबरदस्ती से शारीरिक रिश्ता बनाया गया। कोर्ट का मानना है कि महिला की तरफ से कोई विरोध नहीं किया गया। कोर्ट ने आगे कहा कि सबूतों और रिकॉर्ड को देखते हुए ऐसा लगता है कि खुद को बचाने के लिए पाड़िता ने घटना को तोड़-मरोड़ कर पेश किया ताकि ये लगे कि याचिकाकर्ता ने उसके साथ दुष्कर्म किया।

2014 का है मामला

महिला का कहना है कि साल 2014 में जब वह और आरोपी एक जंगल से गुजर रहे थे तो उसे शारीरिक संबंध बनाने के लिए मजबूर किया गया। वह घर नहीं पहुंची तो उसके पति ने उसकी तलाश शुरू की और आरोपी के साथ इस हालत में देख लिया। जब महिला ने अपने पति को देखा तो उसने आरोपी को धक्का मारकर दूर कर दिया और उसे वहां से जाने को कहा। घटना को लेकर एफआईआर भी दर्ज कराई गई और पुलिस की जांच पूरी होने के बाद केस ट्रायल कोर्ट पहुंचा, जहां कोर्ट ने आईपीसी के तहत आरोपी को दुष्कर्म के लिए जिम्मेदार माना। इसके बाद आरोपी ने हाईकोर्ट में अपील की, कोर्ट ने इस घटना के अगले दिन किए गए मेडिकल एग्जामिनेशन में पाया कि महिला के शरीर पर कोई जख्म या खरोंच का निशान नहीं है।

जोमैटो ने भोपाल की युवती की लगाई क्लास

'प्लीज अंकिता अपने एक्स बॉयफ्रेंड को खाना भेजना बंद करो'

भोपाल, 3 अगस्त (एजेंसियां)। मध्यप्रदेश के भोपाल की एक युवती ने अपने एक्स बॉयफ्रेंड को परेशान करने का अनोखा तरीका खोजा। लेकिन उसके इस तरीके से ऑनलाइन फूड डिलीवरी करने वाली कंपनी जोमैटो परेशान हो गई। आखिरकार कंपनी को ट्वीट कर भोपाल की अंकिता से बोलना पड़ा कि "प्लीज अपने एक्स बॉयफ्रेंड को कैश ऑन डिलीवरी खाना भेजना बंद कीजिए। क्योंकि वह इसे बार-बार लेने से मना कर रहा है।" कैश ऑन डिलीवरी का मतलब जब ऑर्डर डिलीवरी होता है तो रिसीव करने वाले व्यक्ति को ही उसका भुगतान करना होता है। लड़की से जोमैटो हुआ परेशानः भोपाल की अंकिता ने ऐसा एक बार नहीं बल्कि तीन तीन बार किया। अंकिता हर बार जोमैटो से खाने का आर्डर करती और जब यह खाना उसके एक्स बॉयफ्रेंड के घर डिलीवर होता तो वैसे लेने से मना कर देता। गर्लफ्रेंड और एक्स बॉयफ्रेंड के झगड़े के बीच ऑनलाइन फूड डिलीवरी कंपनी जोमैटो परेशान हो गई। आखिरकार उसे सारे मैन ग्रुप में लड़की का नाम जाहिर करते हुए लिखना पड़ा। "अंकिता प्लीज अपने एक्स बॉयफ्रेंड को कैश ऑन डिलीवरी खाना भेजना बंद कीजिए क्योंकि वह इसे बार-बार लेने से मना कर रहा है।" सोशल मीडिया पर वायरल हुआ जोमैटो का ट्वीटः जोमैटो द्वारा किए गए इस ट्वीट के बाद यह सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। जोमैटो के इस ट्वीट पर यूजर्स के कमेंट की बाढ़ आ गई। इस ट्वीट को एक हजार से ज्यादा बाहर रिट्वीट किया गया और 10,000 से ज्यादा लोगों ने इसे लाइक किया।

लोगों ने खूब रिप्लाई किए। किसी ने इसे जोमैटो का स्टंट बताया तो कई लोगों ने मजेदार कमेंट भी किए। एक यूजर ने मजाकिया अंदाज में लिख कि "अपने एक्स को गिफ्ट भेजने का मस्त प्लान है रे बाबा।" एक ने कमेंट किया कि "अंकिता के एक्स बॉयफ्रेंड को ऐसा लग रहा होगा जैसे वह भूख और दिल टूटने के अनंत चक्र में फस गया है। ऐसा कैश ऑन डिलीवरी काजल जो कभी खत्म नहीं होता है।"

मवेशी चराने गए शख्स पर बाघ ने किया जानलेवा हमला, लोगों का शोर सुनकर भागा टाइगर घायल अस्पताल में भर्ती

सिवनी, 3 अगस्त (एजेंसियां)। मध्यप्रदेश के सिवनी जिले में बाघ आए दिन लोगों को अपना शिकार बना रहा है। वहीं, कुरई विकास खंड के पिपरवानी गांव के एक शख्स पर परासपानी में बाघ ने हमला कर दिया, जिससे व्यक्ति बुरी तरह घायल हो गया। स्थानीय लोगों के शोर को सुनकर बाघ भाग गया। बचाने आए लोगों ने घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाया। जानकारी के मुताबिक, कुरई क्षेत्र के पिपरवानी का रहने वाला कृष्ण गोपाल गाय चराता है। पिपरवानी और परासपानी के बीच मवेशियों को चराते समय बाघ ने उस पर हमला दिया। इसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया। चिल्लाने की आवाज सुनकर आसपास मौजूद लोग उसे बचाने के लिए दौड़े, जिसके बाद बाघ भाग गया।

गुरुग्राम की मस्जिद में मारे गए इमाम के पिता ने ओवैसी से फोन पर की बात, कहा- 'दाढ़ी वालों को बनाते हैं निशाना

गुरुग्राम, 3 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा के नूंह में हुई हिंसा के ठीक बाद दिल्ली से सटे गुरुग्राम में भी हिंसा भड़क गई थी। यहां कुछ लोगों ने एक मस्जिद पर हमला कर दिया और उसमें आग भी लगा दी। इस दौरान मस्जिद में मौजूद 22 साल के नायब इमाम साद की हत्या कर दी गई। अस्पताल पहुंचने तक इमाम ने दम तोड़ दिया। जिसके बाद इमाम के परिवार ने कहा कि उनका इसमें कोई कसूर नहीं था, उसके बावजूद दंगाइयों ने उन्हें मार दिया। अब एआईएमआईएम के नेता असदुद्दीन ओवैसी ने इमाम के परिवार से फोन पर बातचीत की। जिसका वीडियो खुद ओवैसी ने रीट्वीट किया है।

ट्विटर पर पोस्ट हुई ओवैसी की बातचीत

दरअसल असदुद्दीन ओवैसी के साथ बात करते हुए इमाम के परिवार की कुछ लोगों ने रिकॉर्डिंग कर ली थी, जिसे ट्विटर पर पोस्ट किया गया। इसमें बताया गया कि कैसे ओवैसी ने परिवार को मदद का आश्वासन दिया है। ओवैसी ने खुद ऐसे ही एक वीडियो पोस्ट को रीट्वीट किया है।

एआईएमआईएम सांसद ओवैसी से बातचीत के दौरान नायब इमाम साद के पिता मुश्ताक ने कहा, हम लोगों को निशाना बनाया जाता है, मौलवियों को निशाना बनाया जाता है, दाढ़ी वालों को निशाना बनाया जाता है, न रेहड़ी लगाने देता है, न पटरी लगाने देता है। ये कहां का इंसाफ है? इस पर औवैसी कहते हैं कि आप बिल्कुल सही बोल रहे हैं। इसके बाद मृतक इमाम के पिता ने कहा कि हम कुर्ता पायजामा नहीं पहनेंगे तो क्या अंग्रेजों का लिबास पहनें? बातचीत के आखिर में ओवैसी हिंसा में मारे गए इमाम के पिता से कहते हैं कि हम आपसे वहां आकर मिलेंगे। आप हिम्मत से काम लीजिए, हम लड़ेंगे और बोलेंगे। ओवैसी के इस वीडियो को उनके कुछ समर्थकों ने सोशल मीडिया पर शेयर किया है।

हिंसा में पांच लोगों की मौत

हरियाणा के नूंह से एक शोभा यात्रा पर पथराव के बाद शुरू हुई हिंसा के बाद आसपास के इलाकों में भी जमकर बवाल हुआ। इस पूरी हिंसा में अब तक पांच लोगों की मौत हुई है, वहीं कई लोग घायल भी हुए हैं। इस दौरान करीब 80 से ज्यादा वाहनों को आग लगा दी गई और जमकर लूटपाट हुई। इस मामले में अब तक 42 एफआईआर दर्ज की गई हैं और करीब 137 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

'जूता उठाकर मारूंगी': मेट्रो में दो महिलाओं के बीच जमकर तू-तू मैं-मैं, वीडियो हुआ वायरल

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। दिल्ली मेट्रो का एक और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। इस वीडियो में एक महिला कोच के अंदर दो महिलाएं आपस में बहस कर रही हैं। इससे पहले भी कई वीडियो वायरल हुए हैं। पहली महिला अपने पास आकर बैठी दूसरी महिला पर भड़क जाती है। वायरल वीडियो की शुरुआत में पहली महिला कहती है कि हां।। पागल हूं मै, पागल हूं। दूसरी महिला कहती है दिमाग मत चाटिए। इस पर पलवार करते हुए पहली महिला कहती है कि पहले तू चुप हो। दूसरी महिला कहती है मैं चुप नहीं होने वाली। इसके बाद पहली महिला उठकर सामने वाली सीट पर बैठ जाती है। लेकिन फिर भी दोनों के बीच बहस चलती रहती है। पहली महिला फिर कहती है कि भौंक भौंक, पहले तू बोली, मैं नहीं बोली। दूसरी महिला कहती है कि मैंने आपसे थोड़ा सा खिसकने को कहा था।

पहली महिला शांत नहीं होती है और कहती है कि तेरी जुबान कैंची की तरह चलती रहती है। दूसरी भड़की महिला तुरंत जवाब देते हुए कहती है कि जूता उठाकर मारूंगी। बदतमीज कहीं की। दोनों की बहस जारी रहती है। इतने में दूसरी महिला के रिश्तेदार भी बीच में आते हैं और पहली महिला को चुप होने के लिए कहते हैं। लेकिन वह फिर भी चुप नहीं होती है। यह पूरी घटना सामने बैठी एक महिला ने अपने फोन में रिकॉर्ड कर ली। घटना मेट्रो ट्रेन के अंदर महिला कोच की है।

निगम की कचरा गाड़ी पर रील बनाना महंगा पड़ा यूट्यूबर युवक युवती के खिलाफ थाने में शिकायत

इंदौर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। कामेडी रील के लिए नगर निगम के कचरा वाहन का उपयोग दो यूट्यूबर युवक युवती को महंगा पड़ गया। नगर निगम अफसरों ने दोनों की शिकायत विजय नगर थाने में की है। पुलिस ने भी प्रकरण दर्ज करने की तैयारी कर ली है। इंदौर के दो यूट्यबर युवक युवती के खिलाफ विजय नगर पुलिस थाना में शिकायत पहुंची है। जिसमे नगर निगम अफसरों ने कहा कि रील बनाने वाले वीर शर्मा और पारुल अहिरवार ने कचरा वाहन के हेल्पर से कहा था कि वे स्वच्छता का सर्वे कर रहे हैं और उन्हें कचरा वाहन का फोटो लेना है, लेकिन बाद में उन्होंने रील बना ली। इसी जानकारी हेल्पर को नहीं थी। दोनो युवक युवती ने झूठ बोलकर सरकारी वाहन का उपयोग रील बनाने के लिए किया।

'भगवान चाहता था, इसलिए वायरल हो गया वीडियो

वरना किसी को विश्वास न होता, पीड़िता के पति ने बताया घटना के बाद पूरी तरह बदल गई जिंदगी

इंफाल, 3 अगस्त (एजेंसियां)। मणिपुर में निर्वस्त्र घुमाए जाने की घटना की पीड़िता के पति और कारगिल युद्ध में देश के लिए लड़ाई लड़ने वाले पूर्व सैनिक ने बताया कि इस घटना के बाद उनके परिवार की जिंदगी पूरी तरह से बदल गई है। उनका कहना है कि भगवान सबके सामने सच्चाई लाना चाहते थे इसीलिए यह वीडियो वायरल हुआ। पहले किसी ने मेरी बात पर विश्वास नहीं किया और पुलिस या सरकार के किसी अधिकारी का एक कॉल तक नहीं आया। पीड़िता के पति ने कहा कि बहुत पहले ही कार्रवाई की जानी चाहिए थी, लेकिन जब तक वीडियो सामने नहीं आया किसी ने हम पर भरोसा नहीं किया। पुलिस या किसी अधिकारी ने हमें कॉल तक नहीं किया। उन्होंने कंगपोकपी जिले के सायकुल पुलिस स्टेशन में 18 मई को दर्ज जीरो एफआईआर के आधार पर उन्होंने यह बता बताई

घटना के बाद बदल गई जिंदगी

पीड़िता के पति ने 30 साल तक भारतीय सेना में रहकर सेवा दी है। 18 साल की उम्र में वह असम रेजीमेंट में शामिल हुए और साल 2000 में रिटायर हो गए। अपने रिटायमेंट के समय वह सुबेदार के पद पर थे। आर्मी में रहते हुए कई ऑपरेशनों का हिस्सा रहे और उनके घर में रखे मेडल इस बात की गवाही हैं। उनका कहना है कि जब से यह वीडियो वायरल हुआ है उनकी और उनके परिवार की जिंदगी पूरी तरह से बदल गई है। पूर्व सैनिक के पास पुराने अधिकारियों और सेना में उनके साथ काम कर चुके लोगों के फोन कॉल आ रहे हैं।

पीड़िताओं को सेफजोन में रखा गया

3 मई को मणिपुर में हिंसा भड़की थी और महिलाओं के साथ हुई बर्बरता की यह घटना 4 मई की है। हिंसक घटनाओं के चलते पीड़ित महिलाएं रिलीफ कैंपों में रह रही थीं, लेकिन जब घटना का वीडियो सामने आया तो उन्हें सेफ जोन में भेज दिया गया। ये सेफजोन कहां पर हैं, इसकी जानकारी उनके परिवार वालों को भी नहीं है। घटना का वीडियो 19 जुलाई को सामने आया था, जिसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, सुप्रीम कोर्ट, सत्ता पक्ष और विपक्ष से लेकर आम आदमी तक हर किसी ने इसकी निंदा की है।

जंगली हाथियों ने मचाया तांडव रहवासियों के घर तोड़े और अनाज भी खाए, दहशत में लोग

सीधी, 3 अगस्त (एजेंसियां)। मध्यप्रदेश के संजय टाइगर रिजर्व के जंगल में एक बार फिर हाथियों का झुंड पहुंच गया है। जहां पोड़ी रेंज के मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ बॉर्डर पर हाथियों ने अपना ठिकाना बनाया हुआ हैं। बताया जा रहा है कि बुधवार की रात दो बजे तिनगी गांव के हाथियों ने घुसकर ताड़व मचाया। इस दौरान गांव के एक आदिवासी के घर को अपना निशाना बनाया। घटना में किसी भी तरह की जनहानि नहीं हुई है, लेकिन हाथियों के झुंड ने आदिवासी का घर का तोड़ दिया और खेतों में अनाज को नुकसान पहुंचाया है। दरअसल, यह पूरा मामला बुधवार रात गाजर क्षेत्र के तिनगी गांव का है। जहां रात के करीब दो बजे 12 की संख्या में हाथियों का झुंड पहुंच गया। जिसने देर रात पूरे गांव में तांडव मचाया और राधा सिंह के घर को अपना निशाना बनाया।

फर्जी कागजों पर पीएनबी से 60.29 करोड़ की धोखाधड़ी

चंडीगढ़, 3 अगस्त (एजेंसियां)। चंडीगढ़ सेक्टर-17 स्थित पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) को 60.29 करोड़ का चूना लगाने के मामले में सीबीआई ने मुंबई की फार्मा कंपनी अंकुर ड्रग्स एंड फार्मा लिमिटेड के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज किया है। कंपनी पर फर्जी दस्तावेजों के आधार पर लोन लेकर धोखाधड़ी करने का आरोप है। सेक्टर-17 स्थित पंजाब नेशनल बैंक के मुख्य प्रबंधक ने नवंबर 2022 को इस संबंध में सीबीआई को शिकायत भेजी थी। शिकायत में बताया था कि 27 फरवरी 2009 को अंकुर ड्रग्स एंड फार्मा लिमिटेड के एमडी और डायरेक्टर्स ने बद्दी स्थित अपने यूनिट के विस्तार के लिए बैंक में 50 करोड़ रुपये के शॉर्ट टर्म लोन और 30 करोड़ रुपये के फ्रैश टर्म लोन के लिए आवेदन किया था। कुल 80 करोड़ रुपये के लोन के आवेदन पर बैंक ने कंपनी के प्रोफाइल को देखते हुए 61.90 करोड़ रुपये का लोन मंजूर कर दिया। बाद में कंपनी ने लोन की कुछ रकम अदा की लेकिन करीब 60.29 करोड़ रुपये नहीं जमा कराए। बैंक का आरोप है कि जब कंपनी ने पैसे नहीं जमा कराए तो दस्तावेजों की जांच की गई। इसमें पता चला कि लोन के आवेदन के लिए लगाए गए दस्तावेज जाली हैं। बैंक का आरोप है कि कंपनी ने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर उनसे करोड़ों का लोन लिया, जिसे बाद में चुकाया नहीं। आरोपों के मुताबिक, कंपनी ने बैंक से लोन के लिए फर्जी बैलेंस शीट प्रस्तुत किया थी। लोन के पैसों को कंपनी ने दूसरी कंपनी में ट्रांसफर कर हुए करीब 60.29 करोड़ रुपये की धोखाधड़ी को अंजाम दिया सीबीआई ने बैंक की शिकायत पर मुंबई की अंकुर ड्रग्स एंड फार्मा लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर पी। जैन, डायरेक्टर गिरीराज विजयवर्गीय, दिलीप शिंदे, रमेश बालाराम बाथम और अज्ञात सरकारी कर्मचारियों को आरोपी बनाते हुए मामले की जांच शुरू कर दी है।

देहात पुलिस के हत्थे चढ़े चार भगोड़े गैंगस्टर तीन पिस्टल और 13 कारतूस बरामद

जालंधर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। जालंधर देहात की थाना आदमपुर और क्राइम ब्रांच पुलिस ने 4 खतरनाक भगौड़े गैंगस्टरों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से हथियार भी बरामद कर लिए। एसएसपी मुखविंदर सिंह भुल्लर ने बताया कि देहात पुलिस ने एसपी इन्वेस्टिगेशन मनप्रीत सिंह भुल्लर की देखरेख में थाना आदमपुर और इंस्पेक्टर पुष्प बाली क्राइम ब्रांच जांलधर देहात के सांझे ऑप्रेशन दौरान खतरनाक भगौड़े 4 गैंगस्टर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 3 पिस्टल ।32 बोर, 13 कारतूस बरामद किए हैं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि कुलवंत सिंह निवासी पाषटा, अमनप्रीत सिंह निवासी रेहाना जट्टां, सौरव उर्फ गौरी निवासी रेहाना जट्टां सहित एक अन्य आरोपी को गिरफ्तार किया है। एसएसपी मुखविंदर सिंह भुल्लर ने बताया कि 30 जुलाई को महावीर सिंह उर्फ कोका निवासी डमूंडा ने पुलिस को दिए बयानों में कहा था कि उसके ऊपर कुलवंत सिंह निवासी गांव पाषटा जो कि भगौड़ा है ने अपने साथियों के साथ मिलकर जान से मारने की नीयत से गोलियां चलाई थी। इस दौरान आरोपियों ने तेजधार हथियार से हमला भी किया था। जिस पर पुलिस ने महावीर के बयानों के पर धारा 307, 323, 324, 34 और असला एक्ट थाना आदमपुर में दर्ज किया गया।

एसपी मनप्रीत सिंह ढिल्लों ने बताया कि एसआई मनजीत सिंह और देहात क्राइम ब्रांच के इंस्पेक्टर पुष्प बाली गुप्त सूचना मिलने पर पुल नहर वाला कालरा पर मौजूद थे। जहां 3 नौजवान सिल्वर रंग की बाइक पर आते हुए दिखाई दिए। जो पुलिस पार्टी को देखते हुए पीछे की ओर मुड़ने लगे। इस दौरान बाइक फिसलने के कारण तीनों व्यक्ति गिर गए। इस दौरान एक व्यक्ति की दाहिनी टांग पर चोट भी लगी। उक्त व्यक्तियों की जब तलाशी ली गई तो तीनों के कब्जे से 3 पिस्टल ।32 बोर बरामद हुई। आरोपियों ने पूछताछ के दौरान कबूला कि उन्होंने ही 30 जुलाई को गांव पदाना में गोलियां चलाई थी। इस दौरान उन्होंने पीड़ित पर दातर से हमला भी किया था। इस दौरान उन्होंने बताया कि जसप्रीत सिंह जस्सा निवासी रेहाना जट्टां और चरणजोत सिंह जोत निवासी मलकपुर थाना रावलपिंडी जिला कपूरथला के साथ मिलकर महावीर की रेकी की थी। पुलिस ने जसप्रीत सिंह जस्से को भी गिरफ्तार कर लिया है।

पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि हथियार उन्होंने मनप्रीत सिंह उर्फ मप्पी निवासी गांव शेखपुर थाना चब्बेवाल जिला होशियापुर से डेढ़ लाख रुपये में खरीदा था। इस असले से आरोपियों ने अन्य वारदातों को अंजाम देना था। जांच दौरान पता चला है कि तीनों आरोपियों के खिलाफ अलग अलग थानों में 13 मामले दर्ज है।

जबेरा विधायक बोले- एक्ट्रेस के गालों की तरह चिकनी सड़कें बनवाएंगे, कटरीना अब पुरानी हो गई

दमोह, 3 अगस्त (एजेंसियां)। दमोह जिले के जबेरा विधानसभा के भाजपा विधायक धर्मेंद्र सिंह लोधी का एक वीडियो वायरल हुआ है, जिसमें वह सड़कों की तुलना हेमा मालिनी के गालों और कटरीना कैफ से करते हुए दिखाई दे रहे हैं। विधायक का वीडियो जबेरा विधानसभा में विकास यात्रा के दौरान कलेहरा में सड़क निर्माण के भूमिपूजन और लोकार्पण कार्यक्रम का बताया जा रहा है। वीडियो में जबेरा विधायक कह रहे हैं कि लालू से पूछा की तुम्हारी यहां की रोड कैसी हैं, तो उन्होंने कहा कि गड्ढे ही गड्ढे हैं। आप हमें मुख्यमंत्री बनाओ तो हम सड़कें हेमा मालिनी के गाल की तरह चिकनी कर देंगे। हेमामालनी का समय तो चला गया है। ये अच्छी चिकनी रोड बनेगी अभी कौन सी हीरोइन अच्छी चल रही है, तो किसी ने कटरीना कैफ का नाम ले दिया, जिस पर विधायक धर्मेंद्र सिंह ने कहा कटरीना कैफ भी पुरानी हो गई है।

कहने का मतलब है कि यह रोड बहुत अच्छा बनेगा। आप सोच भी नहीं सकते। इसके बाद ठेकेदार को बुलाकर वर्क आर्डर जारी होने और रोड का काम जल्दी लगाने की बात कही। कलेरा खेड़ा पहुंचे विधायक ने 7.48 करोड़ों रुपये की लागत से माड़ानखेड़ा-ढोड़ा से कलेहरा पहुंच मार्ग का सड़क का लोकार्पण किया था। ग्राम पंचायत कलेहरा खेड़ा में 13.78 लाख के भूमिपूजन एवं लोकार्पण ग्राम पंचायत भाट खमरिया में 26.51 लाख रुपये के भूमि पूजन एवं लोकार्पण किए थे।

स्वतंत्र वार्ता

शुक्रवार, 4 अगस्त- 2023

सुप्रीम कोर्ट की हिदायत

हरियाणा के नूंह में एक धार्मिक जुलूस के दौरान हुई हिंसा और आगजनी की प्रतिक्रिया में कुछ संगठनों ने विरोध प्रदर्शन करने की घोषणा की थी। इस मामले में दाखिल याचिका पर बुधवार को सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने विरोध प्रदर्शनों पर रोक लगाने से साफ इंकार कर दिया, लेकिन इस मसले पर केंद्र और संबंधित राज्य सरकारों को सख्त हिदायत जरूर दी। अदालत ने उम्मीद जताई कि पुलिस अधिकारी और राज्य सरकारें यह सुनिश्चित करेंगी कि किसी भी समुदाय के खिलाफ नफरत भरे भाषण कतई नहीं होना चाहिए। कोई हिंसा या संपत्तियों को नुकसान पहुंचाने का प्रयास करे तो उसे रोकने के लिए पर्याप्त पुलिस बल तैनात किया जाना चाहिए। किसी भी घटना से अगर हिंसा या अराजकता फैलने की आशंका हो तो सरकारों को तत्काल सक्रिय होकर हालात पर काबू पाने के लिए हर संभव कार्रवाई करनी चाहिए। लेकिन अफसोसजनक है कि ऐसा सुनिश्चित करने के लिए अक्सर सरकारी की बजाय शीर्ष अदालत को सख्त रुख अख्तियार करना पड़ता है। बता दें कि किसी भी लोकतांत्रिक देश में विरोध जाहिर करने की छूट सबको है लेकिन उसका तरीका बेहद शालीन और अनुशासित होना चाहिए। उसमें यदि हिंसा के और भड़कने की आशंका हो तब उसे समय पर रोकने और नियंत्रित करने की जिम्मेदारी सरकार की ही होती है। यह कहने में कोई संकोच नहीं कि सुप्रीम कोर्ट ने हालात की संवेदनशीलता के मद्देनजर ही सरकारों को उनकी जिम्मेदारी की याद दिलाई है। अगर सरकार इस दायित्व को पहले ही पालन कर लिया होता तो शायद नूंह की अप्रिय घटनाओं से बचा जा सकता था। पिछले साल अक्तूबर और इस वर्ष अप्रैल में भी सुप्रीम कोर्ट साफ शब्दों में चेतावनी दे चुका है कि नफरत फैलाने वाले भाषणों के मामले में स्वतः संज्ञान लेकर प्राथमिकी दर्ज करना होगा, भले ही ऐसे भाषणों के खिलाफ किसी ने कोई शिकायत दर्ज कराई हो या नहीं। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया था कि नफरत भरे भाषण गंभीर अपराध हैं, जो देश के धर्मनिरपेक्ष सामाजिक ताने-बाने के साथ-साथ हमारे गणतंत्र के दिल और लोगों की गरिमा को प्रभावित करते हैं। हालांकि ये ऐसी बुनियादी बातें हैं, जिसका ध्यान सभी लोगों और खासतौर पर सरकारों को हर वक्त रखना चाहिए। सब जानते हैं कि धर्म या समुदाय के हित का झंडा उठा कर कई बार लोग अपने हित के लिए ऐसे सार्वजनिक रूप से बातें कह जाते हैं जिसका परिणाम सिर्फ भावनाएं भडकाने के ही काम में आती हैं। माहौल इतना तनावपूर्ण हो जाता है कि उसके बाद छोटी-सी चिंगारी ही लगाने की जरूरत होती है। फिर हिंसा भडकते देर नहीं लगती। अगर पर्याप्त पुलिस बल और खुफिया तंत्र के साथ चौकसी रखी जाए तो जाहिर है अराजक गतिविधियों, नफरत फैलाने की कोशिश करने वाले असामाजिक तत्त्वों को बिना देरी किए पकडा जा सकता है। अगर समय रहते ये लोग पकड लिए जाएं तो जाहिर है हिंसा की कोई गुंजाइश ही नहीं बचती। कई बार यह भी देखा गया है कि खुफिया सूचनाओं के बावजूद सरकारें अपेक्षित स्तर तक गंभीर नहीं होती हैं और जिसका नतीजा बेहद त्रासद होता है। जबकि सुप्रीम कोर्ट यहां तक कह चुका है कि नफरत भरे भाषण इसलिए भी नहीं रुक रहे हैं, क्योंकि सरकार कमजोर और शक्तिहीन हो गई लगती हैं! स्वभाविक है किसी भी सरकार को अपने बारे में इस तरह की टिप्पणी अच्छी नहीं लगेगी। लेकिन आए दिन धर्म के नाम पर होने वाली सभाओं या जुलूसों आदि में खुलेआम भावनाएं भड़काने वाली बातें कही जाती हैं, तो उसके नतीजे में कई बार हिंसा फैल ही जाती है। ताज्जुब है कि पुलिस भी तब तक इसकी अनदेखी करती है, जब तक मामला तूल न पकड़ ले या हाथ से न निकल जाए। व्यवस्था तो ऐसी बनाई गई है कि अदालती निर्देश और कानून लागू करने को लेकर सरकारें खुद सक्रिय हो जाएं, लेकिन जब वे सुस्त रहेंगी तो कोर्ट को सख्त हिदायत देना ही पडेगा।

विपक्ष को जोड़ने में केजरीवाल क्यों रहे असफल

दिल्ली सेवा बिल के मुद्दे पर केंद्र सरकार को समर्थन देने का फैसला कर चुकी जगन मोहन रेड्डी की वाईएसआर कांग्रेस के फैसले पर आम आदमी पार्टी तो सवाल खड़ा कर ही रही है,वहीं कांग्रेस को भी जगन का ये फैसला नागवार गुजर रहा है। बीजू जनता दल को लेकर यह आशंका पहले से ही थी कि वे अध्यादेश के पक्ष में खड़े होंगे लेकिन जगन मोहन रेड्डी ऐसा करेंगे, इस पर कांग्रेस के रणनीतिकार भरोसा नहीं कर पा रहे हैं। जगनमोहन रेड्डी की पार्टी की तरफ से जब यह संकेत दिया गया कि अध्यादेश के मसले पर उनकी पार्टी सरकार के साथ खड़ी होगी तो आम आदमी पार्टी के राघव चड्ढा ने जुबानी तीर चलाये और कहा कि , 'दिल्लीवाले सीएम अरविंद केजरीवाल से बहुत प्यार करते हैं, इसलिए ही 10 साल से उन्हें हर बार वोट देते आए हैं। ये राष्ट्र विरोधी बिल है, जो इस बिल के समर्थन करेंगे, देश उन्हें राष्ट्र विरोधी के नाम से याद रखेगा। जो बिल के खिलाफ हैं वो देशभक्त कहलाएंगे। 'लेकिन राघव के देशभक्ति का यह पाठ न तो वाईएसआर कांग्रेस को समझ आया और न ही बीजू जनता दल को और दोनों दलों ने सरकार के साथ खड़ा होना तय किया। इस बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद पी चिदंबरम ने मोर्चा संभाला है। पूर्व वित्त मंत्री ने बीजद और वाईएसआर कांग्रेस से पूछा है कि उन्हें इस बिल में क्या अच्छा लगा? इतना ही नहीं, चिदंबरम ने दोनों पार्टियों को टैग करके एक ट्वीट में एक के बाद एक कई सवाल पूछे हैं।

चिदंबरम कहते हैं कि मैं दिल्ली सेवा प्राधिकरण विधेयक का समर्थन करने वाले भाजपा सांसदों को समझ सकता हूं लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि बीजद और वाईएसआरसीपी पार्टी को को विधेयक में क्या चीज अच्छी लगी? क्या दोनों दलों (ओडिशा और आंध्र प्रदेश में रूलिंग पार्टी) को 3 सदस्यीय प्राधिकरण में यह ठीक लग रहा है जहां मुख्यमंत्री केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त दो अधिकारियों के मुकाबले सिर्फ एक होगा? क्या उन्हें उस प्रावधान में अच्छाई दिख रही है जहां दो अधिकारी फोरम का गठन कर सकते हैं और बैठक आयोजित कर सकते हैं और मुख्यमंत्री की भागीदारी के बिना निर्णय ले सकते हैं? चिदंबरम ने यह भी कहा है कि, क्या उन्हें उस प्रावधान में अच्छाई दिख रही है जहां दो अधिकारी मुख्यमंत्री को खारिज कर सकते हैं?

क्या उन्हें उस प्रावधान में अच्छाई दिख रही है जहां लेफ्टिनेंट गवर्नर प्राधिकरण के सर्वसम्मत निर्णय को भी खारिज कर सकते हैं? इतना ही नहीं ,पूर्व वित्त मंत्री ने सरकार की मंशा पर सवाल खड़ा करते हुए कहा कि क्या उन्हें उस प्रावधान में अच्छाई दिख रही है जो केंद्र सरकार को दिल्ली सरकार के मंत्रियों को छोड़कर दिल्ली सरकार में काम करने वाले अधिकारियों की शक्तियों और कर्तव्यों को परिभाषित करने का अधिकार देता है? क्या दोनों पार्टियों को यह एहसास हो गया है कि यदि विधेयक पारित हो गया तो अधिकारी मालिक होंगे और मंत्री अधीनस्थ होंगे? बड़ी बात ये है कि विपक्ष नीत पूरा I.N.D.I.A इस मसले पर केजरीवाल की आम आदमी पार्टी के साथ खड़ी नजर आ रही है और दावा है कि राज्यसभा में सरकार का अध्यादेश गिर जायेगा।

लेकिन बीजद और वाईएसआर कांग्रेस के इस बदले हुए रूख से इंडिया के रणनीतिकारों को इस मसले पर सरकार को घेरने की रणनीति पर बट्टा लगता दिख रहा है हालाकि इस मसले पर कांटे की टक्कर होने वाली है। दरअसल पूरी बात को समझने के लिए सबसे पहले समझना ये चाहिए कि जो लॉन्ग टर्म 2024 के चुनाव हैं, उस पर इसका असर होने वाला है।

डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल का सपना था 'हिन्दू राष्ट्र'

सुरेश गांधी

काशी प्रसाद कई भाषाओं के जानकार थे। वह संस्कृत, हिंदी, इंग्लिश, चीनी, फ्रेंच, जर्मन और बांग्ला भाषा पर पूरी पकड़ रखते थे। लेकिन वे हिंदी और अंग्रेजी में ही लिखते थे। स्वर्गीय राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद के सहयोग से उन्होंने इतिहास परिषद् की स्थापना की। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना से पहले ही जायसवाल प्राचीन भारत की 'हिंदूवादी' व्याख्या कर रहे थे। उनकी बहुचर्चित हिन्दू पॉलिटी राष्ट्रवादियों के आन्दोलन के लिए गीता समझी जाती थी। उनकी विद्वता से प्रभावित होकर अंग्रेजी हुकूमत के समय ही पटना विश्वविद्यालय ने 1936 में उन्हें पीएचडी की मानक उपाधि प्रदान की थी। कहते है भारतीय इतिहास में 1905 से आगे का काल उग्रपंथी राजनीति का काल था। बंगाल और महाराष्ट्र में क्रांतिकारी संस्थाओं का जाल बिछा हुआ था। इस आन्दोलन पर हिन्दू पुनरुत्थानवाद का रंग चढ़ा हुआ था। उसी दौरान बंगाल की सरकार ने उन्हें कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर विभाग में अपने पद से त्यागपत्र देने को बाध्य कर दिया था। लेकिन गर्व है प्राचीन भारतीय राज्यव्यवस्था पर रची गई महानतम कृति हिंदू पालीटी के लिए भारत-विद्या (इंडोलाजी) स्वर्गीय काशी प्रसाद जायसवाल की ऋणी है। भारतीय इतिहास लेखन के प्रवृत्तियों के दृष्टिकोण से 1920-1930 वाले दशक में लिखने वाले इतिहासकारों पर राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव था, जो उनके ऐतिहासिक चिंतन में प्रतिबिंबित हुआ। खास यह है कि जब ब्रतानियां हुकूमत के आगे किसी की जुबान खोलने की साहस नहीं था, तब लंदन के काफी हाउस में विनायक दामोदर सावरकर के साथ डॉ काशी प्रसाद जायसवाल भारत को हिंदू राष्ट्र बनाने का ताना-बाना बुन रहे थे। उनका मानना था जातियों में बटे हिन्दुओं को एकजुट करके ही ब्रतानियां हुकूमत को मात दी जा सकती है। क्योंकि हिन्दुत्व को एक सजातीय, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक पहचान है।

आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिकाः।
पितृभूपुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरितिस्मृतः।।

डॉ काशी प्रसाद का हिन्दुत्व का मतलब था देश धर्म के संविधान से चले, तभी रामराज्य की कल्पना साकार हो सकती है। "हिन्दू राष्ट्र" का मतलब था भारतीय उपमहाद्वीप में फैले "अखण्ड भारत" एकसूत्र में बंधा रहे। देवी-देवताओं की इस जन्मभूमि पर हिमालय पर्वत, गंगा, यमुना, नर्मदा, कावेरी, ब्रह्मपुत्रादिक अनेकानेक नदी-नद की पहचान हो। ये बोध इंडिया शब्द से नहीं होता।'' हिमालय का प्रथम अक्षर 'हि' तथा इन्दू सरोवर के नाम से 'न्दू' अक्षर को ग्रहण करके अर्थात हि-न्दू = हिन्दू नाम ही उचित है। ब्रतानियों से पहले मुगल शासक इस देश को हिन्दुस्तान ही बोलते थे। तो ब्रतानियों द्वारा इसका नाम इंडिया क्यों रखा। काशी प्रसाद जायसवाल जैसे विद्वान की सोच थी कि जनमानस को राष्ट्रवादी बनाकर ही अंग्रेजों के जुर्म से भारत को आजादी दिलायी जा सकती है। 1930 में गायकवाड़ स्वर्ण-जयन्ती व्याख्याता सम्माननीय पद से सम्मानित किये गये थे। उनसे पहले केवल रवीन्द्रनाथ ठाकुर को ही यह गौरव प्राप्त हुआ था, और विज्ञानाचार्य रमन तीसरे व्यक्ति थे, जिन्होंने इस सम्मान को पाया। इसी साल वे ओरियन्टल कान्फरेन्स, पटना के स्वागताध्यक्ष हुए थे। 1931 में वे पटना-म्यूजियम के प्रेसिडेन्ट बने और अन्त तक रहे। 1933 में वे बिहार-प्रान्तीय साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन के सभापति हुए थे। उस वक्त उन्होंने चौरासी सिद्धों की हिन्दी कविता पर एक सुन्दर भाषण दिया और डा. ग्रियर्सन ने सिद्धों की कविता (800 ई0) का होना स्वीकार कर लिया। सन् 1934 एवं 1936 में वे दो बार भारतीय मुद्रा-समिति के सभापति हुए। वे पहले भारतीय थे, जिनका व्याख्यान लन्दन की रायल एशियाटिक सोसाइटी ने अक्टूबर, 1935 में 'मौर्य सिक्का' विषय पर कराया था। अफसोस है कि ऐसे महान विभूति, अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान व जायसवाल समाज के गौरव डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल को मरणोपरान्त भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न देने की मांग तो एक अरसे से हो रही है। लेकिन अभी तक किसी राजनेता या उसके दल ने पहल नहीं की है। यह अलग बात है जायसवाल क्लब एवं उससे जुड़े अनुसांगिक संगठनें लगातार उन्हें भारत रत्न देने की मांग समय-समय पर करते रहे है। यह देश के लिए गौरव की बात है कि देर से ही सही लोग उनकी वैभव, महत्ता व कार्यक्षमता को समझने लगे है। हकीकत तो यही है कि इतिहास से लेकर साहित्य व स्वतंत्रता आंदोलन के माध्यम से भारत की आजादी में अतुलनीय योगदान दिया है, उन्हें बहुत पहले ही भारतरत्न मिल जाना चाहिए था। लेकिन सरकारों ने अन्य महान विभूतियों की तरह काशी प्रसाद जायसवाल के इतिहास को लोगों के बीच आने ही नहीं दिया। जायसवाल क्लब के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनोज जायसवाल व पं दीन दयाल नगर के विधायक रमेश जायसवाल 27 जुलाई को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके कालीदास मार्ग के आवास पर मिलकर डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल के बारे में चर्चा कर उन्हें मरणोपरान्त भारत का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न, उनके नाम पर टिकट जारी करने व उनके नाम पर बोर्ड के गठन के साथ ही उनकी जयंति 27 नवंबर को इतिहास दिवस के रुप में मनाने की मांग किया तो मुख्यमंत्री ने कहा, मैं डॉ काशी प्रसाद जायसवाल के इतिहास, उनकी विद्वता व लेखनी से भलीभांति परिचित व पढ़ा हूं, जरुर कुछ न कुछ पहल करने का न्रयास करेंगे। ऐसे में यूपी सहित भारत के विभिन्न हिस्सों में रह रहे 20 करोड़ से अधिक काशी प्रसाद के अनुयायियों, शुभचिंतकों एवं चाहने वालों में उम्मींद की किरण जगी है। दावा है कि अगर मुख्यमंत्री ने मांगे पूरी की तो देश का इतिहास भी स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जायेगा। खासकर उस विद्वान के लिए जिन्होंने ब्रिटिशकाल के डार्कनेस हिस्ट्री आफ इंडिया या अंधकार युग के इतिहास को तमाम पाबंदियों के बावजूद अपनी पुस्तकों में उजागर किया है। भारतीय दर्शन, इतिहास, भाषा-साहित्य, सभ्यता-संस्कृति व धर्म के गौरवशाली अतीत को काशीप्रसाद ने जिस प्रखरता से उभारा है, उस तरह की प्रखरता अभी तक कोई दूसरा साहित्यकार या इतिहासकार नहीं उजागर कर पाया है। टाइम्स आफ इंडिया के 31 अगस्त, 1960 के अंक में प्रकाशित एक समाचार से यह भी पता चलता है कि भारत सरकार ने सन 1961 में कुछ विशिष्ट महापुरूषों के सम्मान में विशेष डाक टिकटों को जारी करने का निर्णय लिया है। उन महापुरूषों में एक नाम प्रसिद्ध इतिहासकार डा. काशी प्रसाद जायसवाल का भी था।

सफरनामा

काशी प्रसाद का जन्म 27 नवंबर, 1881 को उप्र की पावन माटी मिर्जापुर में बाबू महादेव प्रसाद जायसवाल के परिवार में हुआ। उनका देहावसान 4 अगस्त, 1937 को हुआ। आपके पिता लाह और चिवड़े के विख्यात व्यापारी थे। आपके पिता का व्यापार बिहार राज्य में भी फैला हुआ था। डॉ. काशी प्रसाद की प्रारम्भिक शिक्षा एक निजी शिक्षक की देख-रेख में घर पर ही हुई। उन्होने मिर्जापुर के लंदन मिशन स्कूल से एंट्रेंस की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। प्राथमिक शिक्षा के बाद वे वाराणसी के क्वींस कालेज में पढ़ने के बाद उच्च शिक्षा के लिए लंदन गए। 1906 में डॉ. जायसवाल जी मात्र 25 वर्ष की अवस्था में वह इंग्लैण्ड रवाना हुए और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में दाखिला पाया। वहां से उन्होंने इतिहास से एमए करते हुए डेबिस स्कॉलर के रूप में चीनी भाषा का अध्ययन किया।

क्यों बन रहीं हैं धर्म का मजाक उड़ाने वाली फिल्में

आर.के. सिन्हा

आपको न जाने कितनी इस तरह की फिल्में मिल जाएंगी जिनमें हिंदू धर्म के देवी-देवताओं को अपमानित होते हुए या गलत तरीके से पेश किये जाते हुए दिखाया गया है। यह किनके इशारे पर हो रहा है I समझ नहीं आता कि अब हमारे यहां सार्थक फिल्में क्यों नहीं बनती? इसी तरह से बच्चों की पृष्ठभूमि पर फिल्में बनाना क्यों फिल्मकारों ने छोड़ दिया है? कुछ फिल्म वाले हिंदू धर्म और हिंदू धर्म के आराध्य देवी-देवताओं के साथ बार-बार खिलवाड़ करके पता नहीं क्या साबित करना चाहते हैं ? राम भारत की आत्मा में है। भारत की राम के बिना कल्पना तक भी नहीं की जा सकती। नवजात शिशु के कान में पहला शब्द राम ही बोला जाता है और शवयात्रा में "रामनाम सत्य है " ही कहकर मृतात्मा को अंतिम विदाई डी जाती है I उन्हीं राम और रामायण को लेकर एक बेसिर पैर की फिल्म 'आदिपुरुष' बना दी जाती है और सहिष्णु हिन्दू चुपचाप बैठे रहते हैं । उस पर तगड़ा बवाल भी हुआ। सवाल ये है कि क्या सेंसर बोर्ड में खासमखास ओहदों पर बैठे ज्ञानियों ने 'आदि पुरुष' को देखा नहीं था? उन्होंने उसे प्रदर्शन की इजाजत कैसे दे दी? इसके संवाद एक दम घटिया हैं। अब आमिर खान की फिल्म 'पीके' को ही लें। इसमें भगवान शंकर के वेश में एक युवक को सड़कों पर बेताहशा दौड़ते हुए दिखाया गया था। क्या आमिर खान को यह दिखाना चाहिए था ? अब लीना मनिमेकलाई की फिल्म 'काली' की बात कर लें। इसके पोस्टर में मां काली को सिगरेट पीते दिखाया गया है। क्या इससे हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंची? हिंदू धर्म और हिंदू देवी-देवताओं का अपमान करना एक तरह से फैशन होता जा रहा है। यह सिर्फ हिन्दू समाज की सहिष्णुता की वजह से हो रहा है I जिस दिन हिन्दू भी "ईश निंदा" के मसले पर गंभीर हो जायेगा, तब हिन्दुओं का मजाक उड़ाने वालों का क्या होगा, यह सोचने की बात है I जरा सोचिए कि जिस देश में 80 फीसद से अधिक हिंदू रहते हैं वहां पर ये गटर छाप फिल्में दिखाई जाती हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि कंट्रोवर्सी खड़ी करने के लिए जानबूझकर फिल्मों के कंटेट को हिंदू विरोधी बनाया जाता है। कुछ साल पहले अहमदाबाद के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट यानी आईआईएम ने एक अध्ययन किया था। उन्होंने दावा किया था कि बॉलीवुड की फिल्में हिंदू धर्म के खिलाफ लोगों के दिमाग में धीमा ज़हर घोल रही हैं।

फिल्मों के शैदाइयों को कई अन्य फिल्में भी याद आ जाएंगी जिनमें कला की स्वतंत्रता के नाम पर करोड़ों हिंदुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाई जाती रही। मैं यहां सलमान खान की फिल्म 'टाइगर जिंदा हैं' की खासतौर पर चर्चा करना जरूरी मानता हूं। इस फिल्म में पाकिस्तान की भारत विरोधी खुफिया एजेंसी इंटर सर्विस इंटेलीजेंस (आईएसआई) को भारत की हमदर्द एजेंसी के रूप में पेश किया गया था। तो क्या कुख्यात आईएसआई का हृदय परिवर्तन हो गया? क्या वह भारत की दोस्त और शुभचिंतक बन गई है? 'टाइगर जिंदा है' की संक्षेप में कहानी का सार यह है इराक में भारत की नर्से कट्टरवादी इस्लामिक संगठन आईएसआईएस के कब्जे में आ गई हैं। उन्हें मुक्त करवाने के अभियान में भारत की सक्षम खुफिया एजेंसी रॉ का आईएसआई सहयोग करती है। इससे अधिक झूठ कुछ नहीं हो सकता। दिन को रात कहना कहां तक सही माना जाए? 'टाइगर जिंदा है' को दर्शकों ने बहुत पसंद किया था। फिल्म हिट हुई थी। उसने तगड़ा बिजनेस भी किया था। पर सवाल वही है कि क्या आप क्रिएटिव फ्रीडम की आड़ में कुछ भी दर्शकों को पेश कर देंगे? क्या सेंसर बोर्ड सोया हुआ था, जिसने 'टाइगर जिंदा है' को प्रदर्शन की अनुमति दे दी? कैसे इस फिल्म में आईएसआई को भारत के मित्र के रूप में दिखा दिया गया। आईएसआई का सारा इतिहास भारत में गड़बड़ और अस्थिरता फैलाने के उदाहरणों से अटा पड़ा है। पाकिस्तान को मालूम है कि वह सीधे युद्ध में भारत के सामने टिक नहीं सकता। कौन नहीं जानता कि मुंबई में 2008 में हुए खूनी आतंकवादी हमले और काबुल में भारतीय दूतावास को निशाना बनाकर किए गए विस्फोट के पीछे आईएसआई का ही हाथ था। ये दावा बीबीसी ने भी दो हिस्सों में प्रसारित अपने एक कार्यक्रम में किया था। इसे 'सीक्रेट पाकिस्तान' नाम दिया गया था। पर हम उसे अपने यहां एक मानवीय एजेंसी के रूप में खड़ा कर रहे हैं। भारत में जाली करेंसी का धंधा करवाने की भी फिराक में हमेशा आईएसआई रहती है। नोटबंदी के कारण 500 और एक हजार के नोट बंद करने के ऐलान ने आईएसआई की नींद उड़ा दी थी।भारत में करोड़ों लोग मनोरंजन के लिए फिल्में देखते हैं। क्या उन्हें 'पीके', 'टाइगर जिंदा है', 'काली', 'आदिपुरुष' जैसी फिल्में दिखाई जानी चाहिए? सेंसर बोर्ड को अधिक सजग होने की जरूरत है ताकि कोई कचरा फिल्म प्रदर्शित ना हो। फिल्में इस तरह की भी बने जो अंध विश्वास पर हल्ला बोलें और दर्शकों का स्वस्थ मनोरंजन करें। हमारी फिल्मों में फूहड़ता भरी होती है। उनमें से अधिकतर में कुछ संदेश नहीं होता। साफ है कि इस तरह की फिल्मों से कोई फायदा नहीं होने वाल। हमें श्याम बेनेगल जैसे दर्जनों फिल्मकार चाहिए जो सार्थक सिनेमा के प्रति प्रतिबद्ध हों। श्याम बेनेगल की आरम्भिक फ़िल्में 'अंकुर', 'निशांत' और 'मंथन' थीं। मनोरंजन और सामाजिक सरोकार के बीच संतुलन बनाए रखने की कोशिश में बेनेगल ने अपनी बाद की फ़िल्मों 'कलयुग' , 'जुनून' , 'त्रिकाल' और 'मंडी' से ग्रामीण पृष्ठभूमि को छोड़कर नाटकीय और शहरी विषय-वस्तुओं पर फ़िल्में बनानी शुरू कीं। शेयाम बेनेगल जैसे कई और भी हमारे यहां फिल्मकार हैं। पर उनकी संख्या बहुत कम है। अब भी बुजुर्ग हो रहे हिन्दुस्तानियों को 'बूट पॉलिश', 'अब दिल्ली दूर नहीं' और 'जागृति' जैसी महान बाल फिल्में याद होंगी। ये सब कालजयी फिल्में थीं। पर अब कहां बनती है इस तरह की अमर फिल्में। मैंने 'बूट पालिश' पटना में देखी थी। मुझे इतने बरस गुजर जाने के बाद भी 'बूट पालिश' की कथा और किरदार याद हैं। 'बूट पालिश' को राज कपूर ने बनाया था। संयोग देखिए कि उन्होंने ही 'जागृति' और 'अब दिल्ली दूर नहीं' बनाई।

1957 में ' अब दिल्ली दूर नहीं' फिल्म रीलिज हुई थी। उसकी कहानी लिखी थी मशहूर साहित्यकार राजेन्द्र सिंह बेदी ने। उसमें बाल कलाकार की भूमिका में अजमद खान भी थे। वे आगे चलकर गब्बर सिंह के किरदार में बहुत मकबूल हुए। यकीन मानिए कि कभी-कभी मन बहुत उदास हो जाता है कि हमारे यहां अब स्वस्थ और श्रेष्ठ फिल्में बननी लगभग बंद हो गईं हैं।

खतरनाक है नफरत भरी जेहादी मानसिकता !

मनोज कुमार अग्रवाल

राजधानी दिल्ली से करीबी हरियाणा के मुस्लिम बहुल जिले नूह में हिंदू संगठनों द्वारा निकाली जा रही धार्मिक यात्रा को मुस्लिम समुदाय के कई सौ हथियारबंद गुंडों ने जिस तरह निशाना बनाकर हिंसा व आगजनी की। वह न सिर्फ कानून व्यवस्था को ठेंगा दिखाना है वरन एक शांत परम्परागत यात्रा पर हमला कर देश प्रदेश के साम्प्रदायिक सद्भाव को नष्ट करने की घिनौनी साजिश भी है। नूह में जिस तरह नियोजित ढंग से मुस्लिम हिंसक उपद्रवियों ने पथराव के साथ कई राउंड गोलियां चलाई ऐसा तो जम्मू-कश्मीर में अमरनाथ यात्रा पर भी नहीं किया गया वहां सिर्फ आतंकवादी हमले करते थे इस तरह मजहबी जेहादी नहीं। मौजूदा हिंसा में होमगार्ड के दो जवानों समेत छह लोगों की मौत हो गई, जबकि सेकडों श्रद्धालु व अन्य लोग घायल हुए जिनमें से तीन ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया । वहीं हमलावरों की नफरत और विद्वेष भरी हिंसक हमले की तीव्रता व गम्भीरता को इस से समझा जा सकता है कि मौके पर एक डीएसपी के सिर और इंस्पेक्टर के पेट में गोली मारी गई है। मरने वालों में विहिप के कई कार्यकर्ताओं शामिल हैं।पुलिस प्रशासन को इस यात्रा पर किसी हमले का गुमान नहीं था क्योंकि यह यात्रा हर साल परम्परागत मार्ग पर दशकों से निकाली जाती रही है। लेकिन इस बार यह सामान्य यात्रा दिलों में नफरत की आग छिपाए बैठे एक समुदाय विशेष के कट्टरपंथी असामाजिक तत्वों की हिंसा का निशाना बना दी गई हिंसक हमलावरों ने महिलाओं बच्चों को भी नहीं बख्शा। हजारों लोगों ने मंदिर में छिप कर जान बचाई यह लोग सात घंटे तक मंदिर परिसर में कैद रहे। देर रात तक 2500 लोगों को मंदिर से निकाला जा सका था।यह हालात बयान करते हैं कि कुछ भटके हुए जेहादी मनोवृति से आकर्षित तत्व गजवा ए हिन्द के ख्वाब को किस तरह साकार करने के लिए छटपटा रहे हैं। नफरत की इस हिंसा की तैयारी पहले से कई गई थी हरियाणा के गृहमंत्री अनिल विज ने माना है कि पुलिस फोर्स को घटनास्थल पर जाने नहीं दिया गया, जिस कारण केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय के सहयोग से तीन कंपनियों को हेलीकॉप्टर से एयरड्राप कराया गया है, ताकि अराजकता के बीच फंसे लोगों को सुरक्षित निकाला जा सके। देर रात तक 500 जवान नूह पहुंच गए थे। जिले में कर्फ्यू लगाने के साथ ही इंटरनेट सेवा बंद कर दी गई है। जाहिर है कि एक समुदाय के लोगों ने देश के भीतर ही हिन्दू समाज के धार्मिक आयोजन को न सिर्फ नफरत हिंसा व आगजनी में झोंक दिया वरन फंसे लोगों की मदद के लिए पुलिस व फोर्स के पहुंचने के रास्ते भी मोर्चा बंदी कर बंद कर दिए गए। यह अराजकता की चरम स्थिति कही जा सकती है। जब नल्हड़ स्थित शिवमंदिर में जलाभिषेक करने के बाद यात्रा गांव सिंगार की और जा रही थी तभी अराजक तत्वों ने सोची-समझी साजिश के तहत यह हिंसक हमले किए। आतातायी भीड़ ने नूह अनाज मंडी स्थित साइबर क्राइम थाने के परिसर में दर्जनों वाहनों को आग लगा दी। पुलिसकर्मियों ने भागकर जान बचाई। इसके बाद भीड़ ने दर्जनों दुकानों में लूटपाट की। उपद्रवियों ने बहुत से वाहन फूंक दिए 50 से अधिक निजी और सरकारी वाहनों को क्षतिग्रस्त कर दिया। कुछ ही देर में हिसा पूरे नूह जिले में फैल गई। विहिप के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री सुरेंद्र जैन ने बताया कि उन्हें निशाना बनाकर चलाई गई गोली उनके सिर के पास से होकर निकली, जिसमें वह बाल-बाल बच गए, लेकिन उनकी गाड़ी को उपद्रवियों ने फूंक दिया। उन्होंने कहा कि सूचना के बावजूद पुलिस की कोई तैयारी नहीं थी। उन्होंने कहा कि वे लोग मंदिर में सुरक्षित थे, लेकिन मंदिर से बाहर निकालकर पहाड़ के नीचे खेतों में खड़ा कर दिया गया, जबकि ऊपर से गोलियां बरसाई जा रही थी। मिली रिपोर्ट्स के अनुसार मेवात में सावन के महीने जलाभिषेक यात्रा लम्बे समय से निकलती आ रही है।

पूर्व तक इसमें मुस्लिम समाज के लोग भी सहयोग देते थे, लेकिन इस बार मजहबी जेहादी लोगों ने इस यात्रा पर हमला कर दशकों के सौहार्द को हिंसा में तब्दील कर दिया । यह यात्रा नूह के नल्हड़ महादेव मंदिर से शुरू होकर पुन्हाना के भंगार मंदिर में खत्म होनी थी। तय मार्ग के मुताबिक यह यात्रा नूह स्थित मनसा देवी मंदिर पहुंचती। फिर झीर मंदिर फिरोजपुर झिरका जाती और वहां भगवान भोलेनाथ के दर्शन व जलाभिषेक के बाद यात्रा पुन्हाना के गार मंदिर के लिए रवाना होती। सवाल उठता है कि ये कौन मजहबी जेहादी लोग हैं जो आज एक धर्म निरपेक्ष शासन व्यवस्था में सोलहवीं सदी की हमलावर लुटेरी व तलवार के बल पर दूसरे धर्म समुदाय को नियंत्रित करने व नष्ट करने की मानसिकता को पाले बैठे हैं और देश भर में समय समय पर हिन्दू समुदाय के पर्व त्योहार व विशेष आयोजनों पर हमले व हिंसा कर खून खराबे पर आमादा हो जाते हैं।

मजबूरी कैसी-कैसी ?

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

"अब क्या बतावें भाई साहब, हँसने बैठते हैं तो समझ में नहीं आता कि शुरु किससे करें । कोई एक बात हो तो सलीके और संस्कार के साथ हँस लेवें इन्सान । यहाँ तो बरात लगी पड़ी है ससुरी । लोग जिस तरह औंधी खोपड़ी से नाच रहे हैं ना वैसा तो आज तक देखा नहीं हमने । कहने को कह रहे हैं आगे बढ़ो, दुनिया आगे बढ़ रही है, विकास हो रहा है ! फिर कहते हैं पीछे चलो बाप-दादा पुकार रहे हैं, पीछे सब अच्छा है !! अरे समझ में नहीं आता है कि आगा अच्छा है या पीछा !! जिसे देखो पगला रहा है ... ना ना हम राजनीति की बात नहीं कर रहे है और न ही करेंगे । हमें क्या करना है, इस बेरोजगारी में तो सर पे जो भी खड़ा होता है भारी ही दीखता है । कुर्सी पे कोई सच्चा-साधु बैठे या लुच्चा-लबार हमें क्या । आज जिन्दा हैं तो यहाँ आपके लिए श्याम भैया हैं कल मर कर फिर पैदा हुए तो कौन जाने करीम चाचा हो जाएँ । लोग तो कहते हैं लाखों योनियाँ हैं, आदमी कुत्ता बिल्ली भी हो सकता है । आदमी ही बनेंगे इसकी कोई गैरंटी है क्या ! इसलिए राजनीति की बातें करके हम काहे अपना और आपका कीमती समय बरबाद करें ! ... अब देखिये, आप इतनी गौर से बात सुन रहे हैं तो किसलिए ! कोई डर है हमारा ? या कोई कर्जा लिए हो हमसे ? ... अरे भाई इंसानियत लिए हो इसलिए दुःख बाँट रहे हो हमारा । वरना ढूंढ लीजिये यहाँ से वहां तक कोई अपनी इच्छा से किसी की मन की बात सुनता है क्या ? बकवास सुनाने का समय ही नहीं है किसी के पास । घर में बूढ़े अपना पसेरी भर समय लिये बैठे हैं सारा सारा दिन कोई चुटकी भर बाँटने वाला नहीं मिलता । एक जमाना था जब मिलने वाले फूल लिए खड़े रहते थे । ... लेकिन छोड़िये पुरानी बातें । ... हाँ तो हम कह रहे थे आत्मा जो है सूखी जाती है । बच्चों को पढ़ाये लिखाये इसलिए थे कि इनकी जिंदगी बन जाएगी । ये इन्सान बन जायेंगे, कुछ हमारी भी सदगति हो जाएगी । अब जब धरम करम का समय आया तो फुग्गे उड़ गए आकाश में । दो लाइन का फादर्स-डे वेक्सिन ठोंक देते हैं, सोचते हैं साल भर बाप को औलादी बुखार नहीं चढ़ेगा । ... बताइए हम क्या करें ! ताली थाली बजा-बजा कर बुढ़ापा-गो बुढ़ापा-गो करें!? सब हो जायेगा इससे ! पिछले महीने रामू बाबू गुजरे । बच्चे विदेश में, मजबूरी बनी रही, कोई नहीं आया । बूढ़े कन्धों ने उठाया, महरी के लडके ने आग दी ... पता नहीं ऊपर के लोक में किसी ने द्वार खोला या नहीं । न पूजा-पाठ, न तेरहवीं न नुक्ता-घाटा । सफल आदमी थे, लेकिन बड़े बेआबरू हो के तेरे कूचे से निकले । कोई इस तरह जाता है क्या !? ये कैसी दुनिया बना ली है हम लोगों ने !

आज 3 साल में एक बार पड़ने वाला गणेश जी का व्रत

व्रत के साथ ही इन चीजों का करें दान
चतुर्थी व्रत पर अनाज, धन, जूते-चप्पल, कपड़े का दान करें। किसी मंदिर में पूजन सामग्री भेंट करें। गोशाला में धन और गायों के लिए हरी घास का दान करें।

'ऊं गं गणपतये नमः' मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए।

संकष्टी चतुर्थी और शिव पूजा
सावन महीने की संकष्टी चतुर्थी पर भगवान विष्णु के साथ गणेश जी की पूजा होती है। इसके बाद भगवान शिव-पार्वती की पूजा का भी विधान है। भगवान शिव-पार्वती की पूजा सुगंधित फूल और सौभाग्य बढ़ाने वाली सामग्रियों के साथ करनी चाहिए।

अधिक मास का पवित्र महीना चल रहा है। इस माह में हिंदू पंचांग के मुताबिक पड़ने वाली चतुर्थी तिथि को 'बिभुवन संकष्टी चतुर्थी' के नाम से जाना जाता है। अधिक मास में यह पर्व 4 अगस्त को मनाया जाएगा। धार्मिक मान्यता के मुताबिक, इस दिन भगवान गणेश की विधिपूर्वक पूजा की जाती है। इतना ही नहीं, अधिक मास में पड़ने की वजह से यह व्रत हर 3 साल में एक बार होता है।

मान्यता है कि विभुवन संकष्टी चतुर्थी के दिन व्रत करने से सभी प्रकार की समस्याएं दूर हो जाती हैं। वहीं, ज्योतिष के मुताबिक इस दिन कुछ उपाय किए जाएं तो विघ्न बाधाओं से भी मुक्ति मिलती है। साथ ही जीवन में खुशियां आती हैं। तो लिए जानते हैं भगवान गणेश को प्रसन्न करने के लिए इस दिन क्या उपाय करें।

अयोध्या के प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य पंडित कल्कि राम बताते हैं कि गणपति बप्पा का एक ऐसा व्रत है जो 3 साल में एक बार आता है, जिसे विभुवन संकष्टी चतुर्थी के नाम से जाना जाता है। इस दिन गणपति बप्पा की विधि विधान पूर्वक पूजा आराधना की जाती है और इस दिन अगर जातक कुछ उपाय करते हैं तो कई तरह की वृद्धि भी होती है।

शीघ्र विवाह के लिए

अगर आप विवाह के योग्य हैं और किसी कारण आपके विवाह में बाधाएं आ रही हैं तो विभुवन संकष्टी चतुर्थी के दिन भगवान गणेश को दूर्वा अर्पित करें। ऐसा करने से जल्द ही विवाह के योग्य बनेंगे।

व्यापार में वृद्धि के लिए

अगर आप ईमानदारी से अपना व्यापार कर रहे हैं और आपको व्यापार अथवा नौकरी में तरक्की नहीं मिल रही है तो इस दिन भगवान गणेश की प्रतिमा अपने घर में स्थापित करें। उसके बाद विधि पूर्वक पूजा करें। पूजा करते समय हल्दी की 5 गांठ भगवान गणेश को अर्पित करें। अगर आप ऐसा करते हैं तो व्यापार के साथ-साथ नौकरी में भी प्रमोशन मिल सकता है।

स्थापित करें गणपति बप्पा का यंत्र

विभुवन संकष्टी चतुर्थी के दिन अपने घर में भगवान गणेश का यंत्र स्थापित करें। धार्मिक मान्यता के मुताबिक, गणेश यंत्र बहुत लाभकारी माना जाता है। अगर आप अपने घरों में गणेश जी के यंत्र को स्थापित करते हैं तो घर में सकारात्मक ऊर्जा आने लगती है।

धन संबंधी परेशानियां दूर करने के लिए

अगर आप किसी समस्या से जूझ रहे हैं तो आपको इस दिन भगवान गणेश की विधिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। गुड़ अथवा देसी घी का भोग लगाना चाहिए और उसके बाद उस भोग को गाय को खिलाना चाहिए। ऐसा करने से धन संबंधी सारी परेशानियां दूर होती हैं।

बाधा से मुक्ति के लिए

अगर आप किसी बाधा से मुक्ति पाना चाहते हैं तो आपको इस दिन भगवान गणेश की प्रतिमा के सामने 'ऊं गं गणपतये नमः' मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए। अगर आप ऐसा करते हैं तो आपके ऊपर आई तमाम बाधाएं समाप्त हो जाएंगे।

पूजा की विधि

सूर्योदय से पहले उठकर नहाएं और साफ कपड़े पहनें।
इसके बाद व्रत और पूजा का संकल्प लें।
पहले भगवान विष्णु फिर शिव-पार्वती और आखिरी में गणेशजी की पूजा करें।
गणपति जी की मूर्ति को फूलों से सजा लें। तांबे के कलश में पानी भरकर रखें।
चंदन, अक्षत, अबीर, गुलाल, फूल और धूप-दीप लगाएं।
प्रसाद के तौर पर मोदक, तिल, गुड़, लड्डू, केला या नारियल रखें।
शाम को चंद्रमा निकलने से पहले गणपति जी की पूजा करें और संकष्टी व्रत कथा का पाठ करें।

गणेश पूजा के बारे में भगवान शिव ने सनत्कुमार को बताया कि इस चतुर्थी तिथि पर पूरे दिन बिना कुछ खाए पूरे दिन व्रत रखें और शाम को पूजा के बाद ही भोजन करना चाहिए। सुबह जल्दी उठकर काले तिल से स्नान करें। सोने, चांदी, तांबा या मिट्टी की गणेश जी की मूर्ति बनवाएं। इसके बाद भगवान गणेश की पूजा करें। फिर गणेश जी को तिल और घी से बने लड्डूओं का भोग लगाएं। इसके बाद ब्राह्मणों को लड्डू दान करें। इस संकष्टी चतुर्थी व्रत में भगवान शिव की पूजा भी की जाती है।

संकष्टी चतुर्थी का महत्व

पुरी के ज्योतिषाचार्य और धर्मग्रंथों के जानकार डॉ।गणेश मिश्र का कहना है कि संकष्टी चतुर्थी का मतलब होता है संकट को हरने वाली चतुर्थी। संकष्टी संस्कृत भाषा से लिया गया शब्द है, जिसका अर्थ है कठिन समय से मुक्ति पाना। इस दिन भक्त अपने दुखों से छुटकारा पाने के लिए गणपति जी की अराधना करते हैं। गणेश पुराण के अनुसार चतुर्थी के दिन गौरी पुत्र गणेश की पूजा करना फलदायी होता है। इस दिन उपवास करने का और भी महत्व होता है।

भगवान गणेश को समर्पित इस व्रत में श्रद्धालु अपने जीवन की कठिनाइयों और बुरे समय से मुक्ति पाने के लिए उनकी पूजा-अर्चना और उपवास करते हैं। कई जगहों पर इसे संकट हारा कहते हैं तो कहीं इसे संकट चौथ भी कहा जाता है। इस दिन भगवान गणेश का सच्चे मन से ध्यान करने से व्यक्ति की सारी मनोकामनाएं पूरी हो जाती हैं और लाभ प्राप्ति होती है।

अगस्त में इन 8 राशिवालों की लगेगी लॉटरी

मिलेगा धन लाभ, मकान, वाहन सुख, 30 दिन ऐसी रहेगी स्थिति

अगस्त माह का प्रारंभ हो चुका है और लोग जानना चाहते हैं कि यह महीना उनके लिए कैसा रहेगा? उनको किस्मत का साथ मिलेगा या नहीं? धन लाभ होगा या नहीं? मकान, वाहन का सुख प्राप्त होगा या नहीं? नौकरी में प्रमोशन, नई नौकरी या वेतन वृद्धि का योग बना है या और इंतजार करना होगा? अगस्त में बिजनेस में तरक्की होगी या चुनौतियां मिलेंगी? तिरुपति के ज्योतिषाचार्य डॉ। कृष्ण कुमार भार्गव का कहना है कि अगस्त 2023 मेष, वृष समेत 8 राशि के जातकों के लिए अच्छा रहने वाला है। उन पर भाग्य मेहरबान रहेगा, धन लाभ के साथ अन्य सुख भी प्राप्त होंगे। आइए जानते हैं अगस्त 2023 में किन 8 राशिवालों की लॉटरी लगेगी? जानने के लिए पढ़ें अगस्त 2023 का राशिफल।

मेष राशि

इस माह आपके पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नौकरी में आपका रुतबा बढ़ेगा।
सरकारी नौकरी करने वालों को वाहन और मकान का सुख मिल सकता है।
व्यापारी वर्ग को मुनाफा कमाने का अवसर मिलेगा। आपकी उन्नति का समय है।
आपकी आर्थिक स्थिति पहले से ठीक होगी।

वृष राशि

अगस्त में आप किसी प्रॉपर्टी में निवेश कर सकते हैं, जो लाभदायक सिद्ध होगा।
आप अपने लिए नया मकान या नई गाड़ी खरीद सकते हैं।
बिजनेस की योजनाएं सफल रहेंगी। धन लाभ के मौके मिलेंगे।
नौकरी से जुड़े लोग वाद-विवाद से दूर रहेंगे तो तरक्की होगी।

कर्क राशि

अगस्त का महीना नौकरीपेशा लोगों के लिए शानदार सफलता देने वाला हो सकता है।
आपके वेतन में वृद्धि होगी, जिससे आपका आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।
व्यापारी वर्ग लंबे समय की योजनाओं पर काम करेंगे तो भविष्य में बड़े फायदे हो सकते हैं।
इस माह आपकी माली हालत में सुधार होगी।

कन्या राशि

विदेश में पढ़ने का सपना पूरा हो सकता है। आपको विदेशी संस्थान में एडमिशन मिल सकता है।
बिजनेस से जुड़े लोगों को निवेश या सहयोग मिल सकता है, जिससे उन्नति होगी।
इस दौरान आपको अपने मान-सम्मान का ध्यान रखना है, विवाद से दूर रहना है।
इस माह धन की कमी नहीं होगी। अपने सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे।

तुला राशि

सरकारी नौकरी करने वालों के लिए यह महीना लाभदायक होगा।
मकान और सरकरी योजना का लाभ मिल सकता है।
नौकरी करने वाले लोगों के पद और प्रतिष्ठा में वृद्धि की संभावना है।
बिजनेस से जुड़े लोगों को धन लाभ होगा। व्यापार में मुनाफा होगा।
काम के विस्तार के लिए समय अनुकूल है।

वृश्चिक राशि

अगस्त में आप पर किस्मत मेहरबान रहेगी, जिससे काम सफल होंगे।
नौकरी में प्रमोशन मिलने का योग है। वेतन वृद्धि से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।
आमदनी होगी, लेकिन खर्चे भी बेहिसाब होंगे।
बिजनेस में नई योजनाओं को लागू करने से मुनाफा होगा।

धनु राशि

अगस्त में आपको नई जॉब मिल सकती है। नौकरी में आपकी स्थिति मजबूत बनी रहेगी।
हो सकता है कि वर्तमान नौकरी में ही आपको मनचाहा स्थान परिवर्तन या स्थानांतरण का लाभ मिल जाए।
इस माह आप कुछ यात्राएं कर सकते हैं, जो करियर के लिए अच्छा साबित हो सकता है।
बिजनेस करने वालों का नेटवर्क बड़ा होगा, जिससे व्यापार का विस्तार और लाभ होगा।
आपको कोई निवेशक मिल सकता है, जो बिजनेस में आर्थिक मदद करे।

कुंभ राशि

बिजनेस करने वाले जातकों के लिए अगस्त का महीना सफलतादायक है।
आप चारों ओर उन्नति करेंगे और काम सफल होंगे।
नौकरीपेशा लोगों को प्रमोशन का लाभ मिल सकता है।
शिक्षा प्रतियोगिता से जुड़े जातकों को सफलता प्राप्त हो सकती है।

श्री ज्ञानमुनिजी म.सा.

ज्ञान बिना हटता नहीं मन का मैलापन

* आँख देखकर आंकलै, जो भीतरला भाव । चंपक चतुर चकोर तू, सागर ! छोड़ विभाव ।।
* सबसे प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढाना देश में, शिक्षा बिना ही आज हम सब पड़ रहे है क्लेश में ।
शिक्षा बिना कोई कभी बनता नहीं सत्पात्र है, शिक्षा बिना कल्याण की आशा दुराशा मात्र है ।।
* सरस्वती के भंडार की बड़ी अपूरब बात । ज्यूँ खर्चे त्यूँ- त्यूँ बढे, बिन खर्चे घट जात ।।
* ज्ञान बिना हटता नहीं मन का मैलापन । पड़ा कोयला आग में पाया घौलापन ।
* आत्म ज्ञान त्यां मुनिपणो, ते साचा गुरु होय । बाकी कुल गुरु परंपरा, आत्मार्थी नहीं जोय ॥
* विद्या, बल, धन, रुप, यश, कुल, सुत, वनिता, मान । सभी सुलभ संसार में दुर्लभ आतम ज्ञान।
* होवे काम हरेक, सहज विवेकी रा सदा । विद्या बिना विवेक शोभै कोनी श्रावकां ॥
* औरां ने उपदेश देणे में के दक्षता । बढा विवेक विशेष, सुधरो थे खुद श्रावकां ।।
* मणि माणक सुत कामिणी, भोग संयोग अनेक । ऐते दुर्लभ नहीं जीव को, दुर्लभ समकित एक ।।
* लफ्जों में निपट सकती तो कबकी निपट जाती । पेचीदा पहेली है, बातों से न हल होगी ।।

शनिदेव की 5 प्रिय राशियां, कर्मों के आधार पर देते हैं शुभ फल

हिंदू धर्म ग्रंथों के अनुसार शनि देव कर्म फल दाता माने जाते हैं। शनि देव प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों के अनुरूप फल देते हैं। जो व्यक्ति अच्छे कर्म करते हैं। शनि देव उनको अपना आशीर्वाद देते हैं। वहीं बुरे कर्म करने वाले लोगों को शनि देव दंड देते हैं। ज्योतिष शास्त्र में शनि देव के विषय में विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है। माना जाता है कि शनि देव की वक्री दृष्टि जिस व्यक्ति पर पड़ जाए उसका सर्वनाश हो सकता है। इसके अलावा ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुछ ऐसी राशियां भी हैं। जिन पर शनि देव की कृपा दृष्टि बनी रहती है। मान्यता के अनुसार इन राशि के लोग शनि देव के आशीर्वाद से जीवन में खूब तरक्की करते हैं।

ये हैं शनि देव की 5 प्रिय राशि

वृषभ राशि : वृषभ राशि पर शनि देव की विशेष कृपा मानी जाती है। इस राशि के स्वामी शुक्र शनि देव के मित्र ग्रह होते हैं। इसलिए शनि देव इस राशि के लोगों को कभी नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। वृषभ राशि के जातकों पर शनि की साढ़ेसाती का प्रभाव ज्यादा समय तक नहीं रहता है।

कर्क राशि : कर्क राशि भी शनि देव की प्रिय राशियों में गिनी जाती है। कर्क राशि वाले जातकों पर शनि की वक्र दृष्टि का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता। कर्क राशि के लोगों को शनि देव सुख समृद्धि देते हैं। शनि देव की कृपा से कर्क राशि के लोग दिन रात तरक्की करते हैं।

तुला राशि : ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि देव की प्रिय राशियों में तुला राशि सबसे पहले आती है। तुला राशि को शनि देव की उच्च राशि भी कहा जाता है। तुला राशि के जातकों पर शनि देव की कृपा दृष्टि हमेशा

बनी रहती है। इसी वजह से यदि तुला राशि के जातकों के जीवन में कठिनाइयां आती हैं तो इन्हें लंबे समय तक इससे जूझना नहीं पड़ता है।

-मकर राशि : मकर राशि को भी शनि देव की प्रिय राशियों में गिना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि देव के अशुभ प्रभाव मकर राशि के जातकों पर नहीं पड़ते। शनि देव मकर राशि के स्वामी माने जाते हैं। इसलिए जब शनिदेव कुंडली में शुभ स्थान पर होते हैं। तो इस राशि के जातकों को लगभग सभी क्षेत्रों में सफलता मिलती है।

-कुंभ राशि : कुंभ राशि का नाम भी शनि देव की प्रिय राशियों में आता है। कुंभ राशि के जातकों पर भी शनि देव की शुभ दृष्टि सदैव बनी रहती है। कुंभ राशि के जातकों को अपने कार्यों में सदैव सफलता प्राप्त होती है। शनि देव की कृपा से कुंभ राशि के जातकों को धनलाभ भी होता है।

धर्मेंद्र को लिप किस करने के विवाद पर शबाना आजमी ने तोड़ी चुप्पी, बयान से फिर मचाया तहलका

रणवीर सिंह और आलिया भट्ट स्टारर फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' अपनी कहानी और सीन्स की वजह से लाइमलाइट में है। इस मूवी के जरिए करण जौहर ने बतौर निर्देशक वापसी की है। जहां फिल्म की कहानी को लेकर फैंस मिली-जुली प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। तो वहीं, इस मूवी में आलिया भट्ट और रणवीर सिंह की केमिस्ट्री से ज्यादा धर्मेंद्र और शबाना आजमी का लिप-किस सुर्खियों में बना हुआ है। जब से फिल्म ने पर्दे पर दस्तक दी है, तबसे उनके ऑनस्क्रीन किस ने सोशल मीडिया पर हंगामा मचाया हुआ है। धर्मेंद्र के बाद अब शबाना ने ऑनस्क्रीन किस पर चुप्पी तोड़ते हुए बड़ा बयान दिया है।

शबाना आजमी ने हाल ही में धर्मेंद्र को ऑनस्क्रीन लिप किस करने पर चुप्पी तोड़ी। एक्ट्रेस ने इसे लेकर एक इंटरव्यू में कहा, 'मैंने कभी नहीं सोचा था कि इससे इतना हंगामा मच जाएगा। जब हम किस करते हैं, तो लोग हंस रहे होते हैं, और शूटिंग कर रहे होते हैं। शूटिंग के दौरान यह कभी कोई मुद्दा नहीं था। यह सच है कि मैंने पहले स्क्रीन पर ज्यादा किस नहीं किया है, लेकिन कौन धर्मेंद्र जैसे खूबसूरत आदमी को किस नहीं करना चाहेगा।'

शबाना आजमी ने धर्मेंद्र संग उनके लिप किस पर पति जावेद अख्तर की प्रतिक्रिया को साझा करते हुए कहा, 'ओह, उन्हें कोई परेशानी नहीं थी, लेकिन जिस बात ने उसे परेशान किया वह मेरा राउडी व्यवहार था। पूरी फिल्म के दौरान मैं तालियां बजा रही थी, सीटियां बजा रही थी, चीख-चिल्ला रही थी। इस पर उनका रिएक्शन ऐसा थी कि मैं अपने बगल में बैठी इस महिला को नहीं जानता, जिसने मुझे बेहद खुश किया।'

फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' की कहानी की बात करें तो यह बंगाली परिवार से ताल्लुक रखने वाली रानी और पंजाबी परिवार से आने वाले रॉकी के प्यार के इर्द-गिर्द घूमती है। दोनों का प्यार परिवारवालों को रास नहीं आता है। इसके बाद रॉकी और रानी एक दूसरे के परिजनों को मनाने में जुट जाते हैं। इस बीच कहानी में आने वाले ट्विस्ट एंड टर्न्स दर्शकों को हंसाते और भावुक भी करते हैं।

'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' बॉक्स ऑफिस पर अच्छी कमाई कर रही है। इस फिल्म के साथ सात वर्ष बाद निर्देशन में वापसी करने वाले करण ने अपनी पुरानी फिल्मों की झलक डाली है। इस रोमांटिक ड्रामा में रणवीर सिंह, आलिया भट्ट, धर्मेंद्र, शबाना आजमी और जया बच्चन जैसे

बेटे 'जेहान' के जन्म के बाद गौहर खान की उड़ी रातों की नींद, कहा - 'खुद के लिए नहीं बचा टाइम'

बिग बॉस विनर गौहर खान दो महीने पहले मां बनी हैं। अभिनेत्री और उनके पति जैद दरबार ने पिछले महीने ही अपने बेटे के नाम का खुलासा किया है। कपल ने अपने बच्चे का नाम जेहान रखा है। ये कपल फिलहाल पेरेंटिंग एंजॉय कर रहे हैं और अपनी लाइफ के हर अपडेट भी फैंस के साथ शेयर कर रही हैं। वहीं न्यू मॉम गौहर खान अपने इंस्टाग्राम पर लगातार अपने नन्हे प्रिंस जेहान के साथ अपने नए शेड्यूल का एक्सपीरियंस शेयर करती रही हैं।

गौहर ने मदर्स डे पर एक प्यार भरा पोस्ट शेयर किया था जिसमें बताया था कि कैसे उनकी जिंदगी बेटे के आने के साथ पूरी तरह से बदल गई है। जेहान उन्हें इतना बिजी रखते हैं कि उनके पास खुद के लिए टाइम नहीं है। उन्होंने लिखा था, 'तो रात के 12 बज चुके हैं, एक न्यू मॉम के रूप में मेरे पहले मदर्स डे का एक दिन बीत चुका है, हां, एक मां के रूप

में अपनी पहली पोस्ट के लिए मुझमें ग्लैम होने की एनर्जी नहीं थी'। गौहर ने एक वीडियो भी शेयर किया था कि कैसे जब उनका बेबी सोता है तो वह घर के चारों ओर घूमती है और वह आराम करने के लिए दौड़ती है। उन्होंने लिखा था, जब एक न्यू बॉर्न बेबी को बिस्तर पर सुलाने में आप सभी को बहुत समय लग गया है तो घर में पूरी तरह से घूमें! हेहेहेहे क्या आप एक न्यू मॉम के रूप में इससे जुड़ सकते हैं ?

गौहर ने ये भी शेयर किया था कि उनकी रातों की नींद उड़ चुकी है. उन्होंने लिखा, ₹रातों की नींद हराम करने के दौरान आपकी बॉडी के उन हिस्सों से अनबिलिवेबल पसीना टपकता है जिनके बारे में आप नहीं जानते थे, समय का कोई एहसास नहीं होता है, थकान होती है, जीवन और ज्यादा सुंदर नहीं हो सकता! अल्हम्दुलिल्लाह बहुत ग्रेटिट्यूड हूं कि मैं पूरे दिन, हर दे सेल्फ मेड बेस्ड मॉम कम्पटीशन जीत रही हूं! हेहेहे..आपको यह मिल गया मैं सभी न्यू मॉम और पुरानी मांओं को भी अपना प्यार भेज रही हूं'। बता दें कि गौहर खान ने अपनी डिलीवरी के 10 दिन बाद ही वेट लॉस कर हर किसी को हैरान कर दिया था। उन्होंने कहा था कि वे भी इससे सरप्राइज हुई थीं। गौहर और जैद ने दिसंबर 2020 में शादी कर ली।

तोड़ा जाएगा दिलीप कुमार का आलीशान बंगला
11 मंजिला लक्जरी आवासीय परियोजना का होना है निर्माण

हिंदी सिनेमा के दिग्गज अभिनेता दिलीप कुमार अपनी बेहतरनी फिल्मों और दमदार अदाकारी के लिए जाने जाते हैं। उन्होंनें मुगल-ए-आजम, देवदास, क्रांति जैसी फिल्मों से अपनी दमदार अदाकारी का लोहा मनवाया था। वहीं, इस बीच खबर है कि दिवंगत अभिनेता के मुंबई वाले बंगले पाली हिल को जल्द ही ध्वस्त किया जाएगा और इसे एक आवासीय परियोजना में बदल दिया जाएगा। उनके इस प्लॉट को रियल्टी डेवलपर अशर ग्रुप ने खरीदा है।

एक मीडिया संस्थान की रिपोर्ट के अनुसार, डेवलपर साइट पर 11 मंजिला लक्जरी आवासीय परियोजना का निर्माण होगा, जिसमें एक म्यूजियम दिवंगत अभिनेता को समर्पित किया जाएगा। कहा जा रहा है कि यह म्यूजियम दिलीप कुमार की लाइफ जर्नी को समर्पित होगा। वहीं, अभी तक इस बात का खुलासा नहीं हो पाया है कि एक्टर के बंगले का सौदा कितने करोड़ में किया गया है। मगर इससे पहले कई मीडिया रिपोर्ट्स में कथित तौर पर उनके बंगले की कीमत करीब 350 करोड़ रुपये बताई गई थी।

दिलीप साहब का बंगला एक एकड़ की जमीन में फैला है। वहीं, मीडिया रिपोर्ट्स में यह कहा गया है कि इस आवासीय परियोजना का निर्माण 1.75 लाख वर्ग फुट होगा। इसके साथ ही इसका निर्माण कार्य शुरू कर दिया है। और आरईआरए पंजीकरण के अनुसार वितरण 2027 में निर्धारित है। एक मीडिया संस्थान से बातचीत करते हुए अशर ग्रुप के सीएमडी अजय अशर ने कहा, ₹हम इसे अगले दो वर्षों में पूरा करने में सक्षम होंगे।

वहीं, दिलीप कुमार की पत्नी सायरा बानो ने एक दूसरे डेवलपर के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर किया था, जिसके बाद से यह प्लॉट पिछले कई सालों से सुर्खियों में है। उन्होंने आरोप लगाया था कि डेवलपर दस्तावेज बनाकर जमीन हड़पने की कोशिश कर रहा है। इस मामले में अशर डेवलपर्स ने कहा है कि कानूनी विवाद का समाधान सहमति शर्तों के साथ किया गया है।

दिलीप कुमार भारतीय सिनेमा के सबसे सफल अभिनेताओं में से एक थे। दिग्गज अभिनेता ने 1953 में अपने करियर में सफल होने के बाद पाली हिल बंगला खरीदा और 50 वर्षों तक वहां रहे थे। इसके बाद साल 2021 में 98 साल की उम्र में उनका निधन हो गया।

खुद पर लगे आरोपों पर असित मोदी ने तोड़ी चुप्पी, बताया सच

'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' एक पारिवारिक शो हैं और शो में हंसी, मजाक, मस्ती का फुल डोज दिया जाता है। यही वजह है कि टीआरपी के मामले में भी शो हमेशा टॉप पर रहता है। हालांकि बीते काफी समय से शो कॉन्ट्रोवर्सी में बना हुआ है। शो छोड़कर जाने वाले कलाकारों ने तारक मेहता शो के मेकर असित कुमार मोदी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। अब खुद पर लगे आरोपों पर असित मोदी ने चुप्पी तोड़ी है। चलिए जानते हैं आखिर क्या कहा है असित मोदी ने

जेनिफर मिस्त्री मामले बोले असित मोदी

शो में मिसेज रोशन सोढ़ी का किरदार निभाने वाली जेनिफर मिस्त्री ने हाल ही में असित कुमार मोदी पर आरोप लगाते हुए कहा था कि उन्हें सेट पर परेशान किया जाता था। जेनिफर मिस्त्री द्वारा हैरेसमेंट के आरोपों पर असित कुमार मोदी ने कहा, "मुझे नहीं पता आखिर क्यों मेरे लिए ऐसा कहा जा रहा है। मैं तो सभी को अपने परिवार की तरह मानता हूं। सभी को खुश रखने की कोशिश करता हूं।" आगे असित मोदी ने कहा कि मैंने कभी किसी के साथ गलत नहीं किया। अपनी टीम को भी मैं खुश और पॉजिटिव माहौल में रखने की कोशिश करता हूं।

'तारक मेहता' ने पूरे किए हैं 15 साल

'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' शो का पहला प्रीमियर 28 जुलाई 2008 को हुआ था। यह शो गोकुलधाम सोसायटी में रहने वाले किरदारों जेठालाल गड़ा, उनकी पत्नी दया बेन, चंपक लाल गड़ा, टप्पू, तारक मेहता, अंजलि मेहता और अन्य लोगों के इर्द-गिर्द घूमता है। हाल ही में इस शो ने 15 साल पूरे किए थे। इस मौके पर असित मोदी ने वादा किया था कि शो में दिशा वकानी उर्फ दयाबेन का कमबैक होगा।

इन आरोपों से घिरे हैं असित मोदी

एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जेनिफर ने मोदी, प्रोजेक्ट हेड सोहेल रमानी और कार्यकारी निर्माता जतिन बजाज के खिलाफ वर्किंग प्लेस पर यौन दुर्व्यवहार की शिकायत दर्ज कराई है। वहीं शो में बावरी का किरदार निभाने वालीं एक्ट्रेस मोनिका भदौरिया ने जून में कहा था कि सेट पर रहना उनके लिए एक टॉर्चर था। शो में मेहता जी का किरदार निभाने वाले शैलेश लोढ़ा ने भी मेकर्स के खिलाफ बकाया राशि का भुगतान न करने पर मामला दर्ज कराया था।

14वें भारतीय फिल्म फेस्टिवल में होगा रानी मुखर्जी का जलवा, मास्टर क्लास का करेंगी आयोजन

इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न (आईएफएफएम) के 14वें संस्करण के लिए नामांकन की घोषणा बीते महीने हुई थी। ये भारत के बाहर होने वाला सबसे बड़ा भारतीय फिल्म महोत्सव है। इस साल के समारोह की यूएसपी के रूप में जूरी में 82 साल के ऑस्कर विजेता ऑस्ट्रेलियाई फिल्म निर्देशक ब्रूस बेरेसफोर्ड को शामिल किया गया है। वहीं अब बॉलीवुड एक्ट्रेस रानी मुखर्जी का भी नाम सामने आया है।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, बॉलीवुड एक्ट्रेस रानी मुखर्जी फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न में एक मास्टरक्लास की मेजबानी करेंगी। ये फेस्टिवल 10 अगस्त को मेलबर्न के प्रतिष्ठित आप्रवासन संग्रहालय में होने वाला है। महोत्सव का हिस्सा बनने की खुशी को साझा करते हुए रानी मुखर्जी ने कहा, 'मेलबर्न के 14वें भारतीय फिल्म महोत्सव में आमंत्रित होने पर मैं सम्मानित महसूस कर रही हूं । एक अभिनेता के रूप में, मैं ऑस्ट्रेलिया में लोगों से अविश्वसनीय प्यार पाने के लिए काफी भाग्यशाली रही हूं और मैं एक मास्टर क्लास के माध्यम से भारतीय सिनेमा में अपनी यात्रा को साझा करने के लिए उत्सुक हूं, जिसे आयोजित करने के लिए मुझे आमंत्रित किया गया है'। तो वहीं, इंडियन फिल्म फेस्टिवल ऑफ मेलबर्न का आयोजन 11 अगस्त से 20 अगस्त, 2023 के बीच आयोजित किया जाएगा।

शकील बदायूंनी ने हिंदी सिनेमा को बेहतरीन नगमों से सजाया, लिख डालीं अमर रचनाएं

मशहूर शायर और गीतकार शकील बदायूंनी को भला कौन नहीं जनता। उनके फिल्मी गीत और गजलें आज भी लोगों की जुबान पर रहती हैं। उनकी कलम में वो ताकत थी जो लोगों अपनी तरफ खींच लाती। उन्होंने जब भी कलम उठा कुछ लिखा तो वह रचना अमर हो गई। 50 और 60 के दशक में उन्होंने अपना जलवा बिखेरा। शकील बदायूंनी ने अपने करियर में 'चौदहवीं का चांद', 'प्यार किया तो डरना क्या', 'न जाओ सैंया छुड़ा के बैयां कसम तुम्हारी', 'हुस्न वाले तेरा जवाब नहीं' और 'सुहानी रात ढल चुकी' समेत कई एक से बढ़कर एक हिट गाने दिए। आज उनकी बर्थ एनिवर्सरी है। इस मौके पर जानते हैं उनसे जुड़ी कुछ दिलचस्प बातें। तो चलिए शुरू करते हैं...

नाम शकील अहमद था। मगर, बदायूं से होने के चलते उन्होंने उपनाम के तौर पर बदायूंनी लगाना शुरू किया और इस तरह वे शकील बदायूंनी बन गए।

मुंबई पहुंचकर शकील बदायूंनी की मुलाकात फिल्म निर्माता-निर्देशक ए आर करदार से हुई। उन्होंने ही बदायूंनी को संगीतकार नौशाद साहब से मिलवाया और इसके बाद तो उनकी किस्मत खुल गई। बता दें कि शकील बदायूंनी और नौशाद साहब की जोड़ी बॉलीवुड की मशहूर गीतकार और संगीतकार जोड़ियों में शुमार रही। दोनों ने न सिर्फ कई फिल्मों के लिए सुपरहिट गाने दिए, बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी इनकी दोस्ती काफी गहरी थी।

नौशाद साहब की शकील बदायूंनी से पहली मुलाकात काफी दिलचस्प थी। दरअसल इस दौरान नौशाद साहब ने शकील बदायूंनी से कुछ लिखने को कहा था। उन्होंने लिखा, 'हमदर्द का अफसाना, दुनिया को सुना देंगे, हर दिल में मोहब्बत की हम आग लगा देंगे...'। शकील साहब के इस गाने से नौशाद साहब बेहद प्रभावित हुए। नौशाद के साथ शकील साहब ने पहली बार फिल्म 'दर्द' के लिए गीत लिखे, जो सुपरहिट हुए। इसके बाद नौशाद साहब ने 'दर्द', 'दीदार', 'बैजू बावरा', 'मदर इंडिया', 'मुगल-ए-आजम', 'गंगा जमुना' और 'मेरे मेहबूब' समेत कई फिल्मों के लिए बदायूंनी से गाने लिखवाए। बॉलीवुड को कई शानदार गाने देने वाला यह गीतकार 20 अप्रैल 1970 को दुनिया छोड़कर गया। मगर शकील साहब के गाने आज भी खूब चाव से सुने जाते हैं।

शकील बदायूंनी का जन्म 3 अगस्त 1916 को उत्तर प्रदेश के बदायूं में हुआ था। पढ़ाई करने के लिए वे यूपी के अलीगढ़ गए और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से पढ़ाई की। एएमयू से निकलने के बाद शकील बदायूंनी ने दिल्ली में सप्लाई ऑफिसर के तौर पर नौकरी शुरू की। मगर, उन्हें तो धुन सवाल थी फिल्मी गीत लिखने की। लिहाजा, उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और वर्ष 1944 में मुंबई चले गए। बता दें कि शकील बदायूंनी का असली

तमन्ना भाटिया ने विजय वर्मा को बताया रियल लाइफ हीरो

तमन्ना भाटिया बीते कई दिनों से लगातार सुर्खियों बनी हुई हैं। विजय वर्मा के साथ अपने रिश्ते को सार्वजनिक करने के बाद वह लगातार चर्चा में हैं। जब भी मौका मिलता है तब ये कपल एक दूसरे की तारीफ करने में जरा भी पीछे नहीं हटते। कई बार दोनों को एक दूसरे के लिए सोशल मीडिया पोस्ट और साक्षात्कार के जरिए इशारों में प्यार का इजहार करते देखा जा चुका है।

हाल ही में एक इंटरव्यू में तमन्ना ने विजय को अपना हीरो बताया। गैलाटा के साथ एक साक्षात्कार में अभिनेत्री से विजय के बारे में अपने विचारों का उल्लेख करने के लिए कहा गया। इस दौरान उनकी तस्वीर स्क्रीन पर आ गई।

जिस पल ऐसा हुआ एक्ट्रेस शरमा गईं। फिर उन्होंने कहा कि वह उनके वास्तविक जीवन के हीरो हैं। तमन्ना इस समय रजनीकांत के साथ अपनी आगामी फिल्म जेलर का प्रचार कर रही हैं। कहा जा रहा है कि वह लोकेश कनगराज की लियो के बाद अभिनेता विजय की अगली फिल्म थलपति 68 में नजर आ सकती है।

मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो इस रोल के लिए अभिनेत्रियों की रेस में वह सबसे आगे चल रही हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने फिल्म साइन की है तो एक्ट्रेस ने जवाब दिया कि अभी तो यह सच नहीं है, लेकिन अगर ऐसा होता है तो वह इसे जरूर बताएंगी। बता दें कि थलापति 68 का निर्देशन वेंकट प्रभु कर रहे हैं।

वर्क फ्रंट की बात करें तो तमन्ना को आखिरी बार जी कर दा और सुजॉय घोष की लस्ट स्टोरीज में देखा गया था। लस्ट स्टोरीज 2 में अभिनेत्री ने विजय के साथ जमकर बोल्ड सीन दिए थे। हालांकि, जनता को ये दोनों ही सीरीज कुछ खास पसंद नहीं आई थी।

थलापति 68 को लेकर किया यह बड़ा खुलासा

अक्षय से लेकर संजय दत्त तक हिंदी फिल्मों के हीरो साउथ में खलनायक बनकर खूब हुए मशहूर

भारतीय सिनेमा अब अपनी सीमाओं को पार कर अलग-अलग क्षेत्र में अपनी पकड़ बना रहा है। किसी समय में साउथ की फिल्में केवल दक्षिण राज्यों में ही लोकप्रिय हुआ करती थी। ऐसे ही बॉलीवुड फिल्मों को केवल हिंदी पट्टी में ही पसंद किया जाता था, लेकिन अब समय बदल चुका है। मौजूदा समय में देश में हर भाषाओं में बनी फिल्में लोग देख रहे हैं। इन फिल्मों में अगल-अलग इंडस्ट्री के कलाकारों को कास्ट किया जाता है, जिससे हर क्षेत्र के दर्शकों में फिल्म को लेकर उत्सुकता बनी रहे। आज हम आपको उन बॉलीवुड अभिनेताओं के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्होंने बॉलीवुड में हीरो लेकिन साउथ में विलेन के रूप में अपनी पहचान बनाई है।

संजय दत्त

80 के दशक में संजय दत्त ने फिल्म रॉकी से अपनी शुरुआत की थी। इसके बाद संजू बाबा ने बतौर नायक कई सुपरहिट फिल्में दीं। हिंदी फिल्मों में जलवा बिखेरने के बाद संजय टॉलीवुड में भी अपनी अदाकारी का जादू दिखा चुके हैं। उन्होंने फिल्म केजीएफ चैप्टर 2 में काम किया था। फिल्म में वह अधीरा नाम के नेगेटिव किरदार में नजर आए थे। लोगों को उनकी एक्टिंग काफी पसंद आई थी।

अक्षय कुमार

अक्षय कुमार बॉलीवुड के बड़े सितारों में से एक हैं। फैंस को उनकी फिल्मों का बेसब्री से इंतजार रहता है। अक्षय को हिंदी फिल्मों में कॉमेडी, एक्शन और रोमांस के लिए जाना जाता है। हालांकि, साउथ में वह बतौर विलेन काम कर चुके हैं। रजनीकांत की फिल्म 2.0 में उन्होंने नेगेटिव रोल निभाया था। फिल्म में उनका लुक भी काफी खूंखार था।

जैकी श्रॉफ

इस लिस्ट में बॉलीवुड स्टार जैकी श्रॉफ का नाम भी शामिल है। अपने करियर में जैकी ने एक से बढ़कर एक हिट फिल्में दी हैं। हालांकि, साउथ में उन्हें विलेन के रोल से काफी लोकप्रियता हासिल हुई है। आरण्या कांडम फिल्म में उनका किरदार काफी ज्यादा खतरनाक था। इसके अलावा वह अस्त्रम, पंजा और बिगिल जैसी फिल्मों में नेगेटिव रोल में दिख चुके हैं। वह जल्द ही रजनीकांत की फिल्म जेलर में नकारात्मक भूमिका निभाते हुए नजर आने वाले हैं।

विवेक ओबेरॉय

विवेक ओबेरॉय की गिनती बॉलीवुड के सबसे प्रतिभाशाली अभिनेताओं में होती है। अब तक वह कई फिल्मों में अपनी अदाकारी का जादू बिखेर चुके हैं। वह लुसिफर नाम की फिल्म में विलेन का रोल निभा चुके हैं। इसके अलावा कडुवा में भी उन्होंने नकारात्मक किरदार निभाया था। फिल्म में पृथ्वीराज लीड रोल में थे।

यूरोप ट्रिप से अनन्या के साथ वायरल हुईं तस्वीरों पर आदित्य ने तोड़ी चुप्पी

इन दिनों अनन्या पांडे अपनी आगामी फिल्म 'ड्रीम गर्ल 2' को लेकर चर्चा में हैं। इसके अलावा एक्ट्रेस अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी खूब सुर्खियां बटोर रही हैं। उनका नाम अभिनेता आदित्य रॉय कपूर के साथ जोड़ा जा रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों सितारे बीते महीने छुट्टियां मनाने यूरोप गए। वहां से दोनों की तस्वीरें इंटरनेट पर जमकर वायरल हुईं। अब इस पर आदित्य रॉय कपूर ने चुप्पी तोड़ी है।

बता दें कि आदित्य और अनन्या के कथित अफेयर की खबरें गपशप गलियों में जमकर फैल रही हैं। ऐसी खबरें हैं कि बीते महीने दोनों सितारे पहले स्पेन गए और फिर वहां से पुर्तगाल रवाना हुए। हाल ही में एक मीडिया इंटरव्यू के दौरान आदित्य रॉय कपूर से इस बारे में सवाल किया गया और पूछा गया कि यूरोप में बिताई गईं छुट्टियों का अनुभव कैसा रहा?

इस पर एक्टर ने कहा कि उन्हें रिलैक्स करने के लिए एक ब्रेक की जरूरत थी। हालांकि, वहां मुंबई का मॉनसून बहुत याद आया। आदित्य ने कहा, 'मुझे एक ब्रेक की दरकार थी। हालांकि, इस चक्कर में मैंने मॉनसून मिस कर दिया, मुझे मुंबई का मॉनसून बहुत पसंद है और जब से मैं वापस आया हूं, एक सप्ताह से लगातार बारिश हो रही है।'

हॉलीडे के दौरान की अनन्या के साथ इंटरनेट पर लीक हुईं कुछ तस्वीरों को लेकर जब आदित्य से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि इस बारे में उन्होंने भी सुना है। एक्टर ने आगे कहा, 'यह अच्छी बात है कि मैं सोशल मीडिया पर बहुत ज्यादा एक्टिव नहीं हूं। लेकिन, निश्चित रूप से मैंने इस बारे में सुना है।' बता दें कि दोनों के अफेयर के कयास तब लगने शुरू हुए जब दोनों को बीते वर्ष कृति सेनन की दिवाली पार्टी में साथ देखा गया।

बात अनन्या पांडे के वर्क फ्रंट की करें तो उनकी फिल्म 'ड्रीम गर्ल 2' 25 अगस्त 2023 को रिलीज होगी। इसमें वह आयुष्मान खुराना के साथ स्क्रीन शेयर करती दिखेंगी। वहीं आदित्य रॉय कपूर आखिरी बार शो 'द नाइट मैनेजर' में नजर आए। अब जल्द ही वह अनुराग बासु की आगामी फिल्म 'मेट्रो इन दिनों' में दिखाई देंगे। इसमें वह सारा अली खान के साथ स्क्रीन शेयर करेंगे।

कल्कि के करिश्माई अभिनय का गवाह बनीं ये पांच फिल्में, 'गोल्डफिश' की रिलीज का काउंटडाउन शुरू

कल्कि केकलां, जी हां, कल्कि कोएचलिन नहीं जैसा कि आमतौर पर उनका नाम हिंदी में लिखा जाता है। कल्कि बताती भी हैं, 'मेरे सरनेम का उच्चारण अब भी तमाम लोग गलत ही करते हैं। लिखते तो गलत हैं ही।' कल्कि की चार साल के बाद बड़े पर्दे पर वापसी फिल्म 'गोल्डफिश' के जरिए होने जा रही है। हिंदी सिनेमा के आम दर्शकों के बीच कल्कि केकलां की पहचान फिल्म 'जिंदगी मिलेगी ना दोबारा' और 'ये जवानी है दीवानी' जैसी कमर्शियल फिल्मों के जरिए बनीं। लेकिन उनकी अदाकारी की तासीर देखनी हो तो चलिए आपको बताते हैं उनकी चुनिंदा पांच फिल्मों के बारे में...

देव डी (6 फरवरी 2009)

शरत चंद्र चट्टोपाध्याय के बंगाली उपन्यास 'देवदास' पर निर्देशक अनुराग कश्यप ने आधुनिक शैली में पंजाब और दिल्ली की समकालीन पृष्ठभूमि पर फिल्म 'देव डी' बनाई। इस फिल्म में कल्कि केकलां ने चंद्रमुखी की भूमिका निभाई थी। फिल्म को समीक्षको द्वारा सकरात्मक प्रतिक्रिया खूब मिली। इस फिल्म में न सिर्फ कल्कि के परफॉर्मेंस की खूब तारीफ हुई, बल्कि इस फिल्म में उनके प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।

मार्गरीटा विद ए स्ट्रॉ (17 अप्रैल 2015)

फिल्म 'मार्गरीटा विद ए स्ट्रॉ' में कल्कि ने सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित एक युवा महिला लैला कपूर का किरदार निभाया। लैला कपूर पढाई के लिए अमेरिका चली जाती है। जहां पर उसकी मुलाकात एक खानम से होती है और उसके साथ वह समलैंगिक रिश्ता बना लेती है। इस फिल्म में बीमारी के साथ-साथ लैला कपूर की कामुकता को स्वीकार करने की यात्रा को दिखया गया था। यह फिल्म कामुकता, समावेशन, आत्मप्रेम और आत्म स्वीकृति की चौनौतीपूर्ण अवधारणाओं के बारे में है। शोनाली बोस के निर्देशन में बनी इस फिल्म को न सिर्फ कई अंतरराष्ट्रीय समारोहों में सम्मानित किया गया, बल्कि इस फिल्म के लिए कल्कि केकलां को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिला।

वेटिंग (27 मई 2016)

फिल्म 'वेटिंग' की कहानी मुख्य रूप से दो किरदार के इर्द - गिर्द घूमती है, जो एक अस्पताल में अपने-अपने बेहोश जीवनसाथी की देखभाल करते हुए एक दूसरे से दोस्ती कर लेते हैं। इस फिल्म में कल्कि ने तारा देशपांडे और नसीरुद्दीन शाह ने प्रोफेसर शिव कुमार नटराज की भूमिका निभाई थी। इस फिल्म में कल्कि और नसीर के अभिनय की खूब तारीफ हुई थी। अनु मेनन के निर्देशन में बनी इस फिल्म को साल 2015 लंदन एशियन फिल्म फेस्टिवल के समापन समारोह में प्रदर्शित किया गया था, जहां अनु मेनन ने सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार भी जीता।

ए डेथ इन द गंज (2 जून 2017)

अभिनेत्री कोंकणा सेन शर्मा की बतौर निर्देशक पहली फिल्म 'ए डेथ इन द गंज' में कल्कि के अलावा विक्रांत मैसी, तिलोत्तमा शोम, ओम पुरी, तनुजा, गुलशन देवैया, जिम सर्भ और रणवीर शौरी जैसे कई कलाकारों ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थी। इस फिल्म में कल्कि केकलां ने मिमी की भूमिका निभाई। फिल्म को आधा दर्जन से अधिक फिल्मफेयर नामांकन प्राप्त हुए और सर्वश्रेष्ठ नवोदित निर्देशक के लिए कोंकणा सेन ने पुरस्कार भी जीता।

रिबन (3 नवंबर 2017)

फिल्म 'रिबन' की कहानी ऐसे विषय पर आधारित थी जिसके बारे में ज्यादा बात नहीं की जाती है। राखी शांडिल्य के निर्देशन में बनी इस फिल्म में कल्कि केकलां और सुमित व्यास की मुख्य भूमिका थी।

इस फिल्म में कल्कि कोचलिन ने सहाना मेहरा की भूमिका निभाई थी जिसे अनियोजित गर्भावस्था के दौरान काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है । सहाना मेहरा एक कंपनी में काम करती है। आकस्मिक गर्भावस्था की वजह से उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। इस फिल्म में यह दिखाया गया था कि कामकाजी माता-पिता जीवन और काम को संभालने में किस तरह संघर्ष करते हैं।

जब डायरेक्टर से पंगा लेना इन एक्ट्रेसेज को पड़ा भारी, रातों-रात शो से हुईं बाहर, आज तक कर रहीं काम की तलाश

फिल्मों और सीरियल्स की दुनिया में अक्सर ऐसा देखने को मिलता है कि रातों-रात किसी फिल्म या सीरियल से लीड एक्ट्रेस को रिप्लेस कर दिया गया. आज आपको छोटे पर्दे की 5 ऐसी एक्ट्रेसेज के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हें अपने शो के डायरेक्टर से पंगा लेना काफी महंगा पड़ा. न सिर्फ इन एक्ट्रेसेज को हिट शो से हाथ धोना पड़ा बल्कि आज तक इन्हें काम भी नहीं मिल पाया है.

इस लिस्ट में टीवी की 'छोटी बहू' रुबीना दिलैक से लेकर 'अंगूरी भाभी' शिल्पा शिंदे तक का नाम शामिल है. तो चलिए बताते हैं कि आखिर डायरेक्टर संग इन 5 एक्ट्रेसेज के झगड़े की वजह क्या थी.

दृष्टि धामी

टीवी की 'मधुबाला' दृष्टि धामी की खूबसूरती और अभिनय के लाखों दीवाने हैं. दृष्टि धामी टीवी के कई सुपरहिट सीरियल्स में नजर आ चुकी हैं.

लेकिन सीरियल 'मधुबाला' के दौरान उन्होंने मेकर्स पर पैसे न देने का आरोप लगाया था. इस बात की शिकायत उन्होंने सिने एंड टीवी आर्टिस्ट एसोसिएशन से भी की थी,

जिसके बाद उन्हें शो से बाहर कर दिया गया. इन दिनों ये एक्ट्रेस किसी सीरियल में नजर नहीं आ रही हैं.

दीपिका सिंह

'दीया और बाती हम ' की संध्या यानी कि एक्ट्रेस दीपिका सिंह ने भी शो के मेकर्स पर उनकी फीस से 16 लाख रुपये काटने का आरोप लगाया था. इस आरोप के जवाब में मेकर्स का कहना था कि दीपिका शो पर अक्सर लेट आया करती थीं. 'दीया और बाती हम' के बाद ये एक्ट्रेस किसी शो में नजर नहीं आईं.

शिल्पा शिंदे

शिल्पा शिंदे यूं तो काफी लंबे समय से छोटे पर्दे का हिस्सा हैं, लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा पॉपुलैरिटी सिटकॉम शो 'भाभीजी घर पर हैं' से मिली. सालों तक सीरियल में 'अंगूरी भाभी' का किरदार अदा कर ऑडियंस के दिलों में बसने वाली शिल्पा शिंदे को शो के मेकर्स से पंगा लेना काफी महंगा पड़ गया.

रुबीना दिलैक

टीवी की 'छोटी बहू' रुबीना दिलैक भी पैसों की धोखाधड़ी का शिकार हो चुकी हैं. पैसे न मिलने की वजह से उन्होंने शो के मेकर्स की शिकायत की थी. इस वजह से उन्हें शो से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया. बता दें, रुबीना दिलैक

पॉपुलर रियलिटी शो 'बिग बॉस' में नजर आई थीं. हिलहाल ये एक्ट्रेस किसी सीरियल में नजर नहीं आ रही हैं.

सोनारिका भदौरिया

'दास्तान-ए- मोहब्बत' से पॉपुलैरिटी हासिल कर चुकीं एक्ट्रेस सोनारिका भदौरिया को तो कोर्ट के चक्कर भी काटने पड़े थे. शो बंद होने पर जब उन्हें पूरी फीस नहीं मिली तो उन्होंने अदालत का दरवाजा खटखटाया.

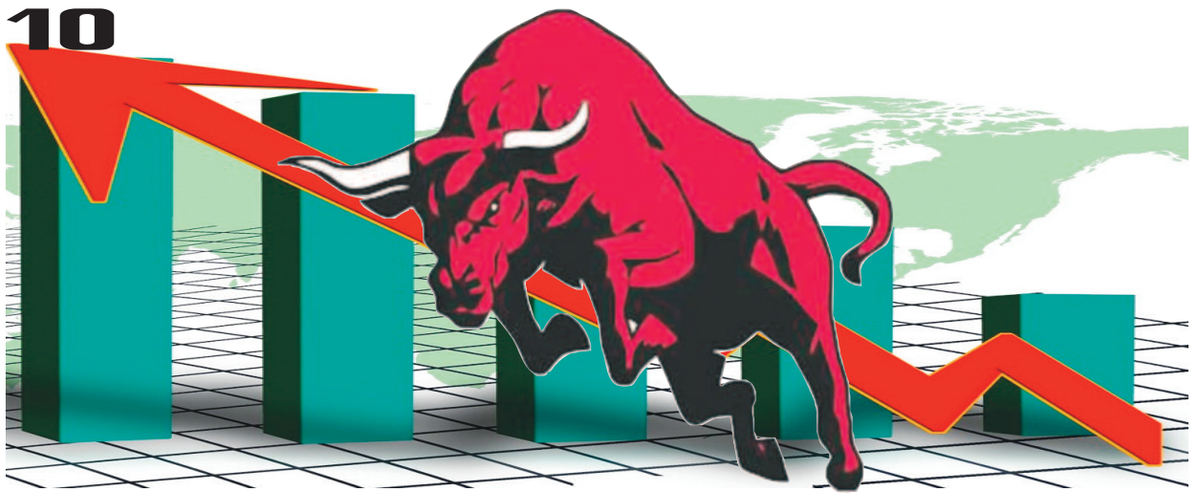

रतन टाटा से लेकर आनंद महिंद्रा तक हार्वर्ड में पढ़े हुए भारतीय बिजनेसमैन

जिन्होंने ऐसे हासिल की सफलता

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। भारत के बड़े-बड़े बिजनेसमैन ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से शिक्षा ली है। हार्वर्ड दुनिया के सबसे पुराने और सबसे प्रतिष्ठित संस्थानों में से एक है। यहां से कई बड़ी-बड़ी हस्तियों ने डिग्री हासिल की है। अरबपतियों से लेकर फेमस कलाकारों तक, यह विश्वविद्यालय हजारों प्रतिभाशाली दिमागों का घर रहा है। यहां उन भारतीयों की सूची दी गई है, जिन्होंने इस सूची में जगह बनाई है और गर्व से खुद को हार्वर्ड का पूर्व छात्र कहते हैं। आज हम उनके नेटवर्थ और सफलता के बारे में जानेंगे। पद्म भूषण पुरस्कार विजेता और बजाज समूह के फॉर्मर चेयरमैन राहुल

बजाज हार्वर्ड के पूर्व छात्र थे। इस अरबपति ने 1965 में बजाज की कमान संभाली और अपने पांच दशकों के कार्यकाल में रहे। नई दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से ग्रेजुएशन करने के बाद वह हार्वर्ड बिजनेस स्कूल में एमबीए करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका चले गए, जो दुनिया का टॉप बिजनेस स्कूल है। डेक्कन हेराल्ड की रिपोर्ट के अनुसार, बजाज ने ग्रुप के ऑटो के टर्नओवर को 7.5 करोड़ रुपये से 12,000 करोड़ रुपये तक पहुंचाया, जिसमें कंपनी का स्कूटर बजाज चेतक ने मुख्य भुमिका नभिाई। फोर्ब्स के अनुसार, 2022 में उनकी मृत्यु के समय, राहुल बजाज की कुल संपत्ति 8.2 बिलियन डॉलर थी।

रतन टाटा को कौन नहीं जानता, ये बिजनेस की दुनिया में एक फेमस हस्ती हैं। टाटा ग्रुप के पूर्व चेयरमैन ने आर्किटेक्चर में डिग्री के साथ कॉर्नेल यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर से ग्रेजुएशन की पढ़ाई की। बिजनेस टुडे के अनुसार टाटा समूह का बाजार मूल्य 26.4 बिलियन डॉलर है और यह बाजार में बड़ी कंपनी है। रतन टाटा को पद्म विभूषण और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। उन्होंने अपनी आय का करीब 60-65 फीसदी दान दिया है।

आनंद महिंद्रा की कुल संपत्ति

आनंद महिंद्रा एक फेमस कारोबारी और महिंद्रा समूह के अध्यक्ष हैं। फोर्ब्स के मुताबिक उनकी कुल संपत्ति 2.3 अरब डॉलर है। वह 1981 में मस्को में शामिल हुए और अब तक कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय से फिल्म निर्माण और वास्तुकला की पढ़ाई की और हार्वर्ड से एमबीए की डिग्री हासिल की।

लगातार दूसरे ट्रेडिंग सेशन में शेयर बाजार चौतरफा बिकवाली के साथ बंद,सेंसेक्स 542 और निफ्टी 145 अंक लुढ़का

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। इस हफ्ते लगातार दूसरा ट्रेडिंग सत्र भारतीय शेयर बाजार के निवेशकों के लिए बेहद निराशाजनक साबित हुआ है। यूरोपीय मार्केट्स के खुलने के बाद एक बार फिर दोपहर बाद भारतीय बाजारों में चौतरफा बिकवाली देखी गई। सेंसेक्स करीब 800 तो निफ्टी 230 अंक नीचे जा लुढ़का। बाजार बंद होने पर बीएसई सेंसेक्स 542 अंकों की गिरावट के साथ 65,240 और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 145 अंकों की गिरावट के साथ 19,381 अंकों पर क्लोज हुआ है। आज के ट्रेड में फार्मा, हेल्थकेयर और मीडिया सेक्टर के स्टॉक्स को छोड़ दें तो दूसरे सभी सेक्टर के शेयरों में गिरावट देखने को मिली है। बैंक निफ्टी 482 अंक या 1.07 फीसदी गिरकर बंद हुआ है। ऑटो, आईटी, एफएमसीजी, मेटल्स, एनर्जी, इंफ्रा, ऑयल एंड गैस, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स जैसे सेक्टर के शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। हालांकि इस गिरावट के बीच मिड कैप और स्मॉल कैप स्टॉक्स में जोरदार खरीदारी देखने को मिली है। बाजार में गिरावट के चलते आज के ट्रेड में निवेशकों को नुकसान हुआ है। बीएसई पर लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैप घटकर 302.39 करोड़ रुपये पर आ गया जो पिछले ट्रेडिंग सेशन में 303.29 लाख करोड़ रुपये रहा था। आज के सेशन में निवेशकों की संपत्ति में 90,000 करोड़ रुपये की कमी आई है। और बीते दो ट्रेडिंग सेशन में निवेशकों को 4.40 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हो चुका है। आज के ट्रेड में इंफोसिस 0.60 फीसदी, एनटीपीसी 0.43 फीसदी, सन फार्मा 0.40 फीसदी, कोटक महिंद्रा 0.06 फीसदी, की तेजी के साथ बंद हुआ है। जबकि टाइटन 2.40 फीसदी, बजाज फिनसर्व 2.29 फीसदी, आईसीआईसीआई बैंक 2.24 फीसदी, नेस्ले 1.99 फीसदी, एसबीआई 1.33 फीसदी, बजाज फाइनैंस 1.31 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुआ है।

आरआईएल ने लगाई 16 पायदान की छलांग

फॉर्च्यून ग्लोबल 500 की लिस्ट में बनाया ये स्थान

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। अरबपति मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज ने एक नया रिकॉर्ड बना लिया है। रिलायंस इंडस्ट्रीज ने फॉर्च्यून ग्लोबल 500 लिस्ट में टॉप 100 में जगह बना ली है। इस लिस्ट में रिलायंस इंडस्ट्रीज अब 88वें स्थान पर आ गई है और इसने ये कमाल करने के लिए 16 स्थानों का उछाल हासिल किया है। फॉर्च्यून ग्लोबल 500 लिस्ट में साल 2022 में आरआईएल 104वें नंबर पर थी और अब इसनें 16 स्थान आगे आकर 2023 की रैंकिंग में 88वां स्थान प्राप्त कर लिया है।

इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ने भी टॉप 100 में बनाई जगह

फॉर्च्यून ग्लोबल 500 रैंकिंग में इस साल 8 भारतीय कंपनियों ने अपनी जगह बनाई है और इसके तहत सरकारी ऑयल मार्केटिंग कंपनी इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन भी इस लिस्ट में टॉप 100 में एंट्री कर चुकी है। इसने 94वें स्थान पर अपना कब्जा कर लिया है। ये स्थान हासिल करने के लिए आईओसी 48 स्थान आगे आई है।

दो साल में आरआईएल ने लगाई 67 स्थानों की छलांग

रिलायंस इंडस्ट्रीज पिछले दो साल में फॉर्च्यून ग्लोबल 500 लिस्ट में 67 स्थान ऊपर आ चुकी है। साल 2021 में ये इस लिस्ट में 155वें स्थान पर थी। फॉर्च्यून

ग्लोबल 500 लिस्ट में भारतीय कंपनियों में रिलायंस इंडस्ट्रीज का स्थान सबसे ऊपर है और ये 88वें स्थान पर है जो किसी भारतीय कॉरपोरेट फर्म का सर्वोच्च स्थान है। रिलायंस इंडस्ट्रीज लगातार 20 सालों से इस फॉर्च्यून ग्लोबल लिस्ट में अपना स्थान बनाए हुए है। ये भारत की किसी भी प्राइवेट सेक्टर कंपनी का इस लिस्ट में बने रहने का सबसे लंबा स्थान है।

और कौन सी कंपनियां हैं इस लिस्ट में शामिल

लाइफ इंश्योरेंस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया को हालांकि इस साल नुकसान हुआ है और ये 9 स्थान फिसलकर फॉर्च्यून ग्लोबल 500 लिस्ट में 107वें स्थान पर आ गई है। वहीं ऑयल एंड नैचुरल गैस कॉरपोरेशन का इस लिस्ट में 158वां स्थान है। भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड की रैंकिंग इस लिस्ट में 233 वें स्थान पर है।

पवन मुंजाल के ठिकानों से 25 करोड जब्त

हीरो कार्प के चेयरमैन पर मनी लांड्रिंग के केस में ईडी की कार्रवाई

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। देश की सबसे बड़ी टू-व्हीलर कंपनियों में से एक हीरो मोटोकॉर्प सुर्खियों में है। इस बार सुर्खियों की वजह ठीक नहीं है। दरअसल ईडी ने हीरो मोटो के एमडी पवन मुंजाल समेत कुछ लोगों के परिसरों पर हाल ही में छापेमारी की है। ईडी को इस छापेमारी में तो पवन मुंजाल के घर से करोड़ों के जेवर-गहने और कैश मिले हैं।

इसी सप्ताह ईडी ने की कार्रवाई

प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी ने 69 साल के अरबपति पवन मुंजाल और अन्य लोगों के परिसरों पर मंगलवार को छापेमारी की थी। ईडी की यह कार्रवाई मनी लॉन्ड्रिंग के एक मामले में चल रही जांच से जुड़ी हुई है। इसके तहत ईडी ने मुंजाल के दिल्ली व गुरुग्राम में स्थित घरों व दफ्तरों की तलाशी ली। इसे लेकर पहले ही मनी लॉन्ड्रिंग रोकथाम कानून के तहत प्राथमिकी दर्ज की जा चुकी है।

कंपनी ने कहा- कर रहे हैं पूरा सहयोग

देश की सबसे बड़ी टू-व्हीलर कंपनी ने भी ईडी की कार्रवाई के बाद बयान जारी किया था। उसने कहा था कि ईडी के अधिकारी हमारे दिल्ली व गुरुग्राम स्थित कार्यालयों और हमारे एमडी डॉ.पवन मुंजाल के घर पर आए थे। हम एजेंसी के साथ लगातार सहयोग कर रहे हैं। बाद में ईडी ने भी कार्रवाई के बारे में

आधिकारिक तौर पर बताया और साथ ही जब्ती की भी जानकारी दी।

इनकम टैक्स डिपार्टमेंट भी मार चुका है छापा

ईडी के अनुसार, इस छापेमारी में उसे करोड़ों के संदेहास्पद सामान मिले हैं, जिनमें 25 करोड़ रुपये मूल्य की विदेशी व भारतीय मुद्राएं, सोने तथा हीरे के आभूषणों और कुछ आपत्तिजनक दस्तावेज शामिल हैं। इससे पहले पिछले साल इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने भी कर चोरी के मामले में मुंजाल व उनसे जुड़े भवनों की तलाशी ली थी। तब आयकर विभाग के अधिकारियों ने बताया था कि उन्हें गलत तरीके से किए गए 800 करोड़ रुपये के कारोबारी खर्च का पता चला है। उसके अलावा इनकम टैक्स डिपार्टमेंट ने ये भी कहा था कि उसे दस्तावेजों से दिल्ली में जमीन खरीदने के लिए 60 करोड़ रुपये की अघोषित आय का इस्तेमाल करने की जानकारी मिली है।

पांच साल पहले ऐसे खुला था मामला

दरअसल यह पूरा मामला करीब पांच साल पहले की एक घटना से जुड़ा हुआ है। 20 अगस्त 2018 को मुंजाल लंदन यात्रा पर जा रहे थे। उस दौरान सीआईएसएफ ने उनके साथ जा रहे एक एक्सीक्यूटिव से 81 लाख रुपये की फॉरेन करेंसी बरामद की थी। सीआईएसएफ ने फॉरेन करेंसी उस समय बरामद की थी, जब संलिप्त एक्सीक्यूटिव ब्रिटिश एयरवेज के प्लेन में सवार होने वाला था।

देश से बाहर गई इतने करोड़ की करेंसी

मामला वहीं से खुला और फिर सीबीआईसी की जांच इकाई डीआरआई की शिकायत पर ईडी ने मामला दर्ज किया। इस मामले में थर्ड पार्टी सर्विस प्रोवाइडर कंपनी साल्ट एक्सपीरियंस एंड मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड को भी पार्टी बनाया गया है। ईडी के अनुसार, साल्ट एक्सपीरियंस एंड मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड ने 2014-2015 से 2018-2019 के दौरान करीब 54 करोड़ रुपये के बराबर विदेशी मुद्रा को अवैध तरीके से देश से बाहर पहुंचाया। इन पैसों का इस्तेमाल पवन मुंजाल के निजी खर्चों के लिए किया गया।

सोने ने खोई बढ़त-गिरावट के दायरे में फिसला, चांदी की चमक हुई हवा

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। सोने के दाम में गिरावट देखी जा रही है और ये करीब 150 रुपये या इससे थोड़ा ऊपर टूटा है।

हालांकि आज की लाइमलाइट चांदी लूट रही है क्योंकि ये बेहद सस्ते दामों पर मिल रही है। सोने के दाम में कमजोरी से ज्यादा ध्यान चांदी की जबरदस्त गिरावट पर जा रहा है। जानिए आज चांदी आपको कितनी सस्ती मिल सकती है-

चांदी के दाम कहां पर हैं

मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज यानी एमसीएक्स पर चांदी के दाम देखें तो इसके दामों में 625 रुपये की गिरावट देखी जा रही है और ये 0.86 फीसदी टूटकर कारोबार कर रही है। कल चांदी 72960 रुपये प्रति किलो पर बंद हुई थी और आज ये 72335 रुपये प्रति किलो के रेट पर मिल रही है। चांदी के दाम आज नीचे में 72264 रुपये तक गिरे थे और ऊपर में 72749 रुपये प्रति किलो तक पहुंचे थे।

चांदी के ये दाम इसके सितंबर वायदा के लिए हैं।एमसीएक्स पर सोने के दाम 145 रुपये या 0.24 फीसदी की तेजी के साथ बने हुए हैं। आज सोने में कमोडिटी बाजार में और रिटेल बाजार में कमोबेश एक जैसी गिरावट देखी जा रही है। एमसीएक्स पर सोना 145 रुपये की गिरावट के साथ है और रिटेल बाजार में सोना 150-170 रुपये की रेंज में गिरकर कारोबार कर रहा है। सोने के दाम आज 59326 रुपये प्रति 10 ग्राम पर हैं जो कल 59471 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। सोना आज 59300 रुपये प्रति 10 ग्राम पर नीचे तक गया था और ऊपर में 59439 रुपये तक गया था। सोने के ये दाम इसके अक्टूबर वायदा के लिए हैं।

क्यों आ रही है सोने और चांदी में गिरावट

सोना और चांदी इस समय गिरावट के दायरे में हैं क्योंकि इनके सामने डॉलर की कीमतों में तेजी देखी जा रही है। कीमती मेटल्स और डॉलर के बीच विरोधाभासी अंतर होता है और जब डॉलर के दाम चढ़ते हैं तो कीमती मेटल्स के दाम नीचे आते हैं। इसके चलते ही सोना और चांदी अपनी चमक खो रहे हैं।

गायब' होने के तीन साल बाद जैक मा ने एग्रोटेक स्टार्टअप में किया निवेश

अब खेती करेंगे चीनी कारोबारी!

'नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। चीनी अरबपति और अलीबाबा के संस्थापक जैक मा ने चीन में एक मत्स्य पालन और एग्रो स्टार्टअप में निवेश किया है। जैक मा ने कभी एजुकेशन सेक्टर से शुरुआत करके चीन में अमेजन जैसी अलीबाबा ई कॉमर्स कंपनी बना दी थी और अब इन्होंने एग्रो सेक्टर में एंट्री ली है। साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार, एग्रोटेक स्टार्टअप, 1।8 मीटर्स मरीन टेक्नोलॉजी (झेजियांग) कंपनी में निवेश किया है। चीनी अरबपति ने इस कंपनी में करीब 15

मिलियन डॉलर का नविश किया है। SCMP के अनुसार, मा की निवेश-होल्डिंग कंपनियों में से एक, हांगजो डेजिंगटौ नंबर 22 आर्ट्स एंड कल्चर कंपनी की स्टार्टअप में 10 फीसदी की हिस्सेदारी है। पिछले तीन साल से गायब होने के बाद जैक मा ने नए बिजनेस में एंट्री ली है। करीब तीन साल तक चीनी अधिकारियों के विवाद के बाद ये गायब थे।

क्या था चीनी सरकार से विवाद

जैक मा ने अक्टूबर 2020 के एक भाषण के बाद चीनी अधिकारियों को नाराज कर दिया, जिसमें उन्होंने चीन की वित्तीय-नियामक प्रणाली की आलोचना की और चीनी बैंकों पर मोहरे की दुकान मानसिकता के साथ काम करने का आरोप लगाया। उनके इस बयान के बाद कंपनी पर जांच की गई और चीनी सरकार की ओर से कार्रवाई भी की गई। इसके बाद से ही बिजनेस को लेकर एक्टिव नहीं थे। कई सालों तक गायब रहने के दौरान जैक मा एग्रोटेक का अध्ययन करने हुए दुनिया की यात्रा की।

इन देशों में गए जैक मा

अक्टूबर 2021 में मा स्पेन में पर्यावरण संबंधी एग्रीकल्चार और टेक्नोलॉजी के बारे में सीख रहे थे। इसके अलावा, उन्होंने इस समय के दौरान नीदरलैंड , जापान और थाईलैंड की भी यात्रा की थी। इसके दौरान उन्होंने एग्रोटेक सेक्टर के कई सारी बातों पर अध्ययन किया। वहीं इस साल मई में, टोक्यो कॉलेज ने घोषणा की कि मा टिकाऊ कृषि और खाद्य उत्पादन पर शोध करते हुए एक शिक्षण पद संभालेंगे। जैक मा 2019 में अलीबाबा से रिटायर्ड हो गए थे और अब ये जैक मा फाउंडेशन के बोर्ड में पद संभाल रहे हैं।

अच्छी व अनूठी तकनीक अपनाने की सलाह

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। संयुक्त राज्य अमेरिका स्थित आईटी स्टाफिंग कंपनी ओएनईएसटीओपीडी ने एएस राव नगर कार्यालय में अपनी भारतीय शाखा की छठवीं वर्षगांठ मनाई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जनसेना पार्टी के मुख्य कोषाध्यक्ष एवी रत्नम रहे। पेशे से सीए हैं और कोनिडेला पवन कल्याण के निजी लेखा परीक्षक के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने कार्यालय का दौरा किया और ओएनईएसटीओपीडी के अर्ध-वार्षिक पुरस्कारों की प्रस्तुति में भाग लिया। उन्होंने अपनी कैरियर यात्रा साझा की और कर्मचारियों को प्रेरित किया। इसके अलावा उन्होंने कर्मचारियों को कुछ अच्छी और अनूठी तकनीकें अपनाने की सलाह दी। उन्हें अपने कैरियर में अपने लक्ष्यों तक पहुंचने में मदद करेगी। कंपनी की स्थापना के बाद अपना जबरदस्ती योगदान देने वाले ऋत्विक और विवेक को प्रमुख योगदानकर्ता पुरस्कार प्राप्त हुआ और असाधारण जयंत को चीफ क्लोजर पुरस्कार भी मिला, जहां कुछ अन्य कर्मचारियों, अश्वन, अर्चना, संकीर्थ, वरुण और विवेक ने अन्य प्रतिस्पर्धी पुरस्कार प्राप्त किया। इस अवसर पर संगठन संचालन प्रमुख भारत अश्निरुद्ध रेड्डी कोलन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

बीओई ने लगातार 14वीं बार ब्याज दरों में किया इजाफा

15 साल के उच्चतम स्तर 5.25% पर पहुचा

लंदन, 3 अगस्त (एजेंसियां)। बैंक ऑफ इंग्लैंड ने गुरुवार को लगातार 14वीं बार अपनी प्रमुख ब्याज दर में चौथाई अंक की बढ़ोतरी कर इसे 5.25% कर दिया है। यह फैसला ब्रिटेन में मुद्रास्फीति की उच्च स्थिति को देखते हुए लिया गया है। बीओई ने दर को 15 साल के उच्चतम स्तर तक बढ़ा दिया और एक नई चेतावनी दी कि ऋणों की लागत कुछ समय के लिए ऊंची बनी रह सकती है। अमेरिकी फेडरल रिजर्व या यूरोपीय सेंट्रल बैंक की ओर से पिछले हफ्ते दरों में एक चौथाई अंक की वृद्धि के बाद बीओई की मौद्रिक नीति समिति ने भी ब्याज दरों में वृद्धि का फैसला लिया। बीओई ने दरों पर कहा, एमपीसी यह सुनिश्चित करेगी कि मुद्रास्फीति को 2% के लक्ष्य पर वापस लाने के लिए बैंक दर पर्याप्त रूप से प्रतिबंधात्मक हो। रिपोर्ट में कहा गया है, 'मुद्रास्फीति के लगातार अधिक दबाव के कुछ जोखिमों में कमी आ रही है, ऐसा लगता है। ब्रिटिश मुद्रास्फीति पिछले साल 41 साल के उच्चतम स्तर 11.1% पर पहुंच गई और जून में यह 7.9% तक गिर गई, जो किसी भी प्रमुख अर्थव्यवस्था में सबसे अधिक है। पिछले हफ्ते रॉयटर्स की ओर से किए गए सर्वेक्षण में अर्थशास्त्रियों ने अनुमान लगाया था कि बीओई दरें इस साल के अंत में 5.75% पर पहुंच जाएंगी।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

ग्रह	स्थिति		लग्नारंभ समय	
सूर्य-	कर्क	में	मेष--	22-46 बजे
चंद्र-	कुंभ	में	वृष--	00-29 बजे
मंगल	सिंह	में	मिथुन..	02-31 बजे
बुध-	सिंह	पें	कर्क...	03-42 बजे
गुरु-	मेष	में	सिंह...	06-55 बजे
शुक्र-	सिंह	में	कन्या..	09-01 बजे
शनि-	कुंभ	में	तुला...	11-06 बजे
राहु-	मेष	में	वृश्चिक.	13-16 बजे
केतु-	तुला	में	धनु.....	15-30 बजे
			मकर..	17-37 बजे
			कुंभ...	19-27 बजे
			मीन ..	21-05 बजे

श्री पिंगल नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- **2080**
शक संवत् **-1945,** सूर्य - दक्षिणायने ,ऋतु-वर्षा
महावीर निर्वाण संवत् **-2549,**हिजरी सन् **-1444**
कलियुग अवधि-**432000** सूर्योदय- 05-59 सूर्य अस्त- 18-45
भोग्य कलि वर्ष-**426876**
कलियुग संवत् **-5124** वर्ष,
कल्पारंभ संवत् **-1972949124**
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-**1955885124**
दिशाशूल -- पश्चिम - दही खाकर घर से निकले
तिथि- तृतीया - **12 -45** तक उपरान्त चतुर्थी
मास - अं.श्रावण कृष्ण पक्ष , शुक्रवार **04 August**
नक्षत्र - शतभिषा - **07-07** तक उपरान्त पूर्वभाद्रपद
योग - शोभन - **06 - 12** - तक उप अतिगण्ड
करण- विष्टि - **12 -45** - तक उप- बव
विशेष:- चतुर्थी व्रत
व्रत -त्योहार - चन्द्रोदय रात्री- **21-37**

विशेष:- राशिफल ग्रहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश के लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 10:46 से 12:22 तक

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र Hyd,Sec

दिन का चौघड़िया		रात का चौघड़िया	
चंचल.	05:59 - 07:34 शुभ	रोग	18:45 - 20:11 अशुभ
लाभ	07:34 - 09:10 शुभ	काल	20:11 - 21:35 अशुभ
अमृत	09:10 - 10:46 शुभ	लाभ	21:35 - 22:58 शुभ
काल.	10:46 - 12:22 अशुभ	उत्पात	22:58 - 00:22 अशुभ
शुभ.	12:22 - 13:58 शुभ	शुभ	00:22 - 01:46 शुभ
रोग	13:58 - 15:35 अशुभ	अमृत.	01:46 - 03:10 शुभ
उत्पात	15:35 - 17:11 अशुभ	चंचल.	03:10 - 04:34 शुभ
चंचल	17:11 - 18:45 शुभ	रोग	04:34 - 05:59 अशुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,)

आज आप जो भी कुछ शुरू करेंगे ,उसमे चाहे कितनी ही बाधाएं आयें,आपको सफलता मिलनी तय है । दिन के अंत तक आप दूसरों से फिर से बेहतर सम्बन्ध बना पायेंगे ।अपनी प्रकृति में एक जरुरी बदलाव लायें-हर सम्बन्ध में केवल अधिकार जताने की कोशिश में ना रहें । सबको बराबरी का दर्जा दें और आपको भी बदले में सबसे प्यार मिलेगा ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,)

आज का दिन गृहों की स्थिति के कारण उलझन में डालने वाला रहेगा । आप किसी परेशान करने वाली समस्या के बारे में लगातार सोचते रहेंगे । लेकिन केवल सोचते रहने से कुछ समाधान हाथ न लगेगा । आप जैसा सोच रहे थे आज आपको उससे विपरीत सूचनाएं मिलेंगी जिसके कारण आपको अपने पहले से सोचे हुए में बदलाव करना पड़ेगा ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,)

कुछ भ्रम की स्थिति आज आपके कार्य क्षेत्र में आने की संभावना है। आप अपने कार्य क्षेत्र में काफी अच्छे तरीके से कार्य कर रहे है , साथ ही साथ आपको एक व्यापार में शामिल होने के लिए एक प्रस्ताव मिल सकता है जो काफी भरोसेमंद है और पुरस्कार से भरपूर भी परन्तु इस तरह का प्रस्ताव आप ने पहले न देखा न सुना इसलिए आप अनिर्णय की स्थिति में रहेंगे ।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,)

इस समय आपके जीवन में पुराने सम्बन्ध और संपर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । आपके ऊपर हर जगह बहुत अच्छा कार्य करने का काफी दबाव होगा लेकिन आपको यह समझने की जरुरत है कि ज्यादा दबाव आपके खुद के तय किये हुए बहुत ऊँचे मानकों के कारण है । ईमानदारी और एकाग्रता आपको बहुत आगे ले जायेगी,लेकिन अपने आदर्शों और यकीन पर कायम रहें ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,)

आज आप खुद की जरुरत से अधिक आलोचना करने के मूड में हैं । आपको भी पता है कि आपकी अधिकतर चिंताएं निरर्थक हैं,फिर भी आप चिंता करते रहते हैं । इसका एकमात्र समाधान यह है कि अपने किसी ऐसे करीबी से सा अपनी चिंताओं के बारे में बात करें जो आपको सहारा दे सके । इससे पहले कि आप विकर्षित अनुभव करें ,आपको किसी विश्वसनीय व्यक्ति से सलाह लेनी चाहिए ।

कन्या (टो, पा, पी, पू ,ष, ण, ठ, पे ,पो,)

आपको अपने कामों को पूरा करने के लिए बहुत कम साधन उपलब्ध होंगें और इससे आपके काम में बाधा पहुचेगी । इससे परेशान न हों,आपको दिन के अंत तक अपनी पसंद का काम और साधन दोनों ही मिल जायेंगे । आप प्रकृति से ही मेहनती हैं और आप जिम्मेदारियों के साथ साथ स्वतंत्रता का भी आनंद लेंगे ।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,)

आज आप अधिकार जताने के मूड में हैं । आप सबसे आगे रहकर अपना अधिकार जताना चाहते हैं ।इस बारे में सावधान रहें कि आपको अभिमानी न समझा जाए । आप न चाहते हुए भी किसी को परेशान कर सकते हैं । अगर आपको लगता भी है कि आप सब जानते हैं और सबसे बेहतर कर सकते हैं तब भी कार्य में औरों का सहयोग लेने की कोशिश करें ।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,)

आपको आगे बढने से बहुत से अवसर मिलेंगे लेकिन उन सबको हासिल करने की जल्दी में ना रहें । अपने सभी विकल्पों को ध्यान से सोच समझकर ही आगे बढ़ें ।अपने दोस्तों के साथ भी बाँटें । यह ऐसा समय होगा जब आपको कई प्रयास करने होंगें ।सब कुछ भाग्य पर ना छोड़ें । आपके कार्य ही आपके भाग्य का निर्माण करेंगे ।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे)

आप एक आशावादी व्यक्ति हैं और आज यह बात सबको जान्ने देने और इससे लाभ उठाने का दिन है । इससे आपकी छवि एक प्रेरणात्मक वक्ता की बनेगी,जिसकी कोशिश आप लम्बे समय से करते आ रहे हो । समाज में आपके सम्बन्ध जिन लोगों के साथ बहुत अच्छे नही हैं ,उनके साथ भी आपके संबंधों में अब सुधार आना शुरू हो जाएगा ।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी)

आज अपने अपने ही भीतर शक्ति का नया-अद्वितीय श्रोत ढूँढ लेंगे और आपको यह अनुभव होने लगेगा कि आप अपने जीवन में जिन समस्याओं से अब जूझ रहे हैं ,उनसे निपटने के लिए आपको किसी भी बाह्य मदद की जरुरत नही है । आप आसानी से खुद ही सब कर सकते हैं,इस बात का अनुभव आपको आज हो जाएगा ।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,)

आज आप महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने सम्बन्धियों से बात कर सकते हैं । प्यार से बातचीत करें और नम्र बने रहें । अगर आप अभी स्थिति को नही संभाल पा रहें हैं तो अभी इसे छोड़ दें । अगर मूड हल्का करना चाहते हैं तो शाम को किसी समारोह में भाग लें । आध्यात्मिकता और विश्वास पर फोकस करने से आपको सहायता मिलेगी ।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची)

आपका सकारात्मक दृष्टिकोण आपको सकारात्मक कदम उठाने के लिए ही प्रेरित करेगा । इससे आपको भविष्य में बहुत लाभ मिलेगा । अगर कोई आपसे उलझने की कोशिश करता भी है तो आप शांति बनाये रखें और दृढ़ता से अपनी बात सामने रखें । आज आपकी धार्मिक तथा रहस्य विज्ञान के कार्यों में रूचि बनेगी ।

पं. महेशचन्द्र शर्मा 9247132654, 8309517693

मेवात के मुस्लिम बाबर के खिलाफ जंग लड़े थे

जिस नूंह से फैली हिंसा, वहां 80% मुस्लिम, गांधी कहते थे देश की रीढ़

गुरुग्राम, 3 अगस्त (एक्सक्लूसिव डेस्क)। इतिहास खंगालें तो साल 1527 की बात है यानी आज से करीब 500 साल पहले। मुगल शासक बाबर और राजपूत राजा राणा सांगा के बीच उत्तर भारत पर वर्चस्व के लिए खानवा की जंग चल रही थी। इसमें हसन खान मेवाती राजपूतों का साथ दे रहे थे। बाबर के कब्जे में हसन खान का बेटा था। बाबर ने हसन के बेटे को रिहा कर दिया और इस्लाम की दुहाई देते हुए अपने खेमे में मिल जाने का प्रस्ताव दिया।

हसन खान मेवाती ने इसके बावजूद राणा सांगा का साथ दिया। इस जंग में राणा सांगा की हार हुई और हसन खान को अपनी जान से हाथ धोना पडा। हसन खान मेवात के मेव मुसलमान थे। ये समुदाय पिछले कुछ दिनों से फिर चर्चा में है। क्योंकि हरियाणा का मेवात इलाका हिंसा में झुलस रहा है। जिस नूंह जिले से हिंसा की चिनगारी उठी, वहां करीब 80फीसद आबादी मुस्लिम है। इनमें ज्यादातर मेव मुसलमान हैं। मेवात के मेव मुसलमानों का ओरिजिन, इतिहास, रीति-रिवाज की पूरी कहानी जानते हैं।

ईरान से आए या हिंदू राजपूतों ने धर्म बदल लिया

हरियाणा का पूर्वी मेवात जिला और राजस्थान के अलवर और भरतपुर जिले के कुछ हिस्से शामिल हैं, जहां मेव करीब 1 हजार साल से रह रहे हैं। मेव मुस्लिमों के ओरिजिन को लेकर कई थ्योरी हैं। कुछ लोग कहते हैं कि इनकी जड़ें ईरान में हैं। वहीं दूसरे इन्हें मीणा जनजाति से जोड़ते हैं।

एक थ्योरी के मुताबिक मेव हिंदू राजपूत थे। इन लोगों ने 12वीं और 17वीं शताब्दी के बीच औरंगजेब के शासनकाल तक इस्लाम अपना लिया था। ब्रिटिश एरा में मीणा से मेव बनने की थ्योरी सबसे पहले एथनोग्राफर और अलवर स्टेट के पॉलिटिकल एजेंट मेजर पी डब्ल्यू पॉवलेट ने दी। उन्होंने बताया कि मेव समुदाय मीणाओं से जुड़ा है।

पॉवलेट ने 1878 के उलवुर के गजेटियर (उलवुर अब अलवर) में लिखा है- मेव और मीणा शब्दों के बीच समानता से पता चलता है कि यह मीणा से निकला हुआ छोटा रूप है। दोनों समुदायों (सिंगल, नाइ, डुलोत, पिमडालोत, डिंगल, बालोट) में कई कुलों के नाम समान हैं।

एक और कहानी खान उपाधि से जुड़ी हुई है। साल 1355 में कोटला किले के जादौन राजपूत राजा लाखन पाल के दो बेटे कुंवर सोनपर पाल और कुंवर

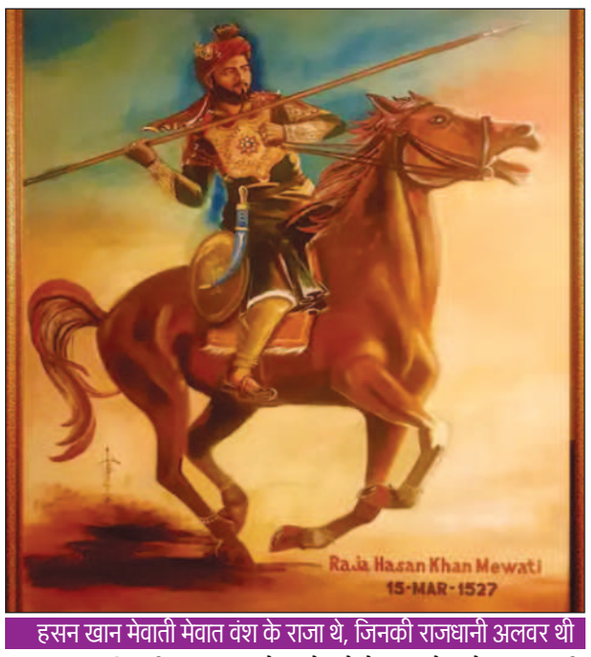

हसन खान मेवाती मेवात वंश के राजा थे, जिनकी राजधानी अलवर थी

समर पाल दिल्ली सल्तनत में सुल्तान फिरोज शाह तुगलक के यहां काम करते थे। एक बार फिरोज शाह तुगलक शिकार पर गए थे। दोनों भाई कुंवर सोनपर पाल और समर पाल भी उनके साथ थे। इस दौरान एक बाघ ने सुल्तान पर हमला कर दिया। ऐसे में कुंवर सोनपर पाल ने अपने शानदार तीरंदाजी कौशल से बाघ को मारकर सुल्तान को बचा लिया। इसके बाद सुल्तान ने दोनों भाइयों को खान की उपाधि दी और कुंवर सोनपर पाल का नाम नाहर खान कर दिया और कुंवर समर पाल का नाम बदलकर छज्जू खान कर दिया। इतिहासकार शैल मायाराम ने 'अगेंस्ट हिस्ट्री, अगेंस्ट स्टेट: काउंटरपरस्पेक्टिव फ्रॉम द मार्जिन्स' में इसका जिक्र किया है।

साल 1372 में फिरोज शाह तुगलक ने मेवात का शासन राजा नाहर खान मेवाती को सौंप दिया था। राजा नाहर खान ने ही मेवाती शासकों को 'वली-ए-मेवाती' उपाधि दी थी। उनके वंशज 1527 तक इसी उपाधि का इस्तेमाल करते रहे। बाबर से लड़ने वाले हसन खान इन्हीं के वंशज थे।

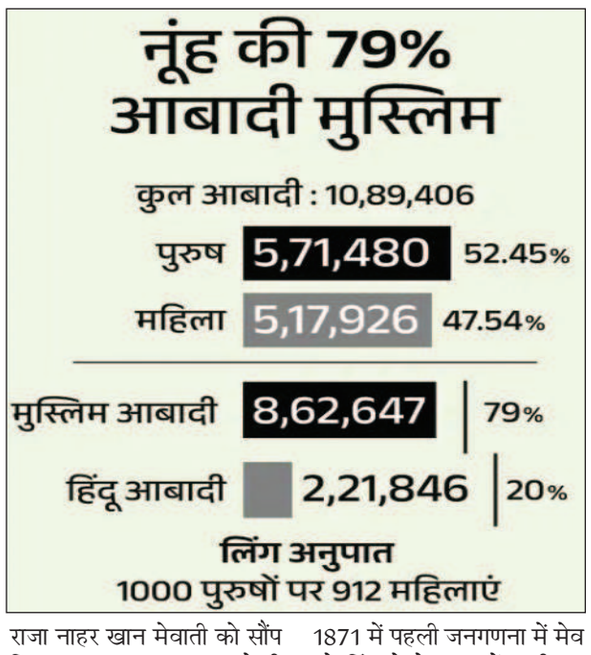

1871 की जनगणना में हिंदू थे, 1901 से मुस्लिम

सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज के प्रोफेसर हिलाल अहमद के मुताबिक 1871 में पहली जनगणना में मेव को हिंदुओं के रूप में सूचीबद्ध किया गया था। वहीं 1901 की जनगणना में मुसलमानों के रूप में।

मेव पहले हिंदू और इस्लामी दोनों रीति-रिवाजों का पालन करते थे। हिंदू और मुस्लिम महिलाएं मिलकर कुओं की पूजा किया करती थीं, जिसे 'हकीका' कहा जाता था, लेकिन 1926 में जब आर्य समाजियों ने शुद्धि और संगठन आंदोलन शुरू किया तब तब्लीगी जमात ने मेव समुदाय को फिर से इस्लामी खेमे में शामिल कर लिया। कद-काठी और पहनावे को देखें तो मेव मुस्लिमों की फेटा पगड़ी और गैर मेव की पगड़ी एक जैसी है।

महिलाएं बुर्का नहीं बल्कि सिर पर हल्का घूंघट रखती हैं। वे हिंदुओं की तरह एक ही गोत्र में शादी नहीं करते। हालांकि, इस्लाम चचेरे भाइयों के साथ शादी की अनुमति देता है। कई परिवार अभी भी बच्चों को उनके हिंदू नामों से बुलाते हैं। जैसे अमर सिंह, चांद सिंह, सोहराब सिंह मेव। इनमें खान जैसे उपनाम उनकी मुस्लिम पहचान को व्यक्त करने के लिए जोड़े गए हैं।

इतिहासकार शैल मायाराम ने साल 2000 में एक लेख में लिखा- 1947 में भारत का बंटवारा होने के बाद मेवात रीजन में भी सांप्रदायिक दंगे हुए। उस वक्त अलवर और भरतपुर स्टेट में लगभग 2 लाख मेव रहते थे। भरतपुर में इस दौरान 30 हजार मेव मारे गए। यह आधिकारिक आंकड़ा था। वहीं अलवर में मारे गए और विस्थापितों की संख्या का कोई आंकड़ा उपलब्ध नहीं है। इस दौरान जो लोग हिंसा से बच गए वे नूंह, रेवाड़ी और सोहना के वेटिंग कैंपों में पहुंचे जो उस वक्त पंजाब में था। वेटिंग कैंप में लोग तब तक रहते थे, जब तक उन्हें पाकिस्तान भेज नहीं दिया जाता था।

इसी दौरान अखिल भारतीय मेव पंचायत के सचिव और यूनियनिस्ट पार्टी के नेता अब्दुल हई ने कम्युनिस्ट नेता पीसी जोशी से बात की। माना जाता है कि जोशी ने कहा था कि केवल गांधी ही शांति ला सकते हैं। मेव मुस्लिमों के सबसे सम्मानित और प्रतिष्ठित नेता चौधरी यासीन खान के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने 20 सितंबर 1947 को दिल्ली के बिड़ला हाउस में गांधी जी से मुलाकात की। इस दौरान मेवों ने गांधी जी से कहा कि हम पाकिस्तान जाने के बजाय मरना पसंद करेंगे। इसी दौरान गांधी जी को घासेड़ा आने का न्योता दिया गया। यहां पर भी भरतपुर और अलवर से आए मेव शरणार्थी रुके हुए थे। इसके बाद गांधी जी घासेड़ा गांव पहुंचे। उन्होंने मेवों को देश की रीढ़ की हड्डी बताया और पाकिस्तान नहीं जाने की सलाह दी। इसके बाद करीब 50 फीसदी मेव पाकिस्तान नहीं गए।

फिलहाल 20 लाख मेव मुख्य रूप से हरियाणा के मेवात जिले, अब नूंह और राजस्थान के निकटवर्ती अलवर और भरतपुर में फैले हुए हैं।

पत्नी और तीन बेटियों को फावड़े से मार डाला

घर पर सो रहे थे तभी किया हमला, कमरे में मिली चारों की लहूलुहान लाश

जांजगीर-चांपा, 3 अगस्त (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के जांजगीर जिले के देवरी गांव में देशराज कश्यप नाम के शख्स ने पत्नी और 4 बेटियों की फावड़े से वार कर हत्या कर दी। बुधवार रात को मकान से चारों की लाश मिली है। वारदात के बाद से आरोपी घर को बाहर से बंद कर फरार हो गया था। पुलिस ने 2 अगस्त की रात आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। मामला बलौदा थाना अंतर्गत पंतोरा चौकी क्षेत्र का है।

जानकारी के मुताबिक, ग्राम देवरी में देशराज कश्यप अपनी पत्नी मोंगरा बाई (40) और 3 बेटियां पूजा (16), भाग्य लक्ष्मी (10) और याचना (6) के साथ रहता था। आरोपी का पिछले 10 साल से मानसिक रोग का इलाज चल रहा था। 31 जुलाई की रात खाना खाने के बाद मां और तीनों बेटियां कमरे में सोने के लिए चली गईं। रात में ही आरोपी देशराज उठा और फावड़े से सो रही पत्नी और तीनों बेटियों को मार डाला।

दो दिन परिवार का कोई सदस्य नहीं दिखा तो हुआ शक

1 अगस्त और 2 अगस्त को दिनभर लोगों ने परिवार के किसी भी सदस्य को नहीं देखा, तो उन्हें अनहोनी की आशंका हुई। पड़ोसियों ने सरपंच को मामले की जानकारी दी। सरपंच भी देशराज के घर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी।

पुलिस मौके पर पहुंची और घर का दरवाजा खुलवाया। अंदर पत्नी मोंगरा बाई और तीनों बेटियों की लाश लहूलुहान हालत में पड़ी थी। पूरे कमरे और घर में खून ही खून फैला हुआ था। एक लाश दरवाजे पर भी पड़ी मिली। एक बेटी की लाश जमीन पर पड़ी थी। इससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि शायद बेटियों की नींद खुल गई होगी और उन्होंने भागने की कोशिश की होगी, लेकिन उन्हें इसका मौका नहीं मिला और पिता ने ही मां के बाद तीनों बेटियों की भी हत्या कर दी।

पुलिस ने मर्ग कायम कर पंचनामा की कार्रवाई की है। चारों शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया गया है। बताया जा रहा है कि पिछले 10 सालों से आरोपी देशराज का मानसिक इलाज चल रहा है। 31 जुलाई को भी वो अपने साले के साथ डॉक्टर से इलाज कराने बिलासपुर गया हुआ था। एसपी के मुताबिक आरोपी को बलौदा बस स्टैंड से गिरफ्तार किया गया है। वहीं मौके पर जांच के लिए एफएसएल की टीम को भी बुलाया गया है।

छत्तीसगढ़ में फिर पड़े ईडी के छापे

रायपुर, कोरबा और अंबिकापुर में कारोबारियों के घर दबिश, दस्तावेजों की जांच जारी

रायपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ में एक बार फिर से ईडी के छापे पड़े हैं। रायपुर, कोरबा और अंबिकापुर में प्रवर्तन निदेशालय की टीम ने कारोबारियों के घर दबिश देकर दस्तावेजों की जांच कर रही है। ऐसा कहा जा रहा है जिन कारोबारियों के घर जांच चल रही है वे आईएएस रानू साहू के करीबी हैं। रायपुर के कचना इलाके में स्वर्णभूमि स्थित रोहित अग्रवाल के घर जांच जारी है। रोहित तेंदूपत्ता के कारोबार से जुड़े हैं। ईडी की टीम सुबह से दस्तावेजों की जांच कर रही है। कोरबा में स्टेशन रोड निवासी पूर्व पार्षद और व्यवसायी शिव अग्रवाल के यहां सुबह 5 बजे से ईडी की टीम ने दस्तक दी। घर के लोग कुछ समझ पाते तब तक टीम ने घर के सभी लोगों को एक कमरे में रखकर कर जांच करना शुरू किया। करीब 5 घंटे तक जांच के बाद ईडी की टीम खाली हाथ वापस लौट गई। सीतामढ़ी में नवीन टाइल्स और जमीन कारोबारी पवन अग्रवाल के ठिकानों पर भी दस्तावेजों की जांच जारी है। इनके पिताजी शिव अग्रवाल जोगी कांग्रेस से 2018 में विधानसभा चुनाव लड़े थे। अभी तक कार्रवाई का अपडेट सामने नहीं आया है। कोरबा में ही व्यवसाई रूड़ मल अग्रवाल के घर और दुकान में भी छापा मारा गया है। अधिकारियों के साथ सुरक्षाबल के जवान घर के बाहर निगरानी करते देखे गए। रुड़ मल अग्रवाल के घर कार्रवाई के दौरान अब तक क्या मिला है इसकी जानकारी नहीं मिल पाई है। इससे पहले बुधवार को ईडी की टीम ने रायगढ़ में सुनील रामदास अग्रवाल के ठिकानों पर कार्रवाई की थी।

बाजार का शेड गिरने से मासूम की मौत

पीएम आवास में मिला था घर बाबुओं पर परिवार का आरोप

गौरेला-पेंड्रा-मरवाही, 3 अगस्त (एजेंसियां)। पेण्ड्रा में गुरुवार को एक बड़ा हादसा हुआ। जिसमें साप्ताहिक बाजार शेड का छज्जा गिरने के चलते शेड के नीचे अस्थाई रूप से रह रहे परिवार के एक 6 साल के बच्चे की मौत हो गई। परिजनों का आरोप है कि पिछले 6 माह पहले प्रधानमंत्री आवास की एक किस्त मिली थी। उसके बाद आज तक कोई किस्त नहीं मिली है। जिसकी वजह से आवास अधूरा होने के चलते वे बाजार शेड के नीचे रहने को मजबूर हैं। फिलहाल, पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। बाजार मोहल्ले में साप्ताहिक बाजार शेड के नीचे अस्थाई आवास बनाकर रह रहे मनोज चौधरी जो पेशे से मजदूर हैं। उसके 6 साल के बाजार शेड का छज्जा गिरने से चपेट में आ गया। जिसके बाद आनन-फानन में परिजन बच्चे को लेकर पहले पेण्ड्रा के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुचे। फिर वहां से कोई भी डॉक्टर मौजूद नहीं होने के कारण फिर जिला अस्पताल लाया गया।

जहां पर मौजूद डॉक्टर ने जांच के बाद बच्चे को मृत घोषित कर दिया। बच्चे को सिर पर गंभीर चोट आई थी। जिसके चलते बच्चे की मौत हुई। वहीं परिजनों की मानें तो उनका प्रधानमंत्री आवास पिछले 6 माह पहले बनाए जाने को लेकर एक किस्त की राशि उन्हें मिली। जिससे उन्होंने थोड़ा काम करवाया। उसके बाद से वे लगातार नगर पंचायत पेण्ड्रा के अधिकारियों के चक्कर काटते रहे। उन्हें कोई भी पैसा नहीं मिला। अगर उन्हें पैसा मिल जाता और उनका घर बन गया होता तो आज उनके घर का चिराज नहीं बुझता। आवास नहीं बनने के चलते वे लोग साप्ताहिक बाजार शेड में रह रहे थे। मृतक के पिता ने कहा कि उसकी दो छोटी बेटी के बाद तीसरा बच्चा श्लोक था। घर वालों का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

खरखई और स्वर्णरेखा नदी में बढ़ रहा जलस्तर

प्रशासन अलर्ट, निषेधाज्ञा की गई लागू

रांची, 3 अगस्त (एजेंसियां)। पूर्वी सिंहभूम और आस-पास के इलाकों में लगातार हो रही बारिश के कारण खरखई और स्वर्णरेखा नदियों में जलस्तर बढ़ रहा है। इसे लेकर पूर्वी सिंहभूम जिला प्रशासन ने लोगों को आगाह भी किया है। जिला प्रशासन ने बुधवार को यहां दोनों नदियों से 100 फीट की दूरी पर निषेधाज्ञा लागू कर दी है।

धालभूम के उपमंडल अधिकारी पीयूष सिन्हा ने ये आदेश दिया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन की सुरक्षा के लिए सीआरपीसी की धारा 144 के तहत निषेधाज्ञा लागू की गई है। ये निषेधाज्ञा पांच अगस्त तक प्रभावी रहेगी। ऐसे में किसी को भी नदियों के पास जाने की अनुमति नहीं होगी। साथ ही नदियों के पास मवेशियों को चराने पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया।

एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि खरखई नदी का जलस्तर जहां आदित्यपुर ब्रिज पर 129 मीटर के लाल निशान को छू गया है। वहीं स्वर्णरेखा नदी का जलस्तर शाम 4 बजे 121.50 मीटर के लाल निशान के मुकाबले 118.48 मीटर दर्ज किया गया। बयान में कहा गया है कि इसके अलावा, ओडिशा में बंकबल और खरकई बांधों के दो-दो स्लुइस गेट बुधवार रात को खोले जाएंगे। जिसके बाद दोनों नदियों में जल स्तर और बढ़ जाएगा।

इस बीच, उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने ब्लॉक विकास अधिकारियों, सर्कल अधिकारियों और नगर निगम अधिकारियों को किसी भी स्थिति से निपटने के लिए सभी एहतियाती कदम उठाने का निर्देश दिया है। उन्होंने अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने को कहा है कि उफान के कारण दोनों नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में कोई जानमाल की हानि न हो। उन्होंने अधिकारियों से कहा है कि वे डूब क्षेत्र में नदी का पानी घुसने पर तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को चिन्हित कर आश्रय गृह में भेजना सुनिश्चित करें। साथ ही लाइफ सेविंग जैकेट, नाव, मेडिकल किट आदि के मुकम्मल इंतजाम रखें, ताकि आकस्मिक स्थिति से निपटा जा सके।

बाइक को टक्कर मारते हुए पुल से नीचे गिरी कार

हजारीबाग, 3 अगस्त (एजेंसियां)। जिले में बुधवार को बिरसा कृषि अनुसंधान केंद्र, गौरियाकरमा के 57 वर्षीय वैज्ञानिक की एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। पुलिस ने कहा कि वैज्ञानिक श्याम बहादुर सिंह अपनी कार से गिरीदिश जा रहे थे, जो नेशनल हाईवे-33 पर दाऊजीनगर के पास विपरीत दिशा से आ रहे एक बाइक सवार को बचाने के प्रयास में कार एक पुल से नीचे गिर गई। श्याम बहादुर सिंह ने कार पर नियंत्रण खो दिया और मोटरसाइकिल को टक्कर मारने के बाद वह पुल से नीचे गिर गए, जिससे उनकी मौत हो गई।

रांची के जिला स्कूल में लगी आग फायरब्रिगेड ने पाया काबू

रांची, 3 अगस्त (एजेंसियां)। राजधानी रांची के जिला स्कूल में अचानक आग लग गयी। स्कूल के पीछे वाले भवन में आग लगी। प्राथमिक सूचना के मुताबिक स्कूल की वायरिंग काफी पुरानी है। शॉर्ट सर्किट की वजह से भीषण आग लगने की बात कही जा रही है। आग लगते ही क्लास रूम में मौजूद बच्चों को बाहर निकाला गया है। वहीं स्कूल में बच्चों की छुट्टी कर दी गयी।

मौके पर दमकल की दो गाड़ियां पहुंची। सुबह 10 बजे से आग बुझाने की कोशिश में लगी फायरब्रिगेड की गाड़ियों ने आग पर काबू पा ली है। प्राप्त जानकारी के अनुसार जिस क्लास रूम में आग लगी। वहां क्लास छह के बच्चे पढ़ाई करते हैं, शिक्षकों ने बताया कि जैसे ही क्लास रूम में धुआं उठने जैसा लगा हमने बच्चों को बाहर निकाला। जिस वक्त क्लास रूम में आग लगी लगभग 30 से अधिक पढ़ रहे थे। बगल में 3 कमरे हैं धीरे-धीरे आग इन सभी कमरों में फैल गयी। फॉल सीलिंग आग की वजह से जलने लगा। स्कूल के स्टाफ ने इन कमरों में मौजूद बेंच डेक्स कंप्यूटर बैटरी आदि को हटा दिया है। फायर ब्रिगेड के कर्मचारी अपने काम में लगे रहे। इस अगजनी में एक बच्चे के रेनकोट जल जाने की बात शिक्षकों ने कही है। शिक्षकों ने बताया की देखते देखते आग फैल गई। रांची जिले का यह सबसे पुराना स्कूल है। जिसे हाल ही में सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस बनाया गया है। स्कूल ऑफ एक्सीलेंस में तमाम तरह की वह सभी सुविधाओं की बात कही गई है जो किसी भी निजी स्कूल में होता है। दूसरी तरफ यह भवन काफी पुराना है। इसका छत खपड़ैल का है। क्लास रूम में नीचे से प्लाईवुड की फॉल सीलिंग की गयी है। इस वजह से आग तेजी से फैली। इस अगजनी में कितने का नुकसान हुआ है इसका आकलन किया जाएगा।

एलआईसी एजेंट के साथ हनीट्रैप

पत्नी की सहेली ने न्यूड वीडियो बनाकर किया ब्लैकमेल, जमीन दिलाने के नाम से वसूले 11 लाख

बिलासपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में एलआईसी एजेंट हनीट्रैप में फंस गया। उसकी पत्नी की सहेली ने जमीन दिलाने के लिए पहले एजेंट से 11 लाख रुपए वसूले। जमीन नहीं मिली तो पीड़ित ने पैसों की मांग की तो युवती ने एजेंट को शराब पिलाकर उसका न्यूड वीडियो बना लिया। गिरोह के साथियों से उसकी बेरहमी से पिटवाया और ब्लैकमेल करते हुए 12 लाख रुपए की मांग की। पूरा मामला एक साल पुराना है, जो अब एजेंट के शिकायत करने के बाद सामने आया है। कोरबा जिले के कटघोरा निवासी राजप्रकाश जायसवाल पिता जीवनलाल (37) एलआईसी का काम करता है। उसने अपनी शिकायत में बताया कि उनकी पत्नी की बचपन की सहेली शबनम अली बिलासपुर के तालापारा में रहती है, जिससे उसकी पहचान थी। साल 2022 में शबनम ने चुचुहियापारा निवासी असगर खान से उसकी मुलाकात कराई। इस दौरान उसकी अजगर से दोस्ती हो गई। अजगर ने खुद को प्रापर्टी डीलर बताया और एलआईसी में प्रापर्टी डीलर का पैसा इन्वेस्ट कराने में मदद करने की बात कही। इस दौरान उसने अजगर को बिलासपुर में जमीन दिलाने के लिए कहा, तब उसने सिरगिट्टी क्षेत्र में जमीन दिलाने की बात कही। शबनम ने जमीन दिलाने की गारंटी भी ली। उनकी बातों में आकर उसने अलग-अलग किश्तों में शबनम और अजगर को 11 लाख दे दिए। इसी दौरान बिलासपुर में असगर से लगातार मुलाकात के बाद उसे पता चला कि उसकी पत्नी का अजगर के साथ अवैध संबंध है. तो उसने पत्नी को छोड़ दिया।

विधायक संगीता सिन्हा ने जारी किया हितग्राही कार्ड

रजिस्ट्रेशन करने से मिलेगा सरकारी योजनाओं का लाभ

बालोद, 3 अगस्त (एजेंसियां)। बालोद विधानसभा क्षेत्र की विधायक संगीता सिन्हा गुरुवार को 'भूपेश है तो भरोसा है' हितग्राही कार्ड की शुरुआत की। इस दौरान वह हितग्राही कार्ड लेकर सैकड़ों कार्यकर्ताओं के साथ बालों शहर के सड़कों पर उतरीं। उन्होंने छोटे-छोटे व्यवसायियों और आम जनता से चर्चा कर उन्हें हितग्राही काट दिया। विधायक संगीता सिन्हा ने कहा कि इस कार्ड में रजिस्ट्रेशन करने से योजनाओं के लाभ मिलेंगे और यदि कोई योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है तो संगठन के माध्यम से उन्हें योजनाओं का लाभ दिलाया जाएगा। उन्होंने हाथों में हितग्राही पंजीकरण फार्म भी रखा हुआ था। उनके साथ जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चंद्रप्रभा सुधाकर, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चंद्रेश हिरवानी भी मौजूद रहे। जिले में बीते 24 घंटे से लगातार बारिश हो रही है, ऐसे में संचारी बालोद विधानसभा क्षेत्र की विधायक संगीता सिन्हा बरसते पानी में आम जनता के बीच पहुंचे। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार ने सभी वर्गों के लिए अनेक अनेक जन हितकारी योजनाएं लागू की। सभी पात्र जनों के तक इन्हें पहुंचना उनकी प्राथमिकता है। छत्तीसगढ़ सरकार राज्य के जन-जन का जीवन बेहतर बनाने के लिए संकल्पित है। उन्होंने हितग्राही कार्ड के रजिस्ट्रेशन करने के लिए एक हेल्पलाइन नंबर भी जारी किया है। उन्होंने कहा कि हितग्राही कार्ड में रजिस्ट्रेशन करने के लिए आम जनता इस नंबर पर मिस कॉल देकर सीधे जुड़ सकते हैं। ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष चंद्रेश हिरवानी ने कहा कि सभी कार्यकर्ता हितग्राही पंजीकरण फार्म लेकर जनता के बीच जा रहे हैं। जितनी भी जनहित योजनाएं छत्तीसगढ़ सरकार ने शुरू की हैं, उसका फीडबैक भी ले रहे हैं। आज से इस योजना की शुरुआत हुई है। चंद्रेश कुर्बानी ने कहा कि भूपेश बघेल के सरकार ने सभी किसानों का कर्ज माफ किया है। इसका लाभ उन्हें मिला है। सरकार राजीव गांधी किसान न्याय योजना के माध्यम से प्रति एकड़ 9,000 एवं अन्य फसलों पर 10,000 रुपये की अदान सहायता दे रही है। बेरोजगारी भत्ता सहित दर्जन भर योजनाएं हैं, जिसका लाभ लोगों को मिला रहा है या नहीं, इस बात की पुष्टि कर रहे हैं।

भारत-पाकिस्तान के बीच बातचीत शुरू कराना चाहता है अमेरिका

विदेश मंत्रालय ने दिया बड़ा बयान

वॉशिंगटन, 3 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने बुधवार को एक बयान में कहा कि अमेरिका, भारत और पाकिस्तान के बीच बातचीत शुरू कराने का समर्थक है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता मैथ्यू मिलर ने संवाददाताओं से बातचीत में कहा कि 'जैसा कि हमने पहले भी कहा है कि हम भारत और पाकिस्तान के बीच चिंता वाले मुद्दों पर सीधी बातचीत का समर्थन करेंगे।' खास बात ये है कि अमेरिका का यह बयान ऐसे वक्त आया है, जब जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने की पांच अगस्त को वर्षगांठ है।

पाकिस्तानी पीएम ने जताई थी बातचीत की इच्छा

बता दें कि पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने हाल ही में अपने एक बयान में भारत के साथ बातचीत करने की इच्छा जाहिर की थी। पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के इसी बयान को लेकर अमेरिका के विदेश विभाग के प्रवक्ता से सवाल किया गया था। सोमवार को इस्लामाबाद में मिनरल्स सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसमें पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ ने कहा था कि देश को फिर से बनाने के लिए वह पड़ोसी देशों के साथ बातचीत के लिए तैयार हैं।

पहले भी बातचीत की पेशकश कर चुका है अमेरिका

बता दें कि यह पहली बार नहीं है जब अमेरिका ने भारत-पाकिस्तान के बीच बातचीत का समर्थन किया हो। इसी साल मार्च में भी अमेरिका के विदेश विभाग के तत्कालीन प्रवक्ता नेड प्राइस ने एक सवाल के जवाब में कहा था कि अमेरिका दोनों देशों में बातचीत कराने के लिए तैयार है लेकिन पहले इसके लिए दोनों देश तैयार हों। नेड प्राइस ने कहा था कि अमेरिका दोनों देशों के सहयोगी के तौर पर बातचीत के लिए मधयस्थता करने के लिए तैयार है।

इस्राइल और सऊदी अरब में भी मधस्थता कर रहा अमेरिका

गौरतलब है कि अमेरिका कभी एक दूसरे के सबसे बड़े विरोधी रहे सऊदी अरब और इस्राइल के बीच भी बातचीत के लिए मध्यस्थता की भूमिका निभा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, बीते हफ्ते इस्राइल के खूफिया विभाग के प्रमुख ने अमेरिका का दौरा किया था। इस दौरान अमेरिका के एनएसए जैक सुलिवन और मोसाद चीफ डेविन बार्निया के बीच लंबी बातचीत हुई थी। जैक सुलिवन ने हाल ही में सऊदी अरब का भी दौरा किया था। मीडिया रिपोर्ट्स में इस बात की चर्चा है कि अमेरिका, इस्राइल और सऊदी अरब के बीच बातचीत करा रहा है और दोनों देशों के बीच जल्द ही कूटनीतिक रिश्ते कायम हो सकते हैं।

पाकिस्तान-अमेरिका में अहम रक्षा समझौता

आधुनिक हथियार मिलने का रास्ता साफ

इस्लामाबाद, 3 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान की कैबिनेट ने अमेरिका के साथ होने वाले अहम रणनीतिक समझौते को मंजूरी दे दी है। इससे दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग फिर से शुरू हो सकेगा, जो कि बीते कुछ सालों से बंद था। इस समझौते के साथ ही पाकिस्तानी सेना को अमेरिकी हथियार मिलने का रास्ता भी साफ हो गया है। पाकिस्तानी मीडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, पाकिस्तान सरकार की कैबिनेट ने कम्यूनिकेशन इंटर ऑपरेबिलिटी एंड सिक्योरिटी मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट को मंजूरी दे दी है। हालांकि अभी तक पाकिस्तान की सरकार ने इसे लेकर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है। पाकिस्तान और अमेरिका फिर से रक्षा सहयोग बढ़ाने पर सहमत हुए हैं। बीते दिनों पाकिस्तानी सेना के चीफ जनरल आसिम मुनीर ने यूएस सेंट्रल कमांड के चीफ जनरल माइकल एरिक कुरिल्ला से मुलाकात की थी। सीआईएस-एमओए एक आधारभूत समझौता है, जो अमेरिका अपने उन सहयोगी देशों के साथ करता है, जिनके साथ वह करीबी रक्षा संबंध रखता है। यह समझौता रक्षा निर्यात के लिए लीगल कवर के रूप में भी काम करता है, जिसकी मदद से अमेरिका किसी देश को आसानी से अपने हथियार बेच सकता है।

सिंगापुर में एक हफ्ते में 3 को फांसी

54 ग्राम हेरोइन रखने पर युवक को मौत की सजा, कहा- इससे 600 लोगों तक नशा पहुंचता

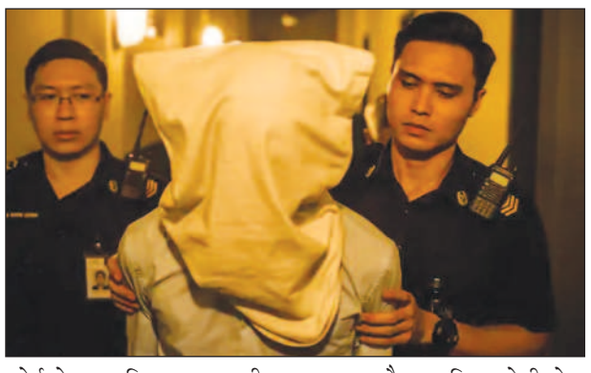

सिंगापुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। सिंगापुर ने अंतरराष्ट्रीय विरोध के बावजूद एक हफ्ते के भीतर 3 लोगों को फांसी दी है। गुरुवार यानी आज सिंगापुर की सरकार ने एक 39 साल के युवक मोहम्मद सालेह अब्दुल लतीफ को फांसी दी है। इससे 2019 में 54 ग्राम हेरोइन जब्त की गई थी। ब्यूरो के मुताबिक ये हेरोइन 600 लोगों तक नशा पहुंचा सकती थी।

ट्रायल के दौरान अब्दुल लतीफ ने दलील दी थी कि उसे इस हेरोइन को लेकर कोई जानकारी नहीं थी। उसने दोस्त का उधार चुकाने के लिए उसके सामान को डिलीवर किया था। उसे नहीं पता था वो सामान हेरोइन है। हालांकि, कोर्ट ने ये दलील मानने से इनकार कर दिया। जज का कहना था कि अब्दुल लतीफ अपने दोस्त से इतना करीब नहीं था कि उस पर इतनी आसानी से विश्वास करता।

सिर्फ डिलीवरी करने पर मौत की सजा

सजा सुनाते वक्त सिंगापुर की कोर्ट ने माना कि अब्दुल लतीफ ने हेरोइन सिर्फ डिलीवर की थी। वो किसी ड्रग रैकेट से नहीं जुड़ा था। इसके बावजूद उसे इतनी कड़ी सजा सुनाई गई। दरअसल, सिंगापुर के कानून के तहत अगर किसी भी व्यक्ति से 500 ग्राम से ज्यादा गांजा या 15 ग्राम से ज्यादा हेरोइन तस्कर करते हुए पाया जाता है तो उसे मौत की सजा दी जाती है।

यूएन समेत कई देश सिंगापुर के इस कानून के खिलाफ विरोध जता चुके हैं। हालांकि, सिंगापुर नशे की तस्करी को काबू में रखने के लिए इस कड़ी सजा को जरूरी ठहराता है। जबकि पड़ोसी देश थाईलैंड ने गांजे के इस्तेमाल को कानूनी तौर पर मंजूरी दे दी है। वहीं, मलेशिया ने फांसी सजा को खत्म कर दिया है।

हेरोइन रखने पर 2 और लोगों को मिल चुकी फांसी

सिंगापुर ने इसी हफ्ते में एक महिला और पुरुष को भी फांसी दी थी। महिला से 2018 में 31 ग्राम हेरोइन जब्त की गई थी। उसका नाम सारीदेवी बिंते जमानी बताया गया था। उसे 1 किलो हेरोइन बेचने का दोषी पाया गया था।

सिंगापुर में पिछले 20 सालों में पहली बार किसी महिला को फांसी की सजा दी गई थी। इससे पहले 2004 में एक 36 साल की हेयर ड्रेसर महिला ड्रग्स की तस्करी के जुर्म में फांसी दी गई थी। इस हफ्ते में मोहम्मद अजीज हुसैन नाम के एक व्यक्ति को भी फांसी की सजा दी गई। इससे 50 ग्राम हेरोइन जब्त की गई थी।

सिंगापुर में तमिल नागरिक को भी मिल चुकी फांसी की सजा

सिंगापुर दुनिया के उन चंद देशों में से एक है जहां, ड्रग्स की तस्करी पर मौत की सजा मिलती है। अलजजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक सिंगापुर नशीले पदार्थों की तस्करी से जुड़े मामलों में विदेशियों को भी नहीं बख्शता है। अप्रैल में सिंगापुर में एक तमिल नागरिक को सजा दे दी गई थी।

2018 में 46 साल के तंगराजू सुप्पैया को एक किलोग्राम गांजे की तस्करी करने के आरोप में फांसी की सजा सुनाई गई थी। यूनाइटेड नेशन्स ह्यूमन राइट काउंसिल (यूएनएचआरसी) ने फांसी की सजा का विरोध किया था। बावजूद इसके तंगराजू को बुधवार को फांसी दे दी गई।'

नॉर्थ कोरिया ने माना-हिरासत में है अमेरिकी सैनिक

अब वापसी के लिए यूएन कर रहा कोशिश किम जोंग अमेरिका से बातचीत को तैयार नहीं

प्योंगयांग, 3 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिकी सैनिक के साउथ कोरिया से बॉर्डर पार कर नॉर्थ कोरिया जाने पर पहली बार तानाशाह किम के देश की प्रतिक्रिया सामने आई है। यूएन के मुताबिक, नॉर्थ कोरिया ने सैनिक ट्रैविस किंग की कस्टडी की बात स्वीकार कर ली है। यूएन कमांड ने सैनिक को वापस लाने के लिए मामले की गंभीरता देखते हुए और जानकारी देने से इनकार कर दिया।

हालांकि, नॉर्थ कोरिया के इस रिएक्शन के बाद उम्मीद की जा रही है कि वो मामले में बातचीत के लिए तैयार हो सकता है।

ट्रैविस 18 जुलाई को बॉर्डर पार कर नॉर्थ कोरिया चला गया था। यहां उसे तानाशाह किम जोंग उन के अधिकारियों ने हिरासत में ले लिया था। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक ट्रैविस किंग नाम का ये सैनिक साउथ कोरिया में भी मारपीट के आरोपों के चलते 2 महीने जेल में काट चुका था। उसे जल्द ही अमेरिका वापस भेजा जाना था।

बिना इजाजत नॉर्थ कोरिया में दाखिल हुआ ट्रैविस

ट्रैविस नॉर्थ कोरिया में बिना इजाजत दाखिल हुआ था। यूएन कमांड के मुताबिक जब ट्रैविस नॉर्थ कोरिया में घुसा तो वो साउथ कोरिया की एक टीम के साथ जॉइंट सिक्योरिटी एरिया के टूर पर पानमुनजोम गांव में था। ये वहीं गांव है जहां कोरिया में हुई जंग के बाद युद्ध विराम हुआ था। इसके बाद अमेरिका ने मामले में नॉर्थ कोरिया से बातचीत की भी कोशिश की, लेकिन वो इसके लिए तैयार नहीं हुए।

बीबीसी की रिपोर्ट में बताया गया है कि ट्रैविस किंग ने सितंबर में नाइट क्लब में एक युवक के साथ मारपीट की थी। उसने पुलिस की कार के साथ तोड़-फोड़ की और उनके खिलाफ भद्दे शब्दों का इस्तेमाल किया। इस मामले में उस पर 3,950 डॉलर, यानी 3 लाख रुपए का जुर्माना लगा था। दो महीने की सजा के बाद उसे 10 जुलाई को रिहा किया गया था। ट्रैविस को सेना की निगरानी में भी रखा गया था।

रिपोर्ट्स के मुताबिक जब उसे वापस अमेरिका भेजने के लिए एयरपोर्ट ले जाया गया तो उसने कहा कि उसका पासपोर्ट खो गया है। इसके बाद वो उस टीम शामिल हो गया जो साउथ-कोरिया और नॉर्थ कोरिया के बॉर्डर का टूर करने जा रही थी।

एक चश्मदीद ने बताया कि वो बॉर्डर क्रॉस करने के बाद जोर-जोर से हंसा था। वहीं, एक दूसरे चश्मदीद ने कहा कि जब उसने ट्रैविस को बॉर्डर क्रॉस करते देखा तो उसे लगा वो कोई टिकटॉक वीडियो बनाने के लिए ऐसी बेतुकी हरकत कर रहा है।

पहले भी बॉर्डर पार कर नॉर्थ कोरिया भाग चुके अमेरिकी

1950 से 1953 तक एक-दूसरे के खिलाफ जंग लड़ चुके अमेरिका और नॉर्थ कोरिया के बीच संबंध अच्छे नहीं है। अमेरिका नॉर्थ कोरिया पर कई तरह की पाबंदियां लगा चुका है। ऐसे में किसी अमेरिकी सैनिक का बॉर्डर पार कर नॉर्थ कोरिया जाना बड़ी घटना है। हालांकि, ये पहला मौका नहीं है जब कोई अमेरिकी भागकर नॉर्थ कोरिया चला गया हो। 1965 में अमेरिकी सार्जेंट चार्ल्स रोबर्ट जेनकिंस वियतनाम जंग में हिस्सा लेने से बचने के लिए नॉर्थ कोरिया भाग गए थे। इसके बाद उन्हें पूरे 39 साल बाद 2004 में नॉर्थ कोरिया से लौटने की इजाजत मिली थी। जापान लौटने के बाद उन्होंने बताया था कि उन्होंने नॉर्थ कोरिया के सैनिकों को इंग्लिश पढ़ाई थी।

2009 में लॉस एंजिल्स का एक मिशनरी रॉबर्ट पार्क चीन की तरफ से क्रिसमस के दिन नॉर्थ कोरिया में घुस गया। इस दौरान उसने हाथ में बाइबिल पकड़ी थी और वो चिल्ला-चिल्ला कर 'जीजस लव्स नॉर्थ कोरिया' कह रहा था।

सुनक के घर को प्रदर्शनकारियों ने काले कपड़े से ढका

लंदन, 3 अगस्त (एजेंसियां)। ब्रिटेन के यॉर्कशायर शहर में प्रदर्शनकारियों ने प्रधानमंत्री ऋषि सुनक के घर को 200 मीटर के एक काले कपड़े से ढक दिया। इस दौरान वो सुनक के घर की छत पर चढ़ गए। ग्रीन पीस संस्था से जुड़े ये लोग सरकार की पर्यावरण विरोधी नीतियों का विरोध कर रहे थे। रिपोर्ट्स के मुताबिक इस दौरान पुलिस वहां मौजूद रही। इस प्रदर्शन की जानकारी खुद ग्रीन पीस संस्था ने ट्विटर पर वीडियो शेयर कर दी है। इसमें वो ब्रिटिश पीएम के घर की छत पर चढ़ कर उसे कपड़े से ढकते हुए दिखाई दे रहे हैं। हालांकि, प्रदर्शन के दौरान प्रधानमंत्री सुनक अपने घर पर नहीं थे। वो छुट्टियां मनाने के लिए अपने परिवार के साथ कैलिफोर्निया गए हैं। 10 डाउनिंग स्ट्रीट के मुताबिक पिछले 4 साल में ये उनका पहला फैमिली हॉलिडे है। ग्रीन पीस के मुताबिक पीएम के घर को काले कपड़े से ढककर उन्होंने सुनक से एक सवाल पूछा है।

जंग लड़ने से बचने झूठी मेडिकल रिपोर्ट बनवा रहे यूक्रेनी

सेना के अधिकारियों को दे रहे 5 लाख रुपए, देश छोड़कर भाग रहे

कीव, 3 अगस्त (एजेंसियां)। यूक्रेन के अधिकारियों ने एक ऐसी स्कीम का खुलासा किया है, जिसका इस्तेमाल कर वहां के पुरुष जंग में जाने से बच रहे हैं। यूक्रेन में पुरुष अपनी झूठी मेडिकल रिपोर्ट्स बनवा रहे हैं। इनमें उन्हें जंग के लिए अनफिट दिखाया गया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक राजधानी कीव समेत यूक्रेन के 11 इलाकों में ये स्कीम चल रही थी। पुलिस ने कीव, ओडेसा, लीव समेत 100 से ज्यादा जगहों पर छापे मारे हैं जहां नकली मेडिकल सर्टिफिकेट बनाए जा रहे थे।

इस फर्जीवाड़े में मिलिट्री के लोग भी शामिल बताए गए हैं। भर्ती केंद्रों के अधिकारियों ने सेना में भर्ती होने के लिए मेडिकल जांच करने वाले मिलिट्री कमिशन से सांठ-गांठ की थी, ताकि चुने गए कुछ लोगों को सेना में शामिल होने के लिए जरूरी मेडिकल सर्टिफिकेट में अनफिट दिखाया जा सके। इसके बदले अधिकारियों को प्रति व्यक्ति 6 हजार डॉलर, यानी करीब 5 लाख रुपए मिल रहे थे।

झूठे सर्टिफिकेट बनवा कर देश भी छोड़ा

प्रोसीक्यूटर ने बताया कि स्कीम में पैसा देने वाले कुछ लोगों के तो चैकअप ही नहीं किए गए। बिना टेस्ट किए उन्हें अनफिट बताकर वापस भेज दिया गया। इसका खुलासा तब हुआ जब जांच में उनके मेडिकल चेकअप का कोई रिकॉर्ड ही नहीं मिला।

इतना ही नहीं, झूठी मेडिकल रिपोर्ट्स का इस्तेमाल कर कई लोग देश तक छोड़ कर चले गए। दरअसल, जंग के चलते यूक्रेन ने पुरुषों के देश छोड़ने पर बैन लगाया है।

यूक्रेन की नेशनल पुलिस और सिक्योरिटी सर्विस (एसबीयू) मिलकर इस फर्जीवाड़े की जांच कर रहे हैं। हालांकि, इस मामले में अभी तक किसी की गिरफ्तारी नहीं की गई है, पर कुछ लोगों को शक के घेरे में रखा गया है।

जंग के चलते तेजी से बढ़ रही कब्रों की संख्या

जंग शुरू हुए 1 साल 6 महीने गुजर चुके हैं। यूक्रेन ने अब तक एक बार भी जंग में मारे गए अपने सैनिकों की संख्या नहीं बताई है। न सिर्फ यूक्रेन, बल्कि जंग पर लगातार अपडेट दे रहा अमेरिका भी जंग में मारे गए यूक्रेनी सैनिकों की संख्या बताने से इनकार कर चुका है। हालांकि, यूक्रेन ने बताया है कि जंग शुरू होने के बाद उनके 10,749 लोगों की मौत हुई है। इनमें 499 बच्चे भी शामिल हैं।

वहीं, हाल ही के महीनों में सोशल मीडिया पर शेयर की गई पोस्ट में यूक्रेन में तेजी से बढ़ रही कब्रों को दिखाया जा रहा है। ये कब्र यूक्रेनी सैनिकों की बताई जा रही हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक केवल जुलाई के महीने में यूक्रेन के 21 हजार सैनिकों की मौत हुई है और 2,227 मिलिट्री उपकरण तबाह हुए हैं।

बच्चों के निजी जीवन पर भी बंदिशों की तैयारी में चीन

दो घंटे से ज्यादा फोन के इस्तेमाल पर लगेगी रोक!

बीजिंग, 3 अगस्त (एजेंसियां)। चीन के साइबरस्पेस नियामक ने बुधवार को कहा कि 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को सिर्फ दो घंटे तक फोन चलाना चाहिए। साथ ही स्मार्टफोन कंपनियां एक ऐसा मोड तैयार करें, जिससे बच्चे रात में इंटरनेट का उपयोग न कर सकें। बता दें, जानकारी सामने आते ही तकनीकी कंपनियों के शेयरों में गिरावट आने लगी है।

इतने बजे के बाद बंद रहे इंटरनेट सर्विस

चीन के साइबरस्पेस प्रशासन (सीएसी) ने कहा कि वह चाहता है कि स्मार्ट उपकरणों के प्रदाता माइनर मोड प्रोग्राम पेश करें, जो 18 वर्ष से कम उम्र के उपयोगकर्ताओं को रात 10 बजे से सुबह 6 बजे तक मोबाइल पर इंटरनेट का उपयोग करने से रोक दे।

किस उम्र के बच्चे कितना चलाएं फोन?

सीएसी ने कहा कि प्रस्तावित सुधारों के तहत प्रदाताओं को समय सीमा भी तय करनी होगी। 16 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों को फोन चलाने के लिए प्रतिदिन दो घंटे की अनुमति होगी। साथ ही आठ से 16 वर्ष की आयु के बच्चों को एक घंटा जबकि आठ से कम उम्र के बच्चों को केवल आठ मिनट की अनुमति होगी। हालांकि, यह प्रस्ताव निवेशकों को कुछ खास पसंद नहीं आया है।

मसौदा तैयार

सीएसी ने एक मसौदा पेश किया। उसने इसपर दो सितंबर तक सार्वजनिक प्रतिक्रिया मांगी है। इसके बाद हांगकांग में दोपहर के कारोबार में चीनी तकनीकी कंपनियों के शेयरों में गिरावट देखी गई।

शंघाई शेनलुन लॉ फर्म के वकील जिया हैलोंग ने कहा कि यह नियम इंटरनेट कंपनियों के लिए सिरदर्द बनेंगे। उन्होंने कहा कि इन नियमों को लागू करना आसान नहीं है। इनका अनुपालन न करने का जोखिम भी बहुत अधिक होगा। उन्होंने कहा कि मेरा मानना है कि ऐसे में कई इंटरनेट कंपनियां सीधे तौर पर नाबालिगों को अपनी सेवाओं का उपयोग करने से प्रतिबंधित करने पर विचार कर सकती हैं। गौरतलब है, अधिकारी हाल के वर्षों में बच्चों और युवाओं में बढ़ते इंटरनेट के उपयोग को लेकर चिंतित हो गए हैं। सरकार ने साल 2021 में 18 साल से छोटे बच्चों के वीडियो गेम खेलने पर पाबंदी लगा दी। इससे टेनसेंट जैसे गेमिंग दिग्गजों को बड़ा झटका लगा था।

यूएस के स्कूलों में चीनी साजिश

2 करोड़ डॉलर की फंडिंग की, 20 स्कूल अमेरिका के फौजी ठिकानों के बेहद करीब

वॉशिंगटन, 3 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिकी एजुकेशन सिस्टम में चीन तेजी से घुसपैठ कर रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक- चीन ने अमेरिका के पब्लिक स्कूलों को करीब 2 करोड़ डॉलर की फंडिंग की है। हैरानी की बात ये है कि इन पब्लिक स्कूलों में से 20 ऐसे हैं, जो अमेरिकी मिलिट्री बेसेज के काफी नजदीक हैं। अमेरिकी इंटेलिजेंस एजेंसियां लंबे वक्त से इन स्कूलों के स्टूडेंट्स और टीचिंग स्टाफ पर नजर रख रही हैं। खास बात ये भी है कि इन स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों में ज्यादातर की उम्र पांच से छह साल के बीच है। हाल ही में अमेरिकी ऑर्गनाइजेशन पेरेंट्स डिफेंडिंग एजुकेशन (पीडीई) ने एक रिपोर्ट जारी की है। इसमें बताया गया है कि अमेरिकी एजुकेशन सिस्टम में चीन का दखल बहुत तेजी से बढ़ रहा है। इसी रिपोर्ट में बताया गया है कि चीन ने हाल ही में अमेरिकी स्कूलों में 1.8 करोड़ डॉलर से ज्यादा की फंडिंग की है। रिपोर्ट के मुताबिक- इससे भी ज्यादा खतरे की बात ये है कि इन सरकारी स्कूलों में से 20 ऐसे हैं, जो अमेरिकी मिलिट्री के बेसेज के बेहद करीब हैं। इसी रिपोर्ट में आगे कहा गया- इन स्कूलों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चों की उम्र पांच से छह साल के बीच है। इससे साफ जाहिर है कि चीन की कम्युनिस्ट पार्टी बच्चों को मानसिक तौर पर चीन के पक्ष में करना चाहती है। यही वजह है कि उसने फंडिंग के लिए न सिर्फ सरकारी स्कूलों को चुना, बल्कि उसकी नजर एजुकेशन के बहाने अमेरिकी फौज तक पहुंचने पर भी है। पीडीई की रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका के तीन टॉप साइंस एंड टेक्नोलॉजी हाई स्कूल ऐसे पाए गए हैं, जिनको चीन की सरकार सीधे तौर पर फंडिंग कर रही है। इनमें थॉमस जेफरसन हाई स्कूल, सिम्पसन काउंटी स्कूल और केंटुकी स्कूल ऑफ साइंस एंड मैथेमेटिक्स शामिल हैं। रिपब्लिकन पार्टी ने इस मुद्दे पर प्रेसिडेंट बाइडेन को घेरना शुरू कर दिया है। उसकी एक कमेटी ने कहा- यह गहरी नींद में सोई बाइडेन सरकार के लिए फौरन जागने का वक्त है। चीन अमेरिकी की नेक्स्ट जेनरेशन पर दिमागी तौर पर गुलाम बनाने की साजिश रच रहा है। रिपब्लिकन सांसद जिम बैंक्स ने एजुकेशन मिनिस्टर मिगुल कार्डोना को लेटर लिखा है। इसमें कहा गया है- जितनी जल्दी हो सके, अमेरिकी सरकार को चीन के साथ एजुकेशन सेक्टर में किए गए तमाम समझौतों को रद्द कर देना चाहिए। ये हमारी नेशनल सिक्योरिटी से जुड़ा मुद्दा है। बाइडेन एडमिनिस्ट्रेशन इस मामले पर अब तक चुप क्यों है? इसका जवाब भी देश को मिलना चाहिए। बैंक्स के मुताबिक- चीन और वहां की सत्ता पर काबिज कम्युनिस्ट पार्टी कभी भरोसे के लायक नहीं रही। ऐसे में अगर अमेरिकी एजुकेशन इंस्टीट्यूट उससे मदद हासिल कर रहे हैं तो इससे ज्यादा शर्मनाक और क्या होगा।

फ्रांस ने नाइजर से भारतीय नागरिकों को निकाला

पेरिस, 3 अगस्त (एजेंसियां)। नाइजर में सैन्य तख्तापलट के बाद से काफी बुरे हालात हैं, तख्तापलट का समर्थन करने वाले प्रदर्शनकारियों ने फ्रांस के दूतावासों को नष्ट कर दिया है। इस संकट के बीच नाइजर में भारत समेत अन्य देशों के नागरिक फंसे हुए हैं। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, फ्रांसीसी सरकार ने पिछले दो दिनों में भारतीय नागरिकों सहित अपने 990 से अधिक नागरिकों को निकाला है। भारत में फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनैन ने ट्विटर पर कहा कि फ्रांस द्वारा निकाले गए 992 लोग में से 560 उसके नागरिक हैं, जबकि बाकी में भारतीय नागरिकों सहित कई अन्य देशों के नागरिक शामिल हैं। नाइजर में सैन्य तख्तापलट के बाद, फ्रांस ने पिछले दो दिनों में कई रोटेशन उड़ानों के माध्यम से 992 लोगों को देश से निकाला है।

सड़क दुर्घटना में भारतीय छात्र की मौत

पॉकेट मनी के लिए करता था डिलीवरी बॉय का काम

मेलबर्न, 3 अगस्त (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया में फूड डिलीवरी बॉय का काम करने वाले भारतीय छात्र की एक सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। वह 22 साल का था और उबर ईट्स में काम करता था। एक मीडिया रिपोर्ट में कहा गया है कि छात्र का नाम अक्षय दीपक डोल्तानी था जो मुंबई का मूल निवासी था। डोल्टानी को ऑस्ट्रेलिया के मैक्वेरी विश्वविद्यालय में कॉमर्स में मास्टर डिग्री के लिए छात्रवृत्ति मिली थी और वह फरवरी में ऑस्ट्रेलिया आया था।

पॉकेट मनी के लिए करता था काम

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अक्षय दीपक डोल्तानी की पिछले हफ्ते न्यू साउथ वेल्स में वह किसी जगह फूड डिलीवर करने जा रहा था तभी एक उसकी बाइक की टक्कर एक कार से हो गई, इस दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई। वह अपने खर्चों को कवर करने के लिए हफ्ते में कम से कम तीन बार उबर ईट्स डिलीवरी राइडर के रूप में काम करता था।

रिपोर्ट में कहा गया है कि दुर्घटना के बाद उन अक्षय डोल्तानी को रॉयल नॉर्थ शोर अस्पताल ले जाया गया लेकिन कुछ घंटों बाद उनकी मृत्यु हो गई।

अक्षय के भाई ने बताया कि उनका एकमात्र उद्देश्य था कि वह एक अच्छा जीनव जीएं और इसलिए वह ऑस्ट्रेलिया गए और वह अपने परिवार को अधिक सुविधाएं प्रदान करना चाहते थे ताकि वे एक बेहतर जीवन शैली जी सकें।

उबर ईट्स ने दिया बयान

वहीं, ट्रांसपोर्ट वर्कर्स यूनियन के मुताबिक, डोल्टानी की मृत्यु के साथ, 2017 से ऑस्ट्रेलिया में मारे गए फूड डिलीवरी बॉय की संख्या बढ़कर 12 हो गई है। वहीं कंपनी उबर ईट्स ने कहा कि वह डिलीवरी कर्मियों की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और सड़क सुरक्षा बढ़ाने के लिए उसके पास नीतियां हैं। रिपोर्ट में कंपनी के प्रवक्ता के हवाले से कहा गया है कि ऑस्ट्रेलिया में, उबर ईट्स डिलीवरी लोगों को विशेष रूप से उनके लिए डिजाइन किए गए एक सहायता पैकेज द्वारा कवर किया जाता है।

गुढ़ा के बंगले पर पहुंची जोधपुर पुलिस

नाबालिग से रेप के मामले में सीसीटीवी खंगाले; एसपी बोले- अभी कुछ स्पष्ट नहीं

जयपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। नाबालिग से रेप के मामले में जांच करने के लिए जोधपुर पुलिस गुरुवार सुबह बर्खास्त मंत्री राजेंद्र गुढ़ा के बंगले पर पहुंची। पुलिस ने बंगले पर सीसीटीवी फुटेज खंगाले और वहां मौजूद कर्मचारियों से पूछताछ की। पुलिस सूत्रों के मुताबिक जोधपुर के पीपाड़ सिटी थाने में एक नाबालिग ने कुछ लोगों पर रेप का आरोप लगाते हुए कहा था कि गुढ़ा के बंगले पर भी उसके साथ ज्यादती हुई। सीसीटीवी की पड़ताल के बाद पुलिस टीम वहां से रवाना हो चुकी है। जिस समय पुलिस जांच के लिए बंगले पर पहुंची उस वक्त गुढ़ा वहां नहीं थे।

पुलिस सूत्रों के मुताबिक गुढ़ा के सरकारी बंगले के परिसर में बने एक गार्ड रूम में उस लड़की को रखा गया था। पुलिस ने उस

गार्ड रूम के सीसीटीवी और बंगले के गेट के सीसीटीवी की जांच की है। पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि नाबालिग को गुढ़ा के बंगले पर लाया गया था या नहीं। हालांकि जोधपुर एसपी धर्मेंद्र सिंह यादव ने कहा कि पॉक्सो एक्ट के मामले में दो आरोपी पुलिस हिरासत में है, जांच के लिए आरोपियों के साथ पुलिस जयपुर गई थी।

हमें यह पता चला था कि एक घटनास्थल जयपुर का है, ऐसा पता चला है कि पूर्व मंत्री राजेंद्र गुढ़ा ने एक अस्थाई रैन बसेरा बनाया था, वही घटनास्थल है। यह अभी प्रारंभिक जानकारी है, जांच के बाद ही यह बातें स्पष्ट होंगी। गुढ़ा इस वक्त उदयपुरवाटी क्षेत्र ऊंट गाड़ी यात्रा कर रहे हैं। कल ही गुढ़ा ने लाल डायरी के तीन पेज रिलीज करते हुए सीएम के बेटे, सीएम के पीएस और आरसीए चुनावों में लेनदेन का जिक्र किया था। गुढ़ा ने कल ही कहा था कि सरकार उनके खिलाफ रोज मुकदमे कर रही है और उन्हें जेल भेजना चाहती है।

गुढ़ा का परिवार अस्पताल रोड वाले बंगले पर नहीं रहता है। गुढ़ा ने कहा था कि डेढ़ साल पहले सीएम गहलोत खेमे से अनबन के बाद ही परिवार को निजी मकान में शिफ्ट कर दिया था। इस बंगले पर गुढ़ा जनसुनवाई करते हैं और यहां एसएमएस अस्पताल में इलाज के लिए आने वाले उनके क्षेत्र के लिए लोग रुकते हैं।

विधानसभा चुनाव में टिकट के लिए बनी कमेटी में गहलोत-पायलट

स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष होंगे गौरव गोगोई; डोटासरा और रंधावा भी शामिल

जयपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। विधानसभा चुनाव में टिकट वितरण पर फैसले के लिए कांग्रेस ने स्क्रीनिंग कमेटी का गठन कर दिया। असम के पूर्व सीएम तरुण गोगोई के बेटे गौरव गोगोई को राजस्थान स्क्रीनिंग कमेटी का चेयरमैन बनाया गया है। उत्तराखंड कांग्रेस के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष विधायक गणेश गोदियाल और कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव अभिषेक दत्त को स्क्रीनिंग कमेटी का मेंबर बनाया गया है।

स्क्रीनिंग कमेटी में कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, सीएम अशोक गहलोत, प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा, सचिन पायलट, सीपी जोशी और तीनों सह प्रभारी सचिवों- काजी निजामुद्दीन, अमृता धवन और वीरेंद्र राठौड़ को एक्स ऑफिशियो मेंबर बनाया गया है। कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी

गौरव गोगोई

गणेश गोदियाल

अभिषेक दत्त

वेणुगोपाल ने स्क्रीनिंग कमेटी बनाने के आदेश जारी कर दिए हैं।

स्क्रीनिंग कमेटी में सचिन पायलट को जगह देकर हाईकमान ने पिछले चुनावों वाला कॉम्बिनेशन बनाने के संकेत दे दिए हैं। इससे अब साफ हो गया है कि टिकट वितरण में सचिन पायलट की भी चलेगी। कांग्रेस में लगातार चुनावी समितियां बनाई जा रही हैं। पिछले दिनों प्रदेश चुनाव समित बनाई जा चुकी है। चुनाव समिति में भी सबको साधने का प्रयास किया गया था।

कैंपेन कमेटी सहित अभी आधा दर्जन चुनावी कमेटियों का गठन होना बाकी है। कैंपेन कमेटी का अध्यक्ष किसे बनाया जाता है, इसे लेकर सबकी निगाहें टिकी हैं।

गोगोई राहुल गांधी के नजदीक, ऑब्जर्वर भी राहुल गांधी के करीबी

स्क्रीनिंग कमेटी अध्यक्ष बनाए गए गौरव गोगोई राहुल गांधी के नजदीक माने जाते हैं। राजस्थान में चुनाव से जुड़ी समितियों में राहुल गांधी अपने भरोसे के नेताओं को नियुक्त करवा रहे हैं। विधानसभा चुनावों के लिए सीनियर ऑब्जॉर्वर लगाए गए मधुसूदन मिस्त्री और ऑब्जॉर्वर सेंथिल भी राहुल गांधी के भरोसेमंद नेता हैं।

किसानों की जमीन की नहीं होगी नीलामी, बिल पास

कर्जमाफी आयोग बनने का रास्ता साफ; विधानसभा में हंगामे के बीच 5 बिल पास

जयपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। विधानसभा में हंगामे के बीच पांच बिल पारित कर दिए गए। इनमें से किसान कर्ज माफी पर आयोग बनाने से लेकर नाथद्वारा मंदिर बोर्ड की देश भर की जमीनों पर सोलर प्लांट और ग्रीन एनर्जी प्लांट लगाने की मंजूरी देने के प्रावधान करने वाले बिलों को पारित किया गया।

किसान कर्ज राहत आयोग बिल पारित होने के बाद किसान कर्ज राहत आयोग बनाने का रास्ता साफ हो गया है। आयोग बनने के बाद बैंक और कोई भी फाइनेंशियल संस्था किसी भी कारण से फसल खराब होने की हालत में कर्ज वसूली का प्रेशर नहीं बना सकेंगे। किसान फसल खराब होने पर कर्ज माफी की मांग करते हुए इस आयोग में आवेदन कर सकेंगे। आयोग बनने से अब फसल खराबे पर लगातार

कर्ज माफी का रास्ता खुला रहेगा और इससे केवल जरूरतमंद किसानों को आवेदन करने पर सहायता मिलेगी।

राज्य किसान कर्ज राहत आयोग में अध्यक्ष सहित 5 मेंबर होंगे। हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज अध्यक्ष होंगे। आयोग में एसीएस या प्रमुख सचिव रैंक पर रहे रिटायर्ड आईएएस, जिला और सेशन कोर्ट से रिटायर्ड जज, बैंकिंग सेक्टर में काम कर चुके अफसर और एक एग्रीकल्चर एक्सपर्ट को मेंबर बनाया जाएगा। सहकारी समितियों के एडिशनल रजिस्ट्रार स्तर के अफसर को इसका सदस्य सचिव बनाया जाएगा। किसान कर्ज राहत आयोग को कोर्ट जैसे पावर होंगे। अगर किसी इलाके में फसल खराब होती है और इसकी वजह से किसान बैंकों से लिया हुआ कृषि कर्ज चुका नहीं पाता है तो ऐसी स्थिति में आयोग को उस किसान और क्षेत्र को संकटग्रस्त घोषित करके उसे राहत देने का आदेश देने का अधिकार होगा।

कर्ज नहीं चुका पाने को लेकर अगर किसान आवेदन करता है या आयोग खुद अपने स्तर पर समझता है कि हालत वाकई खराब है तो वह उसे संकटग्रस्त किसान घोषित कर सकता है। संकटग्रस्त किसान का मतलब है कि उसकी फसल खराबे की वजह से वह कर्ज चुका पाने में सक्षम नहीं है। संकटग्रस्त किसान घोषित होने के बाद बैंक उस किसान से जबरदस्ती कर्ज की वसूली नहीं कर सकेगा।

नाथद्वारा मंदिर बोर्ड की जमीनों को सोलर प्लांट के लिए पट्टे पर दे सकेंगे, बिल पारित

नाथद्वारा मंदिर बोर्ड की देश भर में कई शहरों में जमीनें और प्रॉपर्टी अब सोलर पावर प्लांट सहित ग्रीन एनर्जी प्लांट लगाने के लिए पट्टे पर दी जा सकेंगी। नाथद्वारा मंदिर बोर्ड संशोधन बिल में इसका प्रावधान किया है। नाथद्वारा मंदिर बोर्ड एक्ट 1959 की धारा 17 में संशोधन किया है। इस संशोधन के बाद अब नाथद्वारा मंदिर बोर्ड से जुड़ी हुई किसी भी प्रॉपर्टी को सोलर एनर्जी प्लांट के लिए या ग्रीन एनर्जी से जुड़ी किसी भी एक्टिविटी के लिए पट्टे पर दिए जाने का प्रावधान किया है। इसके लिए बोर्ड को सरकार से पहले मंजूरी लेनी होगी। नाथद्वारा मंदिर बोर्ड की जमीनों को सोलर प्लांट और ग्रीन एनर्जी से जुड़ी एक्टिविटी के लिए पट्टे पर देने का कानून में पहले प्रावधान नहीं था। देवस्थान मंत्री शकुंतला रावत ने कहा कि नाथद्वारा मंदिर बोर्ड ने अपनी प्रॉपर्टीज के बेहतर उपयोग के लिए कुछ संशोधनों का राज्य सरकार से आग्रह किया, इसलिए नाथद्वारा मंदिर बोर्ड एक्ट 1959 में संशोधन बिल लाए हैं। इस प्रावधान से नाथद्वारा के अलावा यूपी के वृंदावन सहित देश भर की प्रॉपर्टीज को पट्टे पर देने का प्रावधान होगा।

जीएसटी काउंसिल की 51वीं बैठक

राजस्थान से मंत्री बीडी कल्ला रहे मौजूद

बोले- ऑनलाइन गेमिंग और कैसीनो के नियमों का हो रिव्यू

जयपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। जीएसटी काउंसिल की 51वीं बैठक केंद्रीय मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में आयोजित हुई। जिसमें राजस्थान का प्रतिनिधित्व शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला ने किया। इस दौरान कल्ला ने बैठक में कैसीनो और ऑनलाइन गेमिंग को लेकर राजस्थान सरकार का पक्ष रखा।

शिक्षा मंत्री डॉ. कल्ला ने कहा कि GST काउंसिल की सिफारिश के अनुसार कैसीनो, रेसकोर्स और ऑनलाइन गेमिंग के लिए भुगतान किए गए पूर्ण दांव मूल्य, अंकित मूल्य (फुल बैट वैल्यू-फेस वैल्यू) पर कर आरोपित होगा। वहीं आपूर्ति के मूल्य (वैल्यू ऑफ सप्लाई) के लिए परिषद की सिफारिश कैसीनो और ऑनलाइन गेमिंग के लिए एक समान है।

इसलिए, आपूर्ति मूल्य के सम्बंध में अंतिम निर्णय लेने से पूर्व इसका विस्तृत परीक्षण और विचार विमर्श किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन गेमिंग पर 28 प्रतिशत की दर लागू करना इसे बेटिंग और गेम्बलिंग की श्रेणी से अलग करने को बाधित नहीं करता है।

राजस्थान का पक्ष रखते हुए कल्ला ने कहा कि केन्द्रीय इलैक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी (इंटरमीडयरी गाइडलाइन एंड डिजिटल मीडिया एथिक्स कोड) नियम, 2021 पारित किए गए। इसमें ऑनलाइन गेमिंग के लिए सभी जरुरी निर्देश निर्धारित किए गए थे। इन नियमों में 6 अप्रैल 2023 को संशोधन किया गया। जिसमें अनुमत (परमिसिबल) ऑनलाइन गेम और अनुमत ऑनलाइन रियल मनी गेम की अवधारणा को शामिल करते हुए परिभाषित किया गया है।

ऐसे में सरकार के सभी विभागों को एक ही सिद्धांत पर काम करना चाहिए। अगर किसी विषय विशेष पर निर्णय लेने के लिए अधिकृत विभाग द्वारा लिए गए किसी भी मौलिक निर्णय को अन्य विभागों द्वारा स्वीकार किया जाना चाहिए। जिससे नियमों और निर्देशों में स्पष्टता और वस्तुपरकता आए। उन्होंने कहा कि केन्द्रीय इलैक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने अनुमत ऑनलाइन गेमिंग की अवधारणा को शामिल किया है।

ऐसे में इसे जीएसटी कानून के तहत बेटिंग और गेम्बलिंग के साथ जोड़ना, इन नियमों की भावना के विपरीत होगा। बैठक में राजस्थान की ओर से शासन सचिव वित्त कृष्ण कांत पाठक और वाणिज्यिक कर आयुक्त रवि कुमार सुरपुर मौजूद रहे।

नाबालिग को भट्टी में जलाया, गैंगरेप की आशंका

चांदी के कड़े से पहचान, बॉडी के टुकड़े मिले; खेत पर जाने के लिए निकली थी

भीलवाड़ा, 3 अगस्त (एजेंसियां)। राजस्थान के भीलवाड़ा में 14 साल की नाबालिग को कोयला भट्टी में जला दिया गया। आशंका जताई जा रही है कि इससे पहले उसके साथ गैंगरेप भी हुआ था। घटना की जानकारी मिलने के बाद 4 थानों की पुलिस मौके पर पहुंची। इस मामले में 3 आरोपियों को हिरासत में भी लिया गया है।

नाबालिग के बड़े भाई ने बताया कि सुबह 8 बजे उसकी छोटी बहन बकरियां लेकर घर से निकली थी। शाम को करीब 3 बजे बकरियां घर लौट आईं, लेकिन बहन घर नहीं आई। उसके बाद परिवार के लोगों ने उसे ढूंढना शुरू कर दिया। गांव में सभी रिश्तेदारों के घर व खेत पर

ढूंढा पर वह नहीं मिली।

रात करीब 8 बजे परिवार के लोगों व ग्रामीणों ने नाबालिग को फिर से ढूंढना शुरू किया। इसी दौरान करीब 10 बजे गांव के बाहर कालबेलियों के डेरे में कोयला बनाने की एक भट्टी जल रही थी। बारिश के समय यह भट्टी नहीं जलाई जाती है। शक होने के बाद भट्टी के पास जाकर देखा गया। वहां लापता बहन के जूते मिले। साथ ही आग में बहन का पहना हुआ चांदी का कड़ा और हड्डी के टुकड़े भी मिले। ग्रामीणों ने रात में ही कुछ कालबेलिया लोगों को पकड़ लिया था। इन्हें पुलिस थाने ले गई है। जब पकड़े गए तीन बदमाशों ने गैंगरेप और जलाने की बात कही तो पुलिस को इसकी सूचना दी गई। देर रात 4 थानों के पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे।

मामले की गंभीरता को देखते हुए रात को ही मौके पर फोरेंसिक टीम को बुलाया गया। गुरुवार सुबह एक बार फिर से सभी अधिकारी और जांच टीमें मौके पर पहुंच गई है और क्षेत्र की बारीकी से जांच कर रही है।

इस घटना के सामने आने के बाद राजस्थान गुर्जर महासभा के प्रदेशाध्यक्ष और पूर्व मंत्री कालूलाल गुर्जर व जिलाध्यक्ष शंकरलाल गुर्जर बड़ी संख्या में समाज के लोगों के साथ मौके पर पहुंचे है।

पूर्व डिप्टी सीएम के समर्थकों में फूट

सरपंच संघ जिला उपाध्यक्ष को जान से मारने का प्रयास

पूर्व कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष के खिलाफ मामला दर्ज

टोंक, 3 अगस्त (एजेंसियां)। पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट के 2 दिवसीय दौरे के दौरान सर्किट हॉउस में आमने-सामने हुए 2 कांग्रेसियों का झगड़ा अब सड़क पर आ गया है। दोनों कांग्रेस नेता पायलट गुट के हैं। रामसिंह मुकुल सहित सैकड़ों लोगों के साथ टोंक प्रधान सुनीता गुर्जर के आवास पर पहुंचे और उनके पति सरपंच संघ के - प्रदेश उपाध्यक्ष हंसराज फागना को जान से मारने का प्रयास किया। बाद में इसकी सूचना पुलिस को दी। सूचना मिलने पर DSP सलेह मोहम्मद पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और अतिरिक्त

टीम बुलाकर आरोपियों को भगाया। मामले में प्रधान पति हंसराज फागना ने कोतवाली में रिपोर्ट देकर पुलिस प्रशासन से कहा कि आरोपी गिरफ्तार नहीं हुए तो वह और उसकी पत्नी इस्तीफा दे देंगे।

टोंक में पायलट समर्थक 2 खेमों में बंटे हुए है। दोनों समर्थक सचिन पायलट के टोंक दौरे के दौरान सरपंच संघ के प्रदेश उपाध्यक्षउपाध्यक्षों और टोंक प्रधान पति हंसराज फागना की पूर्व कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष रामसिंह मुकुल के साथ आपस में बहसबाजी हो गई थी। अन्य लोगों ने बीच बचाव कर दोनों को दूर किया था। गुरुवार रात रामसिंह मुकुल और उसके साथी सिविल लाइन स्थित प्रधान के आवास पर चले गए, जहां प्रधान पति हंसराज फागना को पहले तो मोबाइल पर कॉल कर धमकी दी उसके बाद घर से बाहर आने पर जान से मारने की धमकी दी। घर के बाहर भीड़ देखकर प्रधान और उनके पति हंसराज फागना ने पुलिस को फोन किया। सूचना मिलने पर डीएसपी सलेह मोहम्मद, कोतवाल जितेंद्र सिंह टीम के साथ मौके पर पहुंचे।

आरोपियों की संख्या अधिक होने से पुलिस ने मौके पर अतिरिक्त पुलिस बल बुलाया। जहां पुलिस ने आरोपियों को हल्का बल प्रयोग कर भगाया। पीड़ित फागना ने रामसिंह, हंसराज गाता, रामदेव, सुनील सहित 100 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया गया है। इसकी जांच कोतवाल जितेंद्र सिंह को सौंपी है।

उदयपुर में फिर आ धमका तेंदुआ

बछड़े को उठा ले गया; जहां पिंजरा लगाया वहां मूवमेंट बंद किया

उदयपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। उदयपुर शहर से सटे बड़ी गांव में पिछले एक महीने से तेंदुए का मूवमेंट बढ़ने से लोग घबराए हुए हैं। आए दिन वह बछड़ों का अपना शिकार बना रहा है। वन विभाग ने पिंजरा लगा रखा है लेकिन तेंदुआ फिर भी गुपचुप आकर शिकार कर रहा है।

दो दिन पहले आए तेंदुए को लोगों ने देख लिया और उसका विडियो बना लिया। दिलचस्प

बात ये है कि जहां पिंजरा लगाया गया है उस तरफ तेंदुए ने अपना मूवमेंट ही बंद कर दिया।

पंचायत समिति सदस्य संजू सुथार ने बताया कि मंगलवार की रात एक घर में बने बाड़े में तेंदुआ आ गया और उसने गाय के बछड़े को अपना शिकार बना लिया। लोगों के शोर पर बछड़े को सीढ़ियों पर ही छोड़ भागा। बछड़े की मौत हो गई।

सुथार ने बताया कि तेंदुआ करीब 12 फिट ऊंची दीवार फांद कर अंदर कूदा। लोगो ने खेतों के समीप भी तेंदुए को देखा और उसका मोबाइल में वीडियो भी बनाया। बताते है कि इस तरह तेंदुए का मूवमेंट बढ़ने से इस क्षेत्र के लोगों में दशहत है।

रॉन्ग साइड से आए ट्रक ने बाइक को टक्कर मारी

दो दोस्तों की मौत, ड्राइवर ट्रक लेकर फरार

भिवाड़ी, 3 अगस्त (एजेंसियां)। अलवर के खुशखेड़ा औद्योगिक एरिया में एक ट्रक ने बाइक को चपेट में ले लिया। हादसे में बाइक सवार दो दोस्तों की मौत हो गई। हादसे की सूचना पर खुशखेड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों घायलों को टपूकड़ा सीएचसी लेकर गई। जहां दोनों युवकों को मृत घोषित कर दिया। पुलिस और परिजनों की मौजूदगी में पोस्टमॉर्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिए।

पुलिस घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों के माध्यम से ट्रक की तलाश में जुटी हुई है। खुशकेड़ा थाने के हेड कॉन्स्टेबल राजकुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र के बुरहेडा गांव का रहने वाला नवीन (24) पुत्र प्रकाश और कमालपुर गांव का रहने वाला अनिल (20) पुत्र सीताराम बाइक से खुशखेड़ा जा रहे थे। इस दौरान खुशखेड़ा औद्योगिक क्षेत्र में स्थित बीएसएस अस्पताल के सामने रॉन्ग साइड से आ रहे एक ट्रक ने उनकी बाइक को चपेट में ले लिया। जिससे दोनों ही युवक वही पर घायल होकर गिर गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को गंभीर हालत में टपूकड़ा सीएचसी पहुंचाया।

रणथम्भौर टाइगर रिजर्व के पास शिकारियों का ठिकाना

जैतपुर गांव में है ज्यादातर शिकारी, अवैध शिकार के कई मामले आए सामने

सवाई माधोपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। रणथम्भौर टाइगर रिजर्व के आस-पास बसे कुछ गांव अनैतिक और अवैध कामों का ठिकाना बनते जा रहे हैं। ऐसा ही एक गांव जैतपुर है। जहां अब तक अवैध शिकार के कई मामले सामने आ चुके हैं। हाल में रणथम्भौर में अवैध शिकार की ज्यादातर घटनाओं के आरोपी जैतपुर गांव से रहे है।

हाल ही में वन विभाग ने बोदल नाके के सवाई गंज क्षेत्र में दो युवकों को दो तीतर का शिकार करते हुए गिरफ्तार किया है। दोनों युवक जैतपुर गांव के ही रहने वाले हैं। जनवरी 2020 में रणथम्भौर की फलौदी रेंज के भैरूपुरा वन क्षेत्र में दो मादा चीतलों का शिकार हुआ था। आरोपी चीतल को मारकर कंधे पर लादकर ले जाते हुए वन विभाग के फोटो ट्रैप कैमरों में कैद हुए थे।

मामले में वन विभाग की ओर से बाद में कुछ आरोपियों को गिरफ्तार भी किया गया था, लेकिन आरोपियों को पकडने गई विभाग की टीम पर जैतपुर के लोगों ने हमला कर दिया था। जिसके बाद वन विभाग ने पुलिस जाब्ते की मौजूदगी में कार्रवाई करते हुए आरोपियों को गिरफ्तार किया था। कुछ दिन पहले वन विभाग की टीम रणथम्भौर की ROPT रेंज के गुढा वन क्षेत्र में गश्त कर रही थी। इस दौरान वन विभाग की टीम ने दो आरोपियों को पीछा करके पकड़ा था। ये दोनों आरोपी भी जैतपुर के ही थे। आरोपियों को गिरफ्तार कर वन क्षेत्र से बाहर लाते समय गेट पर जैतपुर गांव के लोगों की भीड़ जमा हो गई। इस भीड़ ने आरोपियों को छुड़ाने के लिए वन विभाग की टीम पर हमला कर दिया था। जिसमें वन विभाग के दो बॉर्डर होमगार्ड घायल हो गए थे।

केंद्रीय टीम ने कोत्तागुडेम जिले में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया

किसानों से बातचीत कर दिया हरसंभव मदद का आश्वासन

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। सात सदस्यीय केंद्रीय टीम ने कोठागुडेम जिले का दौरा किया और अश्वपुरम और बर्गमपाद मंडलों में बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का निरीक्षण किया। वरिष्ठ अधिकारियों कुणाल सत्यार्थी, अनिल गैसोदा, एम रमेश कुमार, भाया पांडे, जे श्रीनिवासुलु, डॉ. के पोन्नुस्वामी और एसके कुशवाह की टीम भद्राचलम पहुंची और आईटीडीए मीटिंग हॉल में बाढ़ से हुए नुकसान पर एक फोटो प्रदर्शनी का निरीक्षण किया।

जिला कलेक्टर डॉ. प्रियंका आला ने टीम को बताया कि मूसलाधार बारिश और गोदावरी बाढ़ के कारण 16 मंडलों के 44 गांवों के 1402 किसानों की 3151 एकड़ में खड़ी फसल खराब हो गई है. 41 घर पूरी तरह से और 162 घर आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुए हैं। छह मंडलों के नौ गांवों में 15 मवेशी, 19 बकरियां और 3030 मुर्गियां जबकि 103 बस्तियों में मिशन भगीरथ पाइप लाइनें क्षतिग्रस्त हो गईं। कलेक्टर ने टीम को बताया कि 115 पंचायत राज सड़कें, 61 आरएंडबी सड़कें और 47 स्थानों पर सिंचाई के बुनियादी ढांचे क्षतिग्रस्त हो गए। राहत उपायों का जिक्र करते हुए, 44 में 4454 परिवारों के 14,081 लोगों को राहत केंद्रों में स्थानांतरित किया गया। डॉ. आला ने कहा कि मूसलाधार बारिश और गोदावरी बाढ़ से जिले के 11 मंडलों के 84 गांव जलमग्न हो गए। टीम के सदस्यों ने अश्वपुरम मंडल के आनंदपुरम में किसानों से बातचीत की। उन्होंने कृषि विभाग के अधिकारियों को किसानों के बीच बाढ़ प्रतिरोधी फसलों के बारे में जागरूकता पैदा करने की सलाह दी। टीम ने कहा कि बारिश और बाढ़ से हुए नुकसान की रिपोर्ट केंद्र सरकार को सौंपी जाएगी। पुलिस अधीक्षक डॉ. विनीत जी, आईटीडीए पीओ प्रतीक जैन, अतिरिक्त कलेक्टर मधुसूदन राजू, सिंचाई एसई वेंकटेश्वर रेड्डी और अन्य उपस्थित थे।

कलेक्टर ने यादाद्री थर्मल पावर प्लांट का निरीक्षण किया

नलगोंडा, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। जिला कलेक्टर आर वी कर्णन ने गुरुवार को दमराचेरला मंडल के वीरलापलेम में यदाद्री थर्मल पावर प्लांट के कार्यों का निरीक्षण किया और अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। उन्होंने प्रस्तावित रेलवे लाइन के लिए कार्यों की स्थिति और भूमि अधिग्रहण की प्रगति की जानकारी ली। जेनको के निदेशक (प्रोजेक्ट्स) सच्चिदानंदम ने कलेक्टर को बताया कि 4,000 मेगावाट के अल्ट्रा मेगा थर्मल पावर प्लांट पर काम के लिए 22,000 करोड़ रुपये खर्च किए गए थे। दो इकाइयां दिसंबर तक चालू हो जाएंगी और 1600 मेगावाट बिजली पैदा करेंगी। शेष तीन इकाइयां 2024 तक चालू हो जाएंगी और 2,400 मेगावाट बिजली पैदा करेंगी।

राशन डीलरों के साथ मंत्री ने की बैठक, कमीशन बढ़ाने की बात कही

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य में राशन डीलरों का कमीशन 200 रुपये से बढ़ाकर 900 रुपये प्रति टन कर दिया गया। राशन पोर्टेबिलिटी और विभिन्न अन्य कारकों के कारण उनकी आय में गिरावट के कारण मानवीय आधार पर बढ़ोतरी पर मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने उक्त निर्णय लिया। इस आशय के निर्णय की घोषणा नागरिक आपूर्ति मंत्री गंगुला कमलाकर ने राशन डीलर संघों के प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक के बाद की। कमीशन में बढ़ोतरी से ग्रामीण इलाकों के राशन डीलरों को भी फायदा होगा। मंत्री के समक्ष अपनी शिकायतें रखने वाले राशन डीलरों ने उनसे अपनी सेवाओं को लाभकारी बनाने का आग्रह किया। उनके द्वारा व्यक्त की गई चिंता को साझा करते हुए, मंत्री ने कहा कि उनके मुद्दों को मुख्यमंत्री के समक्ष उठाया जाएगा। उन्होंने कहा कि बीआरएस सरकार सभी वर्गों के कल्याण के लिए काम कर रही है। उन्होंने आश्वासन दिया कि राशन डीलरों के सभी वास्तविक मुद्दों को भी मुख्यमंत्री के संज्ञान में लाकर उनका समाधान किया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों, नगर पालिकाओं और नगर निगमों की सीमा में राशन डीलरों के साथ समान व्यवहार सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। सरकारी मुख्य सचेतक दस्यम विनय भास्कर, विधायक पद्मा देवेंदर रेड्डी और राशन डीलर एसोसिएशन के मानद अध्यक्ष देवेंदर रेड्डी ने भी आज राज्य सचिवालय में बैठक में हिस्सा लिया।

सिखवाल प्रगति समाज युवा प्रकोष्ठ ने की श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के संदर्भ में बैठक

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। सिखवाल प्रगति समाज युवा प्रकोष्ठ द्वारा आगामी 6 से 8 सितम्बर तक तीन दिवसीय श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं नंदोत्सव का भव्य आयोजन श्री राधाकृष्ण धाम श्रृंग ऋषि भवन, फीलखाना में आयोजित होगा। इसी संदर्भ में नवगठित युवा टीम की एक बैठक ऋषि श्रृंग भवन परिसर में संपन्न हुई। श्रृंग वंदना के पश्चात उपाध्यक्ष रामदेव नागला के सान्निध्य में युवा प्रकोष्ठ के नवनियुक्त अध्यक्ष संदीप जायलवाल की अध्यक्षता में आगामी श्रीकृष्ण जन्मोत्सव के शुभावसर पर सिखवाल समाज की युवा विभूति कथावाचक भीलवाड़ा निवासी श्री पुष्पेन्द्र भाई ओझा के मुखारविंद से श्री स्कंद पुराण में वर्णित श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं नंदोत्सव पर आधारित तीन दिवसीय कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम से आयोजित करने का निर्णय लिया गया। रामदेव नागला ने कहा कि आगामी नवरात्री के अवसर पर डांडिया महोत्सव तथा दीपावली स्नेहमिलन कार्यक्रम एवं सामूहिक गोवर्धन पूजा व् अन्नकूट का भव्य कार्यक्रम पर भी चर्चा की गयी l सभी स्वजातीय बंधुओं से कार्यक्रम को सफल बनाने का अनुरोध करते हुए सामाजिक कार्यों में युवा शक्ति को सहयोग कर आगे बढ़ने में प्रोत्साहन देने का कहा गया। युवा प्रकोष्ठ तेलंगाना के अध्यक्ष नरेश पांडिया के धन्यवाद ज्ञापन से सभा समाप्त हुई।

माणकोंदूर हमले के दो आरोपी गिरफ्तार

करीमनगर, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। मनकोंदूर हमले के दो आरोपियों को पुलिस ने गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया। मुख्य आरोपी वीणावंका सैतेजा और एक अन्य व्यक्ति कंडुला प्रदीप को मनकोंदुर पुलिस ने करीमनगर बस-स्टैंड के पास से गिरफ्तार किया। उनके पास से एक देशी पिस्तौल और दो गोलियां बरामद की गईं। घटना में तीन लोग शामिल थे, जबकि एक आरोपी पाला मल्लेशन को पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया था। पुलिस आयुक्त एल. सुब्बारायुडु ने कहा कि गोदावरीखानी में जीएम कॉलोनी के मूल निवासी सैतेजा ने मनकोंदुर के बशबोइना अरुण के खिलाफ यह कहते हुए द्वेष पाल लिया था कि अरुण उसकी बहन की आत्महत्या के लिए जिम्मेदार था। सैतेजा ने अपने दोस्तों प्रदीप और मल्लेशम के साथ मिलकर 19 अप्रैल की रात करीब 10 बजे मानकोंदूर में अरुण पर हमला किया और देशी पिस्तौल से उस पर गोली चलाने की कोशिश की।

दक्षिणी सेना कमांडर ने आयुध निर्माणी मेदक का दौरा किया

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। लेफ्टिनेंट जनरल एके सिंह एवीएसएम, वाईएसएम, एसएम, वीएसएम, जीओसी-इन-सी, दक्षिणी कमान ने गुरुवार को उपलब्ध सुविधाओं को देखने के लिए आयुध निर्माणी मेदक (ओएफएमके) का दौरा किया। उनके साथ लेफ्टिनेंट जनरल केएस बरार, एवीएसएम, जनरल भी थे। ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी) दक्षिण भारत क्षेत्र, संजय द्विवेदी, एनडीसी, सीएमडी/एवीएनएल, के सुधाकर, सीजीएम/ओएफएमके और मेजर जनरल आरएस सुंदरम एसएम, वीएसएम, एमजी ईएमई दक्षिणी कमान ओएफएमके टीम ने उन्हें फाउंड्री शॉप, हल एंड बुर्ज शॉप, व्हीकल असेंबली शॉप और फाइनल एक्सेप्टेंस शॉप का व्यापक दौरा प्रदान किया। ओएफएमके ने कारखाने में उपलब्ध उन्नत परीक्षण सुविधाओं का प्रदर्शन किया और उन्हें बीएमपी वाहन पर एक संक्षिप्त सवारी के लिए भी ले जाया गया। ओएफएमके ने आधुनिक सैन्य उपकरणों के लिए भारतीय सेना की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के अनुरूप चल रही विभिन्न अनुसंधान और विकास (आरएंडडी) परियोजनाओं पर भी प्रकाश डाला।

अगले चार शनिवारों के लिए पासपोर्ट सेवाओं का विस्तार

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। विदेश मंत्रालय ने बेगमपेट, अमीरपेट, टोलीचौकी, निज़ामाबाद और करीमनगर सहित सभी पांच पासपोर्ट सेवा केंद्रों (पीएसके) में 12 अगस्त से शुरू होने वाले अगले चार शनिवारों के लिए विशेष अभियान के संचालन का विस्तार करने का निर्णय लिया है।

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी दसारी बलैया ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि नियुक्तियां 4 अगस्त को शाम 4.30 बजे से पासपोर्ट सेवा पोर्टल पर जारी और उपलब्ध कराई जाएंगी।

विद्यार्थियों को हिंदी पठन-पाठन की ओर प्रेरित होने की जरूरत : डॉ. गंगाधर वानोडे

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हिंदी के प्रचार-प्रसार में आगे केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा की हैदराबाद शाखा के प्रमुख डॉ. गंगाधर वानोडे ने आज आंध्र विद्यालय कॉलेज, दोमलगुड़ा का दौरा कर कॉलेज के विद्यार्थियों से बातचीत की तथा उन्हें हिंदी सीखने की ओर प्रेरित किया। इस दौरान हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शशिकांत मिश्र ने उनका स्वागत किया। विद्यार्थियों को हिंदी के पठन-पाठन की ओर प्रेरित करते हुए डॉ. वानोडे ने बताया कि केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा द्वारा देशभर के अहिंदी भाषी राज्यों में शाखाएं खोली गई हैं तथा सभी शाखाएं अपने-अपने क्षेत्रों के हिंदी शिक्षकों को हिंदी का प्रशिक्षण दे रही हैं। हाल ही में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा के नवनियुक्त निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी ने दमखम से हिंदी के प्रचार-प्रसार का निर्देश दिया है। इस निर्देश के तहत केंद्र द्वारा युवाओं को विभिन्न क्षेत्र में हिंदी में रोजगार उपलब्ध करने के लिए सांध्यकालीन पाठ्यक्रम शुरू किया जा रहा है। इसी के तहत अनुवाद डिप्लामा, हिंदी शिक्षण कौशल तथा एडिटिंग आदि अल्पकालीन पाठ्यक्रम शुरू किये जाएंगे। इसके लिए उन्होंने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। इस दौरान उन्होंने कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सीएच राजलिंगम से भी मुलाकात की तथा हिंदी के विकास के बारे में चर्चा की। डॉ. राजलिंगम ने उन्हें हरसंभव मदद का आश्वासन दिया। इस दौरान संसथान के सहायक प्राध्यापक डॉ. साईनाथ चापले ने भी विद्यार्थियों को हिंदी के प्रति प्रेरित किया।

भारतीय अंगदान दिवस पर कर्मचारियों ने ली अंगदान की शपथ

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। परिषद मुख्यालय के निर्देश के अनुपालन के तहत राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा संपदा संस्थान, हैदराबाद में भारतीय अंगदान दिवस के उपलक्ष्य में डॉ. गोलि पेंचल प्रसाद, प्रभारी सहायक निदेशक के मार्गदर्शन में एक शपथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भारतीय अंगदान दिवस 3 अगस्त को प्रतिवर्ष मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य अंगदान के महत्व के बारे में लोगों को जागरूक करना तथा स्वैच्छिक अंगदाताओं के बहुमूल्य योगदान की सराहना करना है। इस दिन की स्थापना 3 अगस्त 1994 से राष्ट्रीय अंग और ऊतक प्रत्यारोपण संगठन (नाटो) द्वारा भारत में पहले सफल मृत हृदय प्रत्यारोपण की स्मृति में मनाया जाता है।

कार्यक्रम का संचालन संस्थान के डॉ. अशफाक़ अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) ने किया। उन्होंने इस दिन के महत्व उद्देश्य एवं जनभागीदारी के विविध प्रयासों के बारे में उपस्थितियों को अवगत कराया। तत्पश्चात प्रभारी सहायक निदेशक जी ने प्राचीन ग्रंथों में उपलब्ध अंगदान विषयों के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए तथा उपस्थितियों को अंगदान विषयक अधिक जानकारी हेतु इस क्षेत्र में कार्य करनेवाले अन्य संस्थान से संपर्क करने की सलाह दी। कार्यक्रम के दौरान संस्थान में कार्यरत सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे । इस अवसर पर सभी ने प्रतिज्ञा लिया कि वह मृत्यु के पश्चात अपने अंगों और ऊतकों का दान करेंगे और दूसरे लोगों को भी अंगदान हेतु प्रोत्साहित करेंगे। इसके उपरांत उपस्थितियों के आभार के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

तिरंगे के रंग-सावन के संग कार्यक्रम के लिए हुई बैठक

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। अग्रणी महिला मंच की अध्यक्ष सुमन भुवानिया ने उक्त जानकारी देते हुए कहा बैठक रितु गर्ग के निवास स्थान पर हुई जिसमे सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया कि 10 अगस्त गुरुवार को अक्षय होटल, हिमायतनगर में तिरंगे के रंग-सावन के संग कार्यक्रम किया जाएगा। महिलाओं से आग्रह है की अधिक से अधिक तिरंगे के रंग रूप में तैयार होकर आए और अन्य प्रतियोगिता भी रखी जाएगी। अवसर पर बबिता गर्ग, रितु गर्ग, टीना खंडेलवाल, श्वेता खंडेलवाल, सुनयना नरसरिया, रीता अग्रवाल, रूपा गुप्ता, रितु गोयल, प्रीति गोयल आदि उपस्थित रही।

पार्षद ने बच्चों में वितरित की कृमि मुक्त दवा

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्देश पर जामबाग के पार्षद राकेश जायसवाल ने आज गांधी भवन सरकारी स्कूल, नामपल्ली में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का उद्घाटन किया तथा बच्चों में कृमिनाश के लिए दवा वितरित की। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि बच्चों को स्वस्थ और कृमि मुक्त बनाने के लिए सभी योग्य बच्चों को एल्बेंडाजोल 400 मिलीग्राम लेना चाहिए। कार्यक्रम में हिंदी नगर यूपीएचसी एमओ डॉ. उमैरा समरीन, की टीम, भाजपा के वरिष्ठ नेता नरहरि, रामकृष्ण, रेणुका, रघु कांबले, जनार्दन, राजू यादव ने भाग लिया।

सड़क दुर्घटना में घायल छात्र की मौत

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। बोवेनपल्ली में बुधवार को डीसीएम से कुचलकर गंभीर रूप से घायल हुई डिग्री छात्रा वैष्णवी की गुरुवार को इलाज के दौरान मौत हो गई। एक निजी कॉलेज से डिग्री हासिल कर रही पीड़िता अपने पिता विजय कुमार के साथ दोपहिया वाहन पर यात्रा कर रही थी, जब बुधवार सुबह प्रियदर्शिनी होटल के पास एक डीसीएम ने उनके वाहन को टक्कर मार दी। विजय कुमार गाड़ी चला रहा था जबकि वैष्णवी पीछे बैठी थी। वैष्णवी डीसीएम के पिछले पहिये के नीचे आ गई और गंभीर रूप से घायल हो गई। पुलिस ने कहा कि उसे अस्पताल ले जाया गया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। हादसे में उसके पिता विजय कुमार को भी चोटें आयीं। पुलिस ने चालक को हिरासत में लेकर मामला दर्ज कर लिया है।

परिवार में बड़े बुजुर्गों को सम्मान दें : साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। सिकंदराबाद के तेरापंथ भवन में दार्शनिक मीमांसा करते हुए साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने श्रोता समाज को प्रतिबोध देते हुए कहा कि कारणवाद का सिद्धांत दर्शन जगत का एक विवेचन सिद्धांत है। जिससे व्यवहार पक्ष में जोड़ा जा सकता है। दो कारण होते हैं - उपादान कारण और दूसरा निमित्त कारण। जिससे जो वस्तु बनती है वह उपादान कारण होता है। मिट्टी को कुम्हार (कर्ता) न मिले तो घड़ा नहीं बन सकता। कर्ता है पर निमित्त कारण न मिले तो निर्माण संभव नहीं है। स्थूल जगत में निर्माण के लिए उपादान और निमित्त के साथ कहीं-कहीं कर्ता कारण भी आवश्यक होता है। निमित्त और उपादान कारण जितने बलिष्ठ होते हैं वैसा ही महत्वपूर्ण निर्माण होता है। साधना की दृष्टि से विचार किया जाए तो हम जिस लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहते हैं उसमें उपादान व्यक्तित्व स्वयं यानी आत्मा है। आत्मा का स्वरूप वस्तुतः पवित्र है, पर अभी मलिन है। स्वाभाविक रूप से संसार में परिभ्रमण करने वाली आत्मा को मूल रूप में लाने के लिए निमित की जरूरत है। निमित्त का जीवन पर काफी प्रभाव पड़ता है। चित्त समाधिस्थता के लिए व्यक्ति स्वयं ही जिम्मेदार है। बाह्य व्यवस्थाये चित्त समाधि में निमित्त बन सकती है पर मूलतः व्यक्ति पर ही निर्भर है कि वह किस प्रकार शांति से जीए। साधना के लिए तथा शांति और आनंद के लिए हमारे निमित्त अच्छे होने चाहिए। साध्वीश्री ने आगे कहा कि अचार्यश्री भिक्षु द्वारा रचित "शील की नव बाड़" ग्रंथ का अध्ययन और आचरण महत्वपूर्ण है। घर परिवार में भी बड़े बुजुर्गों के अनुभव को सम्मान देना, घर परिवार में भी अपना अनुशासन और मर्यादा होनी चाहिए। निरीक्षण करते रहना चाहिए कि घर के सदस्य किस ओर जा रहे हैं। हुक्का पार्लर जैसी कुसंस्कृति समाज, परिवार के लिए कलंक है।

पित्ती ट्रस्ट-अग्रवाल सेवा दल का 113वां निशुल्क मेगा चिकित्सा शिविर 6 को

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। बदरीविशाल पन्नालाल पित्ती ट्रस्ट एवं अग्रवाल सेवा दल द्वारा यूथ एसोसिएशन हैदरगुड़ा के सहयोग से 113 वां निशुल्क मेगा मेडिकल कैंप 6 अगस्त को सुबह 10 से 2 तक अत्तापुर पिलर नंबर 145 स्थित सरकारी हाई स्कूल (नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा के सामने) में आयोजित किया जाएगा। आज यहां सेवा दल के प्रचार संयोजक अजीत गुप्ता द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, मेगा मेडिकल शिविर में बेगमपेट स्थित मेडिकवर अस्पताल द्वारा सामान्य परीक्षण, स्त्री रोग, अस्थि रोग, हृदय रोग,ईसीजी -2डी इको-बीएमडी, आरबीएस-रक्तचाप जांच की जाएगी। ईएनटी की जांच ईएनटी सर्जन डॉ.अविनाश द्वारा की जाएगी। अवसर परएलसीएस डंडू नेत्र संस्थान वेस्ट मारेडपल्लीद्वारा नेत्रों की जांच की जाएगी तथा योग्य रोगियों को चश्मे वितरित किए जाएंगे ।साथ ही जिनको मोतियाबिंद के ऑपरेशन की आवश्यकता होगी उनके लिए ऑपरेशन की व्यवस्था की जाएगी। अवसर पर दांतों की जांच इवोक डेंटल केयर के डॉ. मनीता सेठ द्वारा की जाएगी साथ ही फिजियोथेरेपी की सेवा डॉक्टर मीता बजाजद्वारा की जाएगी। शिविर के संयोजक व अग्रवाल सेवा दल के प्रदीप अग्रवाल, सुधीर गुप्ता, और वर्धराज रेड्डी, एस वेंकटेश, एस महेंद्र से शिविर हेतु संपर्क किया जा सकता है। शिविर में नाम पंजीकरण कार्यक्रम स्थल पर सुबह 10:00 से 12:00 के बीच किया जाएगा। क्षेत्र के सभी लोगों से इस शिविर का अधिक से अधिक लाभ लेने का आग्रह किया गया है।

स्वास्थ्य एक बड़ा वरदान : अनुदीप दुरीशेट्टी

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद के जिला कलेक्टर अनुदीप दुरीशेट्टी ने कहा कि स्वास्थ्य एक बड़ा वरदान है। आज एक स्वस्थ व्यक्ति को करोड़पति माना जा रहा है। वे राष्ट्रीय कीट दिवस के अवसर पर गुरुवार को राजभवन रोड स्थित सरकारी स्कूल में आयोजित एक कार्यक्रम में छात्रों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमें खाना खाते समय हाथ धोना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर हम खाना खाने से पहले अपने हाथ साफ नहीं करेंगे तो कीटाणु हमारे पेट में चले जाएंगे। फिर वहीं रह जाएगा और हमारे द्वारा खाया जाने वाला शक्तिवर्धक भोजन हमारे शरीर में नहीं पहुंच पाएगा। बच्चों की लंबाई और दिमाग का विकास

श्री अनिरुद्धाचार्यजी के मुखारविंद से भाग्यनगर में पहली बार भव्य भागवत कथा के सफल आयोजन पर आयोजक पुरुषोत्तम जितेन्द्र मिश्र परिवार का तेलंगाना प्रादेशिक मारवाडी सम्मेलन की ओर से अभिवादन करते हुए अध्यक्ष रमेश कुमार बंग, अमित कुमार लड्ढा, विजय कुमार जैन, लक्ष्मीनिवास सारडा, मीठालाल प्रजापति, कन्हैयालाल ओझा, महेश भाटी, राजेन्द्र झँवर, आशीष कालिया, निलेश मून्दडा, नवलकिशोर बंग, राजेश तोषनीवाल, विजय सारडा, कैलाश मंत्री, महेश बजाज एवं अन्य।

मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव गुरुवार के मानसून सत्र में शामिल होने के लिए विधानसभा पहुंचने पर विधायी कार्य मंत्री वेमुला प्रशांत रेड्डी, गृहमंत्री महमूद अली, सरकारी मुख्य सचेतक दास्यम विनयभास्कर, मुख्य सचिव शांति कुमारी, विधानसभा सचिव नरसिम्हाचार्य आदि ने स्वागत किया।

एशिया कप से पहले फिट नहीं होंगे अय्यर और राहुल

रिपोर्ट में दावा- ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज से वापसी की उम्मीद

मुंबई, 3 अगस्त (एजेंसियां)। वर्ल्ड कप और एशिया कप टूर्नामेंट से पहले अय्यर, राहुल और पंत की फिटनेस ने भारतीय सिलेक्टर्स की चिंता बढ़ दी है। तीनों इन दिनों बेंगलुरु स्थित नेशनल क्रिकेट अकादमी (NCA) में रिहैब प्रोसेस से गुजर रहे हैं। फिलहाल, खबर मिडिल ऑर्डर बैटर श्रेयस अय्यर और केएल राहुल के बारे में है।

मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया गया है कि श्रेयस अय्यर और केएल राहुल एशिया कप से पहले फिट नहीं होंगे। सितंबर में होने जा रही ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ वनडे सीरीज से ही इन दोनों बैटर्स की वापसी की उम्मीद है। ऐसे में एशिया कप के लिए सिलेक्टर्स को मिडिल ऑर्डर के विकल्प खोजने होंगे। हालांकि, बोर्ड ने अब तक एशिया कप टूर्नामेंट के लिए टीम का ऐलान नहीं किया है।

वापसी कर चुके हैं बुमराह

2 दिन पहले तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने चोट से वापसी की है। उन्हें आयरलैंड दौरे के

लिए भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया है। जसप्रीत ने करीब एक साल बाद टीम में वापसी की है। चोट के कारण उन्हें पिछला एशिया कप, टी-20 वर्ल्ड कप और डब्ल्यूटीसी फाइनल छोड़ना पड़ा था। उन्हें पिछले साल बैक इंजरी हुई थी। उन्होंने आखिरी मुकाबला 25 सितंबर को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेला था। पढ़ें पूरी खबर

बीसीसीआई ने जारी की थी फिटनेस अपडेट

बोर्ड ने कुछ दिनों पहले अपने खिलाड़ियों की फिटनेस अपडेट जारी की थी। इस रिपोर्ट में बुमराह, अय्यर, राहुल और प्रसिद्ध कृष्णा की फिटनेस अपडेट दी गई थी। ऋषभ पंत ने बैटिंग-विकेटकीपिंग की प्रैक्टिस शुरू की

30 अगस्त से शुरू होगा एशिया कप

एशिया कप की शुरुआत 30 अगस्त से हो रही है। इसके चार मुकाबले पाकिस्तान में खेले जाएंगे। शेष मुकाबले श्रीलंका में खेले जाएंगे। भारत का पहला मुकाबला 2 सितंबर को पाकिस्तान से होगा। देखिए एशिया कप में भारत के मुकाबले...

अय्यर-राहुल इतने अहम क्यों...?

अब सवाल उठता है कि श्रेयस अय्यर और केएल राहुल भारतीय बैटिंग के लिए इतने अहम क्यों हैं। इस सवाल का जवाब आप अगले 2 पॉइंट्स में समझेंगे...

नंबर-4 में दुनिया के बेस्ट बैटर्स में शामिल हैं अय्यर श्रेयस अय्यर इस समय दुनिया के बेस्ट नंबर-4 बैटर्स में शुमार हैं। पिछले कुछ साल के रिकॉर्ड इस बात की गवाही दे रहे हैं, जो आप आगे ग्राफिक्स में पढ़ेंगे।

राहुल विकेटकीपिंग करते हैं और किसी भी पोजिशन पर बैटिंग करने में सक्षम केएल राहुल तकनीकी रूप से सक्षम बल्लेबाज हैं। उन्होंने लंबे समय तक टीम की ओपनिंग की है, लेकिन सिलेक्टर्स अब उन्हें नंबर-5 पर खिलाना चाहते हैं। राहुल किसी भी पोजिशन पर खेलने की क्षमता रखते हैं।

भारत की विमेंस कंपाउंड टीम वर्ल्ड आर्चरी के फाइनल में

92 साल के टूर्नामेंट इतिहास में पहली बार गोल्ड जीतने का मौका, मैक्सिको से मुकाबला

बर्लिन, 3 अगस्त (एजेंसियां)। भारत की विमेंस कंपाउंड टीम वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशप के फाइनल में पहुंच गई है। जर्मनी की राजधानी बर्लिन में खेले जा रहे वर्ल्ड चैंपियनशिप में भारतीय विमेंस कंपाउंड आर्चरी टीम ने सेमीफाइनल में कोलंबिया को 220-216 से हराया।

टीम में आर्चर ज्योति सुरेख, वेन्नम परनीत कौर और अदिति स्वामी ने फाइनल में जगह बनाई। अगर टीम गोल्ड जीतती है तो टूर्नामेंट के इतिहास में पहली बार भारत गोल्ड जीतेगा। आर्चरी चैंपियनशिप चार साल में एक बार होने वाला इवेंट है। इसमें ओलिंपिक क्वालिफिकेशन का भी क्वोटा है।

मेंस टीम बाहर

कंपाउंड मेंस और मिक्स्ड टीम की टूर्नामेंट में कड़ी हार के बाद समाप्त हो गईं। मेंस टीम में अभिषेक वर्मा, ओजस देवताले और प्रथमेश जावकर क्वार्टर फाइनल में नीदरलैंड से 230-235 से हार गए।

दूसरी ओर मिक्स्ड इवेंट में में, देवतले और ज्योति सुरेखा को क्वार्टरफाइनल में अमेरिका ने 154-153 से हराया।

ओलिंपिक में जाने का मौका गवायां

भारतीय तीरंदाजों में मेंस और विमेंस की रिकर्व टीम क्वार्टरफाइनल में बाहर हो गई। इसके चलते टीमों की डाइरेक्ट ओलिंपिक में जाने का मौका गवां दिया। अब टीम को अगले बड़े टूर्नामेंट का इंतजार करना होगा।

ओलिंपिक्स में जाने का अगला मौका एशियाड में

पेरिस ओलिंपिक्स क्वालीफायर का अगला दौर कॉन्टिनेंटल गेम्स होगा। भारत के लिए यह अक्टूबर में हांग्जो एशियाड होगा जहां मिक्स्ड टीम चैंपियन और मेंस और विमेंस में से एक खिलाड़ी चयनित होंगे। नवंबर में बैंकॉक में एशियाई चैम्पियनशिप और अगले साल जून में अंतालया वर्ल्ड कप अंतिम दो क्वालीफाइंग टूर्नामेंट हैं।

फरीदकोट की 55 वर्षीय महिला ने 100 मीटर एथलीट गेम नेशनल में स्वर्ण पदक जीता

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। पंजाब पुलिस में एक पद के लिए चुने जाने के बावजूद, उन्हें व्यक्तिगत कारणों से नौकरी से इनकार करना पड़ा। हालांकि, उन्होंने इससे अपने जज्बे पर कोई असर नहीं पड़ने दिया। अब स्वर्ण जीतकर वीरपाल ने भारतीयों को गौरवान्वित किया है।

दृढ़ संकल्प के एक उल्लेखनीय प्रदर्शन में पंजाब के फरीदकोट की एक गृहिणी, 55 वर्षीय वीरपाल कौर 50+ मास्टर गेम्स में 100 मीटर एथलीट गेम नेशनल में स्वर्ण पदक जीतने के बाद शहर में चर्चा का विषय बन गई हैं। यह कार्यक्रम सभी उम्र के पुरुषों और महिलाओं को खेलों में

भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की मुख्यमंत्री भगवंत मान की पहल का हिस्सा था और ऐसा लगता है कि वीरपाल कौर को इसमें दिलचस्पी थी।

पंजाब पुलिस में एक पद के लिए चुने जाने के बावजूद, उन्हें व्यक्तिगत कारणों से नौकरी से इनकार करना पड़ा। हालांकि, उन्होंने इससे अपने जज्बे पर कोई असर नहीं पड़ने दिया। जब मास्टर गेम्स में भाग लेने का अवसर आया तो वीरपाल ने इसके लिए पूरे उत्साह के साथ तैयारी की। पिछले वर्ष उन्होंने अपनी असाधारण एथलेटिक क्षमता का प्रदर्शन करते हुए 22 पदकों और कई सर्टिफिकेट एकत्रित किए थे।

उत्कृष्टता की उनकी निरंतर खोज से वीरपाल ने देश और राज्य को गौरवान्वित करने का काम किया है। अमेरिका जाकर भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया। हालांकि, वीरपाल कौर के लिए यह प्रसिद्धि पाने के लिए नहीं था। उन्होंने कहा कि वह केवल सम्मान चाहती हैं। एक गृहिणी होने के नाते, वह गर्व से बिना किसी सहायता के घर के सभी काम संभालती हैं।

वीरपाल अपनी प्रेरणा का श्रेय महान एथलीट फौजा सिंह को देती हैं, जो अपने अविश्वसनीय कारनामों से उम्र को मात देते रहते हैं। अपने आदर्श की तरह, वह साबित करना चाहती हैं कि उम्र सिर्फ एक संख्या है और दृढ़ संकल्प सभी बाधाओं को पार कर सकता है। जैसा कि राष्ट्र उनकी उपलब्धियों की सराहना करता है, उनकी कहानी सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह साबित करती है कि अपने सपनों को पूरा करने और दुनिया पर अपनी छाप छोड़ने की कोई उम्र नहीं है।

नीरज चोपड़ा ने फोन कर पाकिस्तानी खिलाड़ी को दी बधाई, यासिर को नहीं हो रहा यकीन

नई दिल्ली, 3 अगस्त (एजेंसियां)। यासिर ने बताया कि वह नीरज के प्रदर्शन पर निगाह रखते हैं और उनके अभ्यास के तरीकों का अनुसरण करते हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में हमारे पास पर्याप्त उपकरण और विदेशी कोच नहीं हैं।

पाकिस्तान के युवा भालाफेंक एथलीट ओलंपिक चैंपियन भारत के नीरज चोपड़ा से एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में जीते अपने कांस्य पदक की बधाई पाकर बेहद उत्साहित हैं। यासिर ने पिछले महीने बैंकाक में 79.83 मीटर भाला फेंककर पदक जीता था। जियो टीवी से बातचीत में यासिर ने कहा कि मेरे लिए यह सुखद आश्चर्य था कि जब नीरज ने फोन कर मेरा हौसला बढ़ाया।

उन्होंने भविष्य के लिए भी मुझे शुभकामनाएं दीं। जहां भारत छह स्वर्ण और 12 रजत सहित 27 पदक लेकर स्वदेश लौटा, वहीं पाकिस्तान को एकमात्र पदक यासिर ने दिलाया। पाकिस्तान के शीर्ष भालाफेंक एथलीट अरशद नदीम ने इस स्पर्धा में चोट के चलते हिस्सा नहीं लिया था। यासिर ने बताया कि वह नीरज के प्रदर्शन पर निगाह रखते हैं और उनके अभ्यास के तरीकों का अनुसरण करते हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में हमारे पास पर्याप्त उपकरण और विदेशी कोच नहीं हैं।

बाउंड्री लाइन पर मैथ्यू वेड ने झोंक दी पूरी ताकत

जिसने भी देखा हैरान रह गया

लंदन, 3 अगस्त (एजेंसियां)। इंग्लैंड में इन दिनों द हंड्रेड बॉल टूर्नामेंट खेला जा रहा है। इस लीग

के तीसरे मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया के विकेटकीपर बल्लेबाज मैथ्यू वेड ने कमाल किया। उन्होंने बाउंड्री लाइन पर पूरी ताकत झोंकते हुए छक्के को रोक दिया। इस कमाल की फील्डिंग के दम पर उन्होंने अपनी टीम के लिए 4 रन बचाए। वेड के इस कारनामे को देख फैंस ने तालियां पीट दीं।

द हंड्रेड बॉल टूर्नामेंट के तीसरे मुकाबले में लंदन स्पिरिट और ओवल इनविसिंबल की टीमें आमने-सामने थीं। इस मैच को ओवल की टीम ने 3 विकेट से अपना नाम किया। भले ही मैथ्यू वेड की टीम लंदन स्पिरिट मैच हार गई हो, लेकिन वेड ने कमाल की फील्डिंग गे सभी का दिल जीत लिया। अब इसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

मैथ्यू वेड ने बाउंड्री लाइन पर किया कमाल

वीडियो में देखा जा सकता है कि लंदन स्पिरिट के लिए 94वीं बॉल थॉम्पसन ने डाली थी। यह एक लो फुलटॉस डिलेवरी थी, जिस पर बल्लेबाज गस एटकिंसन ने डीप स्क्वायर लेग के ऊपर से छक्का लगाना चाहा। वह कुछ हद तक कामयाब भी हो गए थे। लेकिन वहां खड़े मैथ्यू वेड बीच में आए और उन्होंने हवा में छलांग लगाकर छक्के के लिए जाती गेंद को मैदान के अंदर की तरफ फेंका और खुद बाउंड्री के बाहर जा गिरे।

वेड ने 4 रन बचाए और 37 रनों का योगदान दिया

मैथ्यू वेड ने छक्का बचा लिया। इस बॉल पर बल्लेबाजों ने 2 रन भाग लिए। इस तरह वेड ने अपनी टीम के लिए 4 जरूरी रन बचाए थे। इससे पहले उन्होंने मुकाबले में अपनी टीम के लिए 27 गें दपर 37 रनों का योगदान भी दिया था। वेड के बल्ले से 4 शानदार चौके भी निकले थे।

मैच का हाल

अगर मैच की बात करें तो लंदन स्पिरिट की टीम ने पहले खेलते हुए 100 गेंद पर 10 विकेट खोकर 131 रन बनाए थे। टीम के लिए एडम रोसिंगटन ने 39 रनों की सबसे बड़ी पारी खेली थी। इसके जवाब में ओवल की टीम ने 1 गेंद शेष रहते 7 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। जीते के हीरो सुनील नरेन रहे, जिन्होंने 20 गेंद डालकर 14 रन दिए और 2 विकेट निकाले। उन्होंने बल्ले से भी कमाल दिखायाऔर 5 गेंद पर 13 रन बनाए।

पाकिस्तान जा सकती है भारतीय हॉकी टीम

हॉकी इंडिया प्रेसिडेंट बोले- एशियाड में चैंपियन नहीं बने तो पाक में खेलना पड़ सकता है

चेन्नई, 3 अगस्त (एजेंसियां)। क्रिकेट में भारत और पाकिस्तान की टीमें एक दूसरे के देश में खेलने से भले आनाकानी करती हों, लेकिन हॉकी में ऐसी स्थिति नहीं है। पाकिस्तान की हॉकी टीम इस समय एशियन चैंपियंस ट्रॉफी खेलने के लिए भारत आई है। साथ ही हॉकी इंडिया के प्रेसिडेंट दिलीप तिर्की ने कहा है कि जरूरत पड़ी तो भारतीय टीम भी पाकिस्तान जाकर खेलेगी।

तिर्की ने कहा है कि अगर भारतीय हॉकी टीम 23 सितंबर से शुरू हो रहे एशियन गेम्स के जरिए 2024 पेरिस ओलिंपिक के लिए डायरेक्ट क्वालिफाई नहीं कर पाती है तो फिर भारतीय टीम पाकिस्तान जाएगी और वहां, क्वालिफायर टूर्नामेंट खेलेगी। तिर्की ने चेन्नई में कल से शुरू हो रही एशियन चैंपियंस ट्रॉफी से पहले चर्चा की।

एशियाड के गोल्ड मेडलिस्ट को डायरेक्ट कोटा

नियमों के अनुसार एशियाड में गोल्ड मेडल जीतने वाली टीम को सीधे ओलिंपिक में जगह मिलेगी।

एशियाड में हिस्सा लेने वाले अन्य देशों को क्वालिफायर खेलने होंगे। इस बार पाकिस्तान और स्पेन में क्वालिफायर टूर्नामेंट खेले जाने हैं।

एशियाड में कोटा लेने का प्रयास तिर्की ने कहा- हांगझोउ (एशियाड) में काम पूरा (ओलंपिक के लिए क्वालीफाई करना) करने की कोशिश करेंगे। अगर किसी कारण से हम क्वालिफाई नहीं कर पाते तो क्वालिफायर के लिए कुछ स्थल (पाकिस्तान और स्पेन) निर्धारित किए गए हैं। इसलिए जहां भी ये आयोजित होंगे, हम निश्चित रूप से जाएंगे।

केंद्र सरकार का रुख देखना होगा पाकिस्तान जाने के लिए सरकारी मंजूरी की जरूरत होती है और यह देखना होगा कि अगर ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है कि राष्ट्रीय हॉकी टीम को क्वालिफायर खेलने के लिए पाकिस्तान की यात्रा करने की जरूरत होगी, तो केंद्र का रुख क्या रहता है।

चोट की ज्यादा फिकर नहीं एशियाड से पहले इस टूर्नामेंट से खिलाड़ियों के चोटिल होने के रिस्क पर तिर्की बोले- कोई खिलाड़ी ट्रेनिंग या अभ्यास मैचों के दौरान भी चोटिल हो सकता है। सबसे अहम चीज यह है कि हम प्रत्येक बड़े टूर्नामेंट से पहले अभ्यास मैच खेलते हैं। तो क्या तब चोटिल होने का डर नहीं लगा रहता? इसलिए मुझे लगता है कि हमें इस टूर्नामेंट को सकारात्मक तरीके से अभ्यास के तौर पर लेना चाहिए और यह भी प्रतिस्पर्धी टूर्नामेंट है। अभी एशियाई खेलों की तैयारियों के लिए कुछ समय बचा है। चोटें अभ्यास मैच के दौरान भी लग सकती हैं। इसलिए मुझे नहीं लगता कि हमें इससे ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिए और अपना सर्वश्रेष्ठ देने पर ध्यान लगाना चाहिए।

एक दिन पहले भारत आई है पाकिस्तानी टीम

पाकिस्तानी टीम एक दिन पहले ही इस टूर्नामेंट में हिस्सा लेने भारत आई है। पाकिस्तानी टीम अपने अभियान का आगाज मलेशिया के खिलाफ गुरुवार को करेगी।

स्लो ओवर रेट के कारण इंग्लैंड-ऑस्ट्रेलिया पॉइंट्स पर कटौती

अंग्रेजों के 19 और कंगारुओं के 10 रेटिंग पॉइंट काटे

दुबई, 3 अगस्त (एजेंसियां)।द ऐशेज सीरीज ड्रॉ रहने के बाद भी इंग्लैंड-ऑस्ट्रेलिया को वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप में भारी नुकसान हुआ है। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल ने स्लो ओवर रेट के कारण दोनों टीमों के रेटिंग पॉइंट्स में कटौती की है। आईसीसी ने इंग्लिश टीम के 19 और ऑस्ट्रेलियाई टीम के 10 रेटिंग पॉइंट्स काटे हैं।

आईसीसी के नियमों के अनुसार, टेस्ट में तय समय के बाद हर ओवर में एक रेटिंग पॉइंट की कटौती होती है। द ऐशेज सीरीज में इंग्लैंड ने 19 ओवर देरी से फेंके। इसलिए पर उस पर 19 अंकों की कटौती हुई है, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने 10 ओवर देरी से फेंके हैं। इस कटौती के बाद इंग्लैंड की टीम वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 के पॉइंट्स टेबल के 5वें और ऑस्ट्रेलिया तीसरे नंबर पर है, जबकि पाकिस्तान टेबल के टॉप पर आ गया है।

इंग्लैंड-ऑस्ट्रेलिया के बीच 5 मैचों की ऐशेज सीरीज 2-2 की बराबरी पर रही। आईसीसी ने दोनों टीमों पर मैच फीस का फाइन भी लगाया है, जबकि बेन स्टोक्स की टीम पर पहले टेस्ट मैच में 10 फीसदी फाइनल लगाया गया। साथ ही ऑस्ट्रेलिया की मैच फीस पर 50 फीसदी जुर्माना लगाया गया है।

हर एक ओवर पर एक पॉइंट्स की कटौती

टेस्ट में हर टीम को एक दिन में 90 ओवर फेंकने होते हैं, यदि कोई टीम तय समय तक 90 ओवर्स नहीं फेंक पाती है, तो उस पर दंड के रूप में पेनाल्टी लगाई जाती है। आईसीसी के वर्तमान नियम के अनुसार, हर हर ओवर की देरी में एक रेटिंग पॉइंट्स की कटौती होती है। चैंपियनशिप में एक मैच जीतने पर 12 अंक मिलते हैं, जबकि ड्रॉ होने पर दोनों टीमों में 4-4 अंक बांटे जाते हैं।

पिछले दिनों ऐशेज सीरीज का आखिरी मुकाबला इंग्लैंड ने 49 रनों से जीता था। इसके बाद सीरीज 2-2 की बराबरी पर समाप्त हुई।

ताईक्वांडो में साक्षी तिवारी प्रथम

सुल्तानपुर, 3 अगस्त (एजेंसियां)। सरस्वती शिशु मन्दिर इंटर कॉलेज सिरवारा मार्ग सुलतानपुर विद्या भारती द्वारा 34वीं क्षेत्रीय शारीरिक प्रतियोगिता में ताईक्वांडो में साक्षी तिवारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वालीबाल में बालिकाओं की टीम ने प्रथम स्थान।

बालक बर्ग वालीबाल में द्वितीय स्थान प्राप्त करके अपने विद्यालय एवं संकुल सुलतानपुर का नाम प्रदेश में गौरवान्वित किया।

प्रधानाचार्य अवधेश सिंह तथा प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डॉ. विनोद सिंह ने भैया बहिनों को सम्मानित किया। मिष्ठान खिला कर अखिल भारतीय विजय प्राप्त करने का आशीर्वाद दिया ।

विमेंस फीफा वर्ल्ड कप 2023 : जमैका का उलटफेर- पहली बार प्री क्वार्टर फाइनल में, वर्ल्ड नंबर-8 ब्राजील को 0-0 के ड्रॉ पर रोका

मेलबर्न, 3 अगस्त (एजेंसियां)। जमैका की फुटबॉल टीम पहली बार महिला वर्ल्ड कप के प्री क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई। फीफा रैंकिंग में 43वें नंबर की टीम जमैका ने ग्रुप एफ के मैच में नंबर-8 ब्राजील को 0-0 के ड्रॉ पर रोक दिया। इस ग्रुप में फ्रांस (7) पहले, जमैका (5) दूसरे, ब्राजील (4) तीसरे और पनामा (0) चौथे नंबर पर रहा।

जमैका टीम अपने ग्रुप में अजेय रही

फ्रांस और जमैका ने अगले राउंड में जगह बनाई। 2007 की रनरअप ब्राजील 28 साल में पहली बार ग्रुप राउंड से आगे नहीं

बढ़ सकी। जमैका ने डिफेंसिव खेल दिखाया। यह ब्राजील की मार्ता का छठा वर्ल्ड कप था और वे अपने गोल की संख्या 17 से आगे नहीं बढ़ा सकीं। जमैका अपने ग्रुप में अजेय रही। उसने पहले फ्रांस को भी ड्रॉ पर रोका था और पनामा को हराया था।

दक्षिण अफ्रीका की पहली जीत, टीम अंतिम-16 में

ग्रुप जी के मैच में दक्षिण अफ्रीका ने इटली को 3-2 से हराया। यह अफ्रीका की वर्ल्ड कप में पहली जीत है। टीम ने प्री क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। इसी ग्रुप के एक अन्य मैच में स्वीडन ने अर्जेंटीना को 2-0 से हराकर लगातार तीसरी जीत दर्ज की। वहीं, ग्रुप एफ में फ्रांस ने पनामा को 6-3 से हराया। फ्रांस की केडिडियाटोऊ डियानी ने हैट्रिक बनाई।

जीवन भर गरीबों की भलाई के लिए काम करते रहे सायन्ना : केसीआर

टीएस विधानसभा ने सिकंदराबाद विधायक को दी श्रद्धांजलि

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव ने सिकंदराबाद के विधायक जी. सायन्ना को एक नरम दिल और गैर-विवादित व्यक्ति बताया, जिन्होंने अपने पूरे राजनीतिक जीवन में हमेशा गरीबों के लिए प्रयास किया। उन्होंने बीआरएस विधायक के परिवार के सदस्यों को पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया। गुरुवार को सत्र के पहले दिन तेलंगाना राज्य विधानसभा ने सयन्ना को श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने शोक प्रस्ताव पेश किया जिसके बाद सदस्यों ने पूर्व विधायक के साथ अपने जुड़ाव और राज्य के लोगों के लिए उनके द्वारा की गई सेवाओं को याद किया। बाद में, विधानसभा ने दो मिनट का मौन रखा और शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त की। इस अवसर पर बोलते हुए, मुख्यमंत्री ने कहा कि सयन्ना ने लगभग चार दशकों तक सार्वजनिक जीवन में सेवा की और तत्कालीन आंध्र प्रदेश और बाद में तेलंगाना में पांच बार विधायक चुने गए। उन्होंने अपने घनिष्ठ संबंध को याद किया और कहा कि जब भी वे मिलते थे, सयन्ना हमेशा निवारण के लिए अपने निर्वाचन क्षेत्र के मुद्दों को उठाते थे। सायन्ना हमेशा से सिकंदराबाद छावनी का ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम (जीएचएमसी) में विलय चाहते थे और हमने भी इस संबंध में केंद्र सरकार को कई अभ्यावेदन दिए थे। अब जब केंद्र ने देश भर के स्थानीय शहरी निकायों में कई छावनियों के विलय का प्रस्ताव दिया है, तो हमें उम्मीद है कि उनका

लंबे समय से पोषित सपना पूरा होगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि निज़ामाबाद जिले के रहने वाले सयन्ना सिकंदराबाद में बस गए और निर्वाचन क्षेत्र के लोगों की सेवा की। उन्होंने कहा कि सयना की बेटी लास्या नंदिता अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ा रही हैं और एक नगरसेवक के रूप में लोगों की सेवा कर रही हैं। उन्होंने कहा कि सयन्ना का निधन बीआरएस और तेलंगाना के लिए भी एक गंभीर क्षति है। मंत्री तलसानी श्रीनिवास यादव ने याद किया कि सायन्ना ने पूरे दिन और रात भर चेहरे पर मुस्कान के साथ सभी का स्वागत किया। उन्होंने अपने तीन दशकों के जुड़ाव को याद किया। मंत्री वेमुला प्रशांत रेड्डी ने कहा कि लोगों के कल्याण और विकास के प्रति प्रतिबद्धता के कारण सयन्ना को विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओं के लोगों का समर्थन प्राप्त है। मंत्री सीएच मल्ला रेड्डी ने कहा कि सयन्ना अपूरणीय हैं और उनका आकस्मिक निधन राज्य के लिए एक बड़ी क्षति है। कांग्रेस के फ्लोर लीडर मल्लू भट्टी विक्रमार्क ने कहा कि पूर्व विधायक एक गरीब समर्थक नेता थे जिन्होंने प्रतिबद्धता के साथ काम किया और उन्हें दी गई जिम्मेदारियों के साथ न्याय किया। बीआरएस विधायक मुथा गोपाल, दानम नागेंदर, एआईएमआईएम विधायक पाशा कादरी और भाजपा विधायक एम रघुनंदन राव ने भी बात की। विधानसभा ने आंध्र प्रदेश के पूर्व मंत्री विजयराम राव को भी श्रद्धांजलि दी जिनका हाल ही में निधन हो गया। बाद में, सदन की बैठक शुक्रवार को होने के लिए स्थगित कर दी गई।

तेलंगाना विधानसभा का सत्र तीन दिनों तक चलेगा

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना राज्य विधानसभा का चालू सत्र गुरुवार से शुरू होकर तीन दिनों तक चलेगा। इस हद तक का निर्णय स्पीकर पोच्चारम श्रीनिवास रेड्डी द्वारा आयोजित बिजनेस एडवाइज़री कमेटी (बीएसी) की बैठक के दौरान लिया गया। सदन में भारी बारिश, बाढ़ और राज्य सरकार द्वारा किये गये बचाव एवं राहत कार्यों पर चर्चा होगी। राज्य में चलायी जा रही कल्याणकारी योजनाओं पर भी चर्चा का कार्यक्रम तय किया गया है। सत्र के दौरान कुल मिलाकर 10 विधेयक पारित होने की संभावना है, जो इस साल दिसंबर में होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले आखिरी विधेयक होने की संभावना है। राज्य विधानसभा तीन विधेयक पारित करेगी, जिनमें तेलंगाना राज्य निजी विश्वविद्यालय (स्थापना और विनियमन), (संशोधन विधेयक, तेलंगाना नगरपालिका कानून (संशोधन) विधेयक और तेलंगाना पंचायत राज (संशोधन) विधेयक, दूसरी बार इन विधेयकों को राज्यपाल ने लौटा दिया। जिसके बाद राज्य सरकार ने उन्हें विधानसभा में फिर से पारित करने और राज्यपाल को फिर से भेजने का फैसला किया है, जिन्हें इस बार उन्हें मंजूरी देनी होगी। विधायी मामलों के मंत्री वेमुला प्रशांत रेड्डी, वित्त मंत्री टी हरीश राव, कांग्रेस विधायक दल के नेता मल्लू भट्टी विक्रमार्क, ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) नेता अकबरुद्दीन ओवैसी और अन्य ने बीएसी की बैठक में भाग लिया। हालांकि भट्टी विक्रमार्क ने मांग की कि लोगों के सामने आने वाले विभिन्न मुद्दों पर बहस के लिए सत्र 20 दिनों के लिए आयोजित किया जाना चाहिए, लेकिन राज्य सरकार ने उनकी मांग ठुकरा दी।

निर्मल जिले में सर्वाधिक वर्षा खेती करने में जुट गये किसान

आदिलाबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। हाल की भारी बारिश ने सामान्य जनजीवन को बाधित किया है, लेकिन जुलाई के मध्य तक क्षेत्र में दर्ज की गई कम बारिश पर काबू पाने में पूर्ववर्ती आदिलाबाद को मदद मिली है। जबकि निर्मल जिले में सबसे अधिक वर्षा हुई, आदिलाबाद, मंचेरियल और कुमराम भीम आसिफाबाद जिलों में इस मानसून में अधिक वर्षा दर्ज की गई। निर्मल जिले में इस अवधि के दौरान 857 मिमी की वास्तविक वर्षा दर्ज की गई, जबकि 1 जून से 3 अगस्त तक 503 मिमी की तुलना में 70 प्रतिशत अधिक बारिश हुई। बसर, सारंगपुर, निर्मल ग्रामीण, सोन और दस्तूराबाद मंडलों को छोड़कर, शेष 14 मंडलों में बहुत अधिक वर्षा हुई।

इसी तरह, आदिलाबाद जिले में इस मानसून में अब तक 560 मिमी की सामान्य वर्षा के मुकाबले 811 मिमी की वास्तविक वर्षा दर्ज की गई, जो 45 प्रतिशत से अधिक है। जैनाद और बेला को छोड़कर, जहां सामान्य वर्षा हुई, इंदरवेल्ली, गुडिहतनूर, बोथ, इचोदा और सिरिकोंडा में बहुत अधिक वर्षा दर्ज की गई। शेष 11 मंडलों में अधिक वर्षा दर्ज की गई। इस बीच, कुमराम भीम आसिफाबाद में 1 जून से 3 अगस्त तक 551 मिमी की सामान्य वर्षा के मुकाबले 718 मिमी की वास्तविक वर्षा देखी गई, जो 30 प्रतिशत अधिक वर्षा का संकेत देती है। जबकि सिरपुर (यू) और लिंगपुर में बहुत अधिक वर्षा हुई, जैनूर, तिरयानी, केरामेरी, वांकिडी, चिंतालमनेपल्ली, बेज्जुर, पेंचिकलपेट और दाहेगांव मंडलों में अधिक वर्षा दर्ज की गई।

इस मानसून में 499 मिमी की सामान्य वर्षा की तुलना में मंचेरियल जिले में वास्तविक वर्षा 643 मिमी थी, जो 29 प्रतिशत अधिक होने का संकेत देती है। जबकि दांडेपल्ली मंडल बड़े और कासिपेट मंडलों में क्रमशः 65 प्रतिशत और 61 प्रतिशत अधिक वर्षा हुई, वहीं जननराम, हाजीपुर, बेल्लमपल्ली, मंदामरि, मंचेरियल, नासपुर, जयपुर, चेन्नूर और कोटापल्ली मंडलों में अधिक वर्षा हुई। लगातार बारिश के बाद किसानों ने खेती का काम तेज कर दिया है और धान की रोपाई कर दी है। कपास, सोया और लाल चना किसान भी अधिक बारिश से खुश हैं।

सड़क दुर्घटना के लिए जीएचएमसी और सरकार की लापरवाही जिम्मेदार : कांग्रेस

हैदराबाद में सभी सड़कों की स्थिति पर तत्काल अध्ययन करने की मांग

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। कांग्रेस पार्टी ने बाचुपल्ली इलाके में 8 साल की बच्ची के साथ हुई दुखद सड़क दुर्घटना के लिए जीएचएमसी और बीआरएस सरकार की लापरवाही को जिम्मेदार ठहराया है। गुरुवार को गांधी भवन में एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए, टीपीसीसी के प्रवक्ता सैयद निज़ामुद्दीन, हैदराबाद डीसीसी के अध्यक्ष समीर वलीउल्लाह, लिंगोजीगुडा डिवीजन के कॉर्पोरेटर दारपल्ली राजशेखर रेड्डी, जीएचएमसी के पूर्व फ्लोर लीडर वाजिद हुसैन, टीपीसीसी के प्रवक्ता मेडिपल्ली रवि चंद्रा और डॉ. लिंगम यादव के साथ ने आरोप लगाया कि हैदराबाद में सड़कें कई उपयोगकर्ताओं के लिए मौत का जाल बन गई हैं क्योंकि बीआरएस सरकार हाल की बारिश के बाद उनकी स्थिति में सुधार के लिए कोई उपाय नहीं कर रही है। यह दुर्घटना बाचुपल्ली में उस समय हुई जब एक पिता अपनी बेटी दीक्षिता को दोपहिया वाहन पर स्कूल ले जा रहा था। वे एक गड्ढे से टकरा गए, बाइक से गिर गए और लड़की को पीछे से एक बस ने कुचल दिया। निज़ामुद्दीन ने आरोप लगाया कि यह कोई अकेली घटना नहीं है और जीएचएमसी सीमा के भीतर सड़कों की खराब स्थिति के कारण कई दुर्घटनाएँ हो रही हैं। उन्होंने आगे इस बात पर जोर दिया कि अगर अधिकारियों ने हैदराबाद की सड़कों पर 3,500 से अधिक गड्ढों की समस्या का समाधान किया होता तो मौतों को रोका जा सकता था। उन्होंने कहा कि पैचवर्क करने के दावों के बावजूद, जीएचएमसी की निष्क्रियता ने सभी सड़क उपयोगकर्ताओं को जोखिम में डाल दिया है। बीआरएस नियम के तहत सड़कें मौत का जाल बन गई हैं, जिससे अकेले हैदराबाद में हर साल लगभग 2,500 सड़क दुर्घटनाओं में लगभग 300 लोगों की मौत हो जाती है और 2,000 से अधिक लोग घायल हो जाते हैं। यह हैदराबाद को शीर्ष 10 मिलियन से अधिक शहरों में खतरनाक रूप से 8 वें स्थान पर रखता है। कांग्रेस नेता ने बस चालक, जीएचएमसी और बीआरएस सरकार के खिलाफ धारा 304ए के तहत लापरवाही के कारण मौत का मामला शुरू करने का आह्वान किया और तर्क दिया कि सड़कों के रखरखाव के लिए जिम्मेदार लोगों को भी जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। निज़ामुद्दीन ने कहा कि आम लोगों को सड़क दुर्घटना विश्लेषण समूह या दुर्घटना डेटा प्रबंधन प्रणाली जैसे फैंसी शब्दों में कोई दिलचस्पी नहीं है। वे बस सुरक्षित सड़कें चाहते हैं जहां वे आराम से गाड़ी चला सकें। जवाबदेही होनी चाहिए, और दुर्घटना के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार किसी भी अधिकारी को सजा का सामना करना चाहिए।

इसके आलोक में, कांग्रेस नेता ने मांग की कि गड्ढे और सड़क की मरम्मत नहीं करने के लिए जिम्मेदार जीएचएमसी और अन्य अधिकारियों के खिलाफ लापरवाही के कारण मौत का मामला दर्ज किया जाए तथा ग्रेटर हैदराबाद में सभी सड़कों की स्थिति पर तत्काल अध्ययन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार को सख्त जवाबदेही उपाय स्थापित करने और लागू करने चाहिए, जिसमें खराब सड़क की स्थिति के कारण होने वाली मौतों के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को दंडित करना भी शामिल है। उन्होंने एक भावुक नोट में कहा कि हमें दीक्षिता की मौत पर गहरा शोक है। हमें उसकी जान नहीं बचा पाने का दुख है। लेकिन हम सभी को सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करके अपने भविष्य की दीक्षिता को बचाने के लिए अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए।

लापता लड़की का शव नाले में मिला

करीमनगर, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। 27 जुलाई को लापता हुई तीन साल की बच्ची कृतिका का शव गुरुवार सुबह यहां लक्ष्मीनगर में नाले में मिला। स्थानीय निवासियों द्वारा सतर्क किए जाने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को जिला मुख्यालय अस्पताल के शवगृह में स्थानांतरित कर दिया, जो कथित तौर पर क्षत-विक्षत हालत में था और सिर गायब था।

कृतिका, जिसके 27 जुलाई को लापता होने की सूचना मिली थी, को इलाके के सीसीटीवी फुटेज में अपने घर से दूर जाते देखा गया था। उसकी तलाश करने के बाद, माता-पिता ने सोमवार को करीमनगर टाउन-II पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

पुलिस को आशंका है कि वह नाले में गिरकर बह गयी होगी। मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच जारी है। मध्य प्रदेश के बालाघाट के मूल निवासी, बच्चे के माता-पिता यशवंत और सविता कर्वे निर्माण मजदूर के रूप में काम करने के लिए करीमनगर चले गए और यहां हरिहरनगर में रह रहे थे।

कौशल विकास केंद्र को प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए 81.62 लाख मिले

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। कौशल विकास केंद्र, स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज, हैदराबाद विश्वविद्यालय (यूओएच) को ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों और शिक्षकों को प्रशिक्षित करने और उन्हें शिक्षा या उद्योग में आगे बढ़ाते हुए सशक्त बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए धन प्राप्त हुआ है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सफलता के आधार पर संभावित विस्तार के साथ, भारत सरकार के स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) द्वारा तीन साल के लिए 55,62,500 रुपये स्वीकृत किए गए हैं। आवेदन प्रशिक्षण प्रदान करने वाले संस्थानों को समर्थन (एसआईआईटी) कार्यक्रम के तहत डीएचआर को प्रस्तुत किया गया था। इसके अलावा, रुपये की राशि. हैदराबाद विश्वविद्यालय द्वारा अपने इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस (आईओई) अनुदान के तहत 26,00,000 रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

कौशल विकास केंद्र के समन्वयक प्रो. सुरेश येनुगु ने कहा कि इस उदार फंडिंग से ग्रामीण क्षेत्रों के कई छात्रों को मदद मिलेगी जिनके पास आधुनिक जीव विज्ञान के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण व्यावहारिक अनुभव तक पहुंच नहीं है।

यूओएच में कौशल विकास केंद्र फंडिंग एजेंसियों के आदेश के अनुसार प्रति वर्ष कम से कम तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने वालों से कोई पंजीकरण शुल्क नहीं लिया जाएगा। जहां तक संभव हो भोजन और आवास निःशुल्क प्रदान किया जाएगा।

विधायकों ने किसानों की संपूर्ण कर्जमाफी पर खुशी जताई

सीएम केसीआर को दी बधाई

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव, जो पहले से ही तेलंगाना राज्य में सभी वर्गों के जीवन में गुणात्मक परिवर्तन लाकर देश में लोकप्रिय सीएम के रूप में उभरे हैं, ने किसानों के कल्याण में एक और ऐतिहासिक मानदंड स्थापित किया है। किसानों के ऋण की पूर्ण माफी के सीएम केसीआर के फैसले को पहले से ही राज्य में सभी क्षेत्रों से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिल रही है।

सत्र के पहले दिन विधानसभा में मौजूद विधायकों ने सीएम केसीआर से उनके कक्ष में मुलाकात की और किसानों के कल्याण की दिशा में कई प्रगतिशील निर्णय लेने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

राज्य कैबिनेट ने हाल ही में किसानों द्वारा लिए गए फसल ऋण की माफी समेत कई मुद्दों पर मुहर लगाई है। मुख्यमंत्री के कक्ष में मुख्यमंत्री को बधाई संदेश देने वाले विधायकों की भीड़ लगी रही। सभी पुराने जिलों के मंत्रियों, विधायकों और जन प्रतिनिधियों ने सीएम केसीआर को गुलदस्ता भेंट किया और सीएम के साथ तस्वीरें खिंचवाईं. उन्होंने जनता और किसानों की ओर से सीएम केसीआर को धन्यवाद दिया. किसान ऋण माफी के अलावा, कैबिनेट ने हैदराबाद में मेट्रो रेल के विस्तार, नोटरी संपत्तियों के नियमितीकरण और अन्य विकास और कल्याण योजनाओं को भी मंजूरी दी।

राज्य के कृषि मंत्री सिंगिरेड्डी निरंजन रेड्डी ने विधानसभा पहुंचने पर सीएम को फूलों के गुलदस्ते भेंट किए। उन्होंने किसानों की संपूर्ण ऋण माफी लागू करने के लिए कृषि विभाग और तेलंगाना के किसानों की ओर से सीएम को धन्यवाद दिया। विधायकों ने सीएम को बताया कि पूरे प्रदेश में सभी किसान परिवार जश्न मना रहे हैं। उन्होंने इस बात की सराहना की कि राज्य सरकार एक बार फिर उन किसानों के साथ खड़ी हुई है, जो कर्ज चुकाने में असमर्थ हैं।

मंत्री हरीश राव के नेतृत्व में मेदक जिले के विधायक, मंत्री गुंटकांडला जगदीश रेड्डी (पुराना नलगोंडा), मंत्री वेमुला प्रशांत रेड्डी (पुराना निज़ामाबाद), खम्मम से मंत्री पुव्वाड़ा अजय कुमार, मंत्री सत्यवती राठौड़ और वारंगल से एर्राबेल्ली दयाकर राव, मंत्री केटी रामा राव, कोप्पुला ईश्वर, पुराने करीमनगर से गंगुला कमलाकर, महबूबनगर से मंत्री सिंगिरेड्डी निरंजन रेड्डी और श्रीनिवास गौड़, आदिलाबाद से मंत्री इंद्रकरण रेड्डी, रंगारेड्डी जिले से मंत्री सबिता इंद्रा रेड्डी, हैदराबाद जिलों से मंत्री महमूद अली और तलसानी श्रीनिवास यादव ने सीएम केसीआर से मुलाकात की। और फसल ऋण की पूर्ण माफी के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

जनगांव के युवा का बुलंद हौसला

साइकिल चलाकर केदारनाथ की यात्रा पूरी की

हैदराबाद, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। दृढ़ संकल्प और भक्ति के एक दुर्लभ संयोजन में जनगांव के एक 19 वर्षीय युवा ने अपने गृहनगर से उत्तराखंड में केदारनाथ मंदिर तक 4000 किमी से अधिक की दूरी तय करते हुए एक साइकिल अभियान पूरा किया है। पगिडिपल्ली राजू 13 जुलाई को अपनी यात्रा पर निकले और 29 जुलाई को वाराणसी होते हुए केदारनाथ पहुंचे।

भगवान शिव के भक्त राजू ने बचपन से ही साइकिल चलाने के प्रति अपने प्रेम और वाहन प्रदूषण के प्रति अपनी नापसंदगी के कारण पवित्र मंदिर की इस चुनौतीपूर्ण और पर्यावरण-अनुकूल यात्रा की शुरुआत की। दो साल पहले मात्र 17,500 रुपये में खरीदी गई अपनी भरोसेमंद गैर-गियर वाली साइकिल के साथ, राजू ने अतीत में वेमुलावाड़ा मंदिर, मेदाराम आदिवासी मंदिर और यहां तक कि महाराष्ट्र के रायगढ़ सहित विभिन्न स्थानों पर कई यात्राएं की हैं।

केदारनाथ को अपने गंतव्य के रूप में चुनने के लिए अपनी प्रेरणा साझा करते हुए, राजू ने कहा कि भगवान शिव के प्रति उनकी भक्ति और भारतीय रक्षा बलों में शामिल होने की उनकी आकांक्षा ने उन्हें यात्रा करने के लिए प्रेरित किया था।

अपने अभियान के दौरान, राजू 19 जुलाई को वाराणसी में रुके, जहां उन्होंने केदारनाथ की ओर अपनी कठिन यात्रा फिर से शुरू करने से पहले एक स्थानीय मंदिर में पूजा की। रास्ते में उन्होंने कर्णप्रयाग और गुप्तकाशी का दौरा किया। रुद्रप्रयाग बेस कैंप में, राजू को भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के सदस्यों से मिलने का सौभाग्य मिला। वहां से वह 50 किमी पैदल चलकर केदारनाथ पहुंचे।

अपनी यात्रा के दौरान, राजू पेट्रोल पंपों और मंदिरों में रहा। वह हर दिन 130 से 140 किमी की प्रभावशाली दूरी तय करता है। अपना अभियान सफलतापूर्वक पूरा करने और 3 अगस्त को घर लौटने पर, राजू अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए तैयार है। वह जल्द ही जनगांव के एक कॉलेज में बी.कॉम (कंप्यूटर) का पहला वर्ष शुरू करेंगे। उनके माता-पिता कस्बे में एक होटल चलाते हैं।

आंध्र हाईकोर्ट से जगन सरकार को झटका

अमरावती में घरों के निर्माण पर रोक लगाई

अमरावती, 3 अगस्त (स्वतंत्र वार्ता)। जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व वाली सरकार को झटका देते हुए, आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने गुरुवार को अमरावती राजधानी क्षेत्र में गरीबों के लिए राज्य सरकार द्वारा घरों के निर्माण पर रोक लगा दी। एक अंतरिम आदेश में, अदालत ने सरकार को आर-5 ज़ोन नामक क्षेत्र में घरों के निर्माण को रोकने का निर्देश दिया।

न्यायमूर्ति डीवीएसएस सोमयाजुलु, न्यायमूर्ति मानवेंद्रनाथ रॉय और न्यायमूर्ति रवि नाथ तिलहारी की तीन न्यायाधीशों वाली पीठ ने राज्य की राजधानी के विकास के लिए बने क्षेत्र में घरों के निर्माण को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर आदेश सुनाया। राजधानी क्षेत्र के किसानों और अन्य लोगों ने 'बाहरी लोगों' के लिए घरों के निर्माण के लिए आर-5 ज़ोन बनाने के सरकारी आदेश को चुनौती दी। किसानों के विरोध को नजरअंदाज करते हुए मुख्यमंत्री वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी ने 24 जुलाई को सीआरडीए क्षेत्र में गरीबों के लिए 50,793 घरों के निर्माण की आधारशिला रखी। जगन ने कहा कि सरकार इस परियोजना पर 1829.57 करोड़ रुपये खर्च कर रही है, जिसमें से 1371.41 करोड़ रुपये घरों के निर्माण और 384.42 करोड़ रुपये सड़क, बिजली और पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाओं पर खर्च होंगे। मार्च में, राज्य सरकार ने अमरावती में 900 एकड़ भूमि पर गरीब लोगों को घर उपलब्ध कराने के लिए एक नया क्षेत्र आर-5 घोषित किया।

यह उस भूमि का हिस्सा है जो पहले अमरावती राजधानी क्षेत्र के मास्टर प्लान में उद्योगों, व्यवसायों और अन्य वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए निर्धारित की गई थी। इस कदम से अमरावती के किसानों की संयुक्त कार्रवाई समिति (जेएसी) नाराज हो गई, जिसने इसे इस आधार पर उच्च न्यायालय में चुनौती दी कि इससे राजधानी क्षेत्र की स्थिति बदल जाएगी और उनके हित प्रभावित होंगे। उच्च न्यायालय ने 5 मई को सरकार के कदम को चुनौती देने वाली याचिका पर अंतरिम आदेश पारित करने से इनकार कर दिया। बाद में सुप्रीम कोर्ट ने भी हाई कोर्ट के आदेश पर स्टे देने से इनकार कर दिया। हालाँकि, शीर्ष अदालत ने यह भी फैसला सुनाया कि आवास स्थलों के लाभार्थियों के अधिकार आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के अंतिम फैसले के अधीन होंगे। मुख्यमंत्री ने 26 मई को गरीबों को आवास पट्टों के वितरण का औपचारिक शुभारंभ किया था। उन्होंने गुंटूर और एनटीआर जिलों में फैले आर-5 जोन में कार्यक्रम शुरू किया। 11 जुलाई को, आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय ने आर-5 ज़ोन में आवास स्थलों के आवंटन से संबंधित मामले को तीन सदस्यीय पीठ को सौंप दिया।

स्वतंत्र वार्ता
Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com
Epaper :
epaper.swatantravaartha.com
For Advertisement :
swadds1@gmail.com

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.